الدراسات العربية الأوراسية

АРАБИСТИКА ЕВРАЗИИ

EURASIAN ARABIC STUDIES

ЕВРАЗИЯ АРАБИСТИКАСЫ

2020, No. 10

ISSN 2619-1261

АРАБИСТИКА ЕВРАЗИИ EURASIAN ARABIC STUDIES ЕВРАЗИЯ АРАБИСТИКАСЫ 2020, No. 10

АРАБИСТИКА ЕВРАЗИИ
EURASIAN ARABIC STUDIES
ЕВРАЗИЯ АРАБИСТИКАСЫ

2020, No. 10

ISSN 2619-1261

Казанский (Приволжский) федеральный университет
Египетско-российский фонд культуры и науки
Центр арабской культуры «Аль-Хадара»
Центр исследований и научного взаимодействия «Ауалим»

АРАБИСТИКА ЕВРАЗИИ

Научный журнал

2020, № 10
ISSN 2619-1261
DOI: 10.26907/2619-1261-2020-10
Размещается на платформах **РУНЭБ (elibrary.ru), БД «КиберЛенинка» и Ulrich`s Periodicals Directory**
Издаётся с августа 2018 года – 4 выпуска в год
Адрес редакции:
420008, Россия, Республика Татарстан,
г. Казань, ул. М. Межлаука, 3, каб. 117
Тел.: +7 (843) 221-33-21
E-mail: arabicstudies@mail.ru
Website: http://eas20188.org
Учредители: Хайрутдинов Рамиль Равилович, Мингазова Наиля Габделхамитовна
Зарегистрирован Федеральной службой по надзору в сфере связи, информационных технологий и массовых коммуникаций. Свидетельство о регистрации печатного СМИ (журнал) ПИ № ФС 77-73332 от 24.07.2018.
Подписано в печать 20.06.2020. Бумага офсетная. Печать цифровая.
Формат 60x84/8. Тираж 500 экз. Отпечатано с готового оригинал-макета, подготовленного в типографии Издательства Казанского университета.
Дата выхода выпуска в свет: 10.07.2020
Издатель: АНО «Институт культурного наследия»
Адрес: 420111, Россия, г. Казань, ул. Кремлёвская, 10/15.
Тел.: +7 (843) 221-33-21
Адреса типографий:
Издательство Казанского университета
420008, г. Казань, ул. Профессора Нужина, 1/37.
Тел.: (843) 233-73-59, 233-73-28.
Египетско-российский фонд культуры и науки (доп. тираж)
11769 Nozha, 114 Joseph Tito St., Helioplis – Cairo – Egypt
Tel.: + (202) 219 271 57 & 58
Fax: + (202) 219 271 50
www.russiannewsar.com
secertary_ert@yahoo.com
Подписка и распространение: на оформлении

Редакционно-издательская группа
Ответственный секретарь
Шамсутдинова Э.Х. (г. Казань, Россия)
Научный редактор
Субич В.Г., канд. филол. наук (г. Казань, Россия)
Оператор сайта
Витоль Е.В. (г. Казань, Россия)
Ответственный за выпуск
Витоль Е.В. (г. Казань, Россия)
Корректор
Хабибуллина А.М. (г. Казань, Россия)
Учредитель, шеф-редактор
Хайрутдинов Р.Р., канд. ист. наук, доцент (г. Казань, Россия)
Учредитель, главный редактор
Мингазова Н.Г., канд. филол. наук, доцент (г. Казань, Россия)
Заместитель главного редактора
Закиров Р.Р., канд. филол. наук, доцент (г. Казань, Россия)
Заместитель главного редактора
Аль-Аммари М.С., канд. пед. наук (г. Казань, Россия)
Председатель редакционной коллегии
Эль-Шафи Х., директор Египетско-российского фонда культуры и науки (г. Каир, Египет)
Сопредседатели редакционной коллегии
Аль-Фоади Р.А., Ph.D., доцент (г. Багдад, Ирак)
Аль-Джарф Р.С., Ph.D., профессор (г. Рияд, Саудовская Аравия)
Берникова О.А., канд. филол. наук, доцент (г. Санкт-Петербург, Россия)
Ибрагимов И.Д., канд. пед. наук, доцент (г. Пятигорск, Россия)
Кириллина С.А., д-р ист. наук, профессор (г. Москва, Россия)
Редакционная коллегия
Алексеев И.Л., канд. ист. наук (г. Москва, Россия)
Аликберов А.К., канд. ист. наук (г. Москва, Россия)
Алмазова Л. И., канд. филос. наук (г. Казань, Россия)
Аль-Мусави С. Ph.D., доцент (Тетуан, Марокко)
Андреасян А.К., канд. филол. наук (Ереван, Армения)
Бельхамити М. Э.-М., канд. филол. наук (Оран, Алжир)

Большаков А.О., д-р ист. наук, профессор (г. Санкт-Петербург, Россия)
Галиев М.Х., канд. филол. наук (г. Москва, Россия)
Гатин М.И. (г. Казань, Россия)
Гюнтер С., Ph.D., профессор (г. Гёттинген, Германия)
Дмитриев К., Ph.D. (Сент-Андрус, Соединённое Королевство Великобритании и Северной Ирландии)
Дьяков Н.Н., д-р ист. наук, профессор (г. Санкт-Петербург, Россия)
Кашаф Ш.Р. (г. Москва, Россия)
Кузнецов В.А., канд. ист. наук (г. Москва, Россия)
Кямилев С.Х., канд. филол. наук (г. Москва, Россия)
Лаззерини Э., Ph.D., профессор (г. Блумингтон, США)
Лебедев В.В., канд. филол. наук (Москва, Россия)
Мухаметзянова Ф.Г., д-р пед. наук, профессор (г. Казань, Россия)
Мухетдинов Д.В., канд. полит. наук, профессор (г. Москва, Россия)
Наумкин В.В., д-р ист. наук, профессор (г. Москва, Россия)
Орфали Б., Ph.D. (Бейрут, Ливан)
Пиотровский М.Б., д-р ист. наук, профессор (г. Санкт-Петербург, Россия)
Попов В.В., канд. ист. наук (г. Москва, Россия)
Прозоров С.М., канд. ист. наук (г. Санкт-Петербург, Россия)
Пшихачев Ш.А. (г. Москва, Россия)
Редькин О.И., д-р филол. наук, профессор (г. Санкт-Петербург, Россия)
Резван Е.А., д-р ист. наук, профессор (г. Санкт-Петербург, Россия)
Рейснер М.Л., д-р филол. наук, профессор (Москва, Россия)
Сабирова Д.Р., д-р пед. наук (г. Казань, Россия)
Суворов М.Н., д-р филол. наук, профессор (г. Санкт-Петербург, Россия)
Сюкияйнен Л.Р., д-р юр. наук, профессор (г. Москва, Россия)
Тимерханов А.А., д-р филол. наук, доцент (г. Казань, Россия)
Тулеубаева С.А., д-р филол. наук, доцент (г. Астана, Казахстан)
Фарах С., д-р филос. наук, профессор (г. Москва, Россия)
Фролов Д.В., д-р филол. наук, профессор (г. Москва, Россия)
Хириди И.А., д-р (г. Каир, Египет)
Чупрыгин А.В. (г. Москва, Россия)
Чупрыгина Л.А. (г. Москва, Россия)
Шайхуллин Т.А., д-р филол. наук, доцент (г. Казань, Россия)
Шульц Э., Ph.D., профессор (г. Лейпциг, Германия)
Эль-Ханнаш М., Ph.D., профессор (г. Фес, Марокко)
Эль-Шейх Н., профессор (г. Каир, Египет)

Представительство в Арабской Республике Египет:
Центр политических и медиа-исследований
2 El Sharekat St. Off Roshdy St., Abdeen, Cairo, Egypt.
Т / Ф: (+202) 23920375 (+2) 01021396352-01221646442
2 ул. Эль-Шарекат Манфараа, ул. Рушди; Абдин; Каир; Египет
E-mail: hcpms.hewar2@gmail.com

Распространяется бесплатно
©Арабистика Евразии, 2020

جامعة قازان الفيدرالية
المؤسسة المصرية الروسية للثقافة والعلوم
مركز الثقافة العربية "الحضارة"
مركز عوالم للبحوث والتواصل

الدراسات العربية الأوراسية

مجلة علمية

العدد العاشر – 2020
الرقم الدولي المعياري ISSN 2619-1261
DOI: 10.26907/2619-1261-2020-10
المجلة تُنشر في قواعد البيانات التالية:
Elibrary.ru, Cyberleninka, Ulrich`s Periodicals Directory
تصدر منذ أغسطس (آب) 2018 – أربعة أعداد في السنة.
عنوان هيئة التحرير:
420008، روسيا، جمهورية تترستان، مدينة قازان،
شارع م.ميجلاوكا، 3، الغرفة رقم 117.
هاتف: 21-33-221 (843) 7+
البريد الإلكتروني: arabicstudies@mail.ru
الموقع الالكتروني: http://eas20188.org
المؤسسون:
رأميل رافيلوفيتش خيروالدينوف، نائلة عبدالحميدتوفنا مينغازوفا.
المجلة مُسجلة لدى الوكالة الفيدرالية للمراقبة في مجال الإتصال وتقنيات المعلومات ووسائل الإعلام.
شهادة تسجيل النسخة المطبوعة لوئاسل الاعلام (مجلة) ب ي رقم ف س 77-73332 في 2018.07.24
وقعت للنشر في 2020.06.20 ورق أوفسيت، طباعة رقمية.
الحجم 60x84/8. عدد النسخ 500 نسخة. طُبعت وفق التصميم الأصلي الجاهز المُعد في دار طباعة دار النشر لجامعة قازان.
تاريخ صدور العدد 2020.07.10
الناشر: أ ن و "مركز الإرث الحضاري"
العنوان: 420111، روسيا، مدينة قازان، شارع كريمليوفسكايا، 15/10.
هاتف:21-33-221 (843) 7+
عناوين المطبعة: دار نشر جامعة قازان
420008، مدينة قازان، شارع الأستاذ نوجين، 37/1.
هاتف: 28-73-233 ,59-73-233 (843)
طبعت في جمهورية مصر العربية:
المؤسسة المصرية الروسية للثقافة والعلوم .
11769 النزهة، 114 ش جوزيف تيتو، هليوبوليس - القاهرة.
هاتف: 58 & 57 271 219 (202) +
فاكس: 50 271 219 (202) +
www.russiannewsar.com secertary_ert@yahoo.com
الإشتراك والتوزيع: حسب الطلب.

مجموعة التحرير والنشر
السكرتير المسؤول
شمسوتدينوفا إنجه.خ. (قازان، روسيا).

المحرر العلمي
أستاذ مشارك د. سوبيتش فيتالي ج.، دكتوراه في العلوم اللغوية (قازان، روسيا).
مشغل الموقع
فيتول يفغيني .ف. (قازان، روسيا).
المسؤول عن هذا الإصدار
فيتول يفغيني .ف. (قازان ، روسيا).
المصحح
حابيبولينا الفيا. م. (قازان، روسيا).
المؤسس والمشرف على التحرير
أستاذ مشارك د. خيرالدينوف راميل .ر.، دكتوراه في العلوم التاريخية (قازان، روسيا).
المؤسس، ورئيس التحرير
أستاذ مشارك د. مينجازوفا نائلة.ع.، دكتوراه في العلوم اللغوية، (قازان، روسيا).
مساعد رئيس التحرير
أساذ مشارك د. زاكيروف رافيس ر.، دكتوراه في العلوم اللغوية (قازان، روسيا).
مساعد رئيس التحرير
أستاذ / دكتور محمد صالح العماري، دكتوراه في العلوم التربوية (قازان، روسيا)
رئيس هيئة التحرير
د. حسـين الشـافعي رئيس مجلس إدارة المؤسسة المصرية الروسية للثقافة والعلوم (القاهرة، مصر).
رؤساء هيئة التحرير المشاركون
أستاذ مشارك د. رحيم علي الفوادي، دكتوراه في العلوم اللغوية (بغداد، العراق).
أستاذ/ دكتور ريما الجرف، دكتوراه في العلوم التربوية (الرياض، المملكة العربية السعودية).
أستاذ مشارك د. إبراهيموف إبراهيم .د.، دكتوراه في العلوم اللغوية (بياتيجورسك، روسيا).
أستاذ مشارك .د كيريلّينا سفيتلانا.أ.، دكتوراه في العلوم التاريخية (موسكو، روسيا).
أستاذ مشارك د. بيرنيكوفا أولغا.أ.، دكتوراه في العلوم اللغوية، (سانت بطرسبورج، روسيا).
هيئة التحرير
أستاذ / دكتور الحناش محمد (فاس، المغرب) .
أستاذ / دكتور. بولشاكوف أندريه.و.، دكتوراه في العلوم التاريخية (سانت بطرسبورج، روسيا).

أستاذ / دكتور بيوتروفسكي ميخائيل.ب.، دكتوراه في التاريخ (سانت بطرسبورج، روسيا).
أستاذ / دكتورتوليوبايفا سمال.أ.، دكتوراه في العلوم اللغوية (أستانا، كازاخستان).
أستاذ دكتور تيميرخانوف أينور.أ.، دكتوراه في العلوم اللغوية (قازان، روسيا).
أستاذ / دكتورجيونتير سبيستيان. (جيوتتينجين، ألمانيا).
أستاذ / دكتور دياكوف نوكولاي .ن.، دكتوراه في العلوم التاريخية (سانت بطرسبورج، روسيا).
أستاذ / دكتور ريدكين أليج .إي.، دكتوراه في العلوم اللغوية (سانت بطرسبورج، روسيا).
أستاذ / دكتور ريزفان إيفيم .أ.، دكتوراه في التاريخ (سانت بطرسبورج، روسيا).
أستاذ / دكتور ريسنير مارينا.ل.، دكتوراه في العلوم اللغوية (موسكو، روسيا).
أستاذ / دكتور سوفوروف ميخائيل .ن.، دكتوراه في العلوم اللغوية (سانت بطرسبورج، روسيا).
أستاذ / دكتور سيوكيانين ليوناید .ر.، دكتوراه في القانون (موسكو، روسيا).
أستاذ / دكتور شولتس أكيخارد. (ليبزج، ألمانيا) .
أستاذ / دكتور فرالوف دميتري .ف.، دكتوراه في العلوم اللغوية (موسكو، روسيا).
أستاذ / دكتور فرح سهيل.، دكتوراه في العلوم اللغوية (موسكو، روسيا).
أستاذ / دكتور لازيريني إدوارد. (بولمنجتون، أمريكا) .
أستاذ / دكتور مخيتدينوف دامير .ف.، دكتوراه في العلوم السياسية (موسكو، روسيا).
أستاذ / دكتور ناعومكين فيتالي.ف.، دكتوراه في في التاريخ (موسكو، روسيا).
أستاذ مشارك د. شيخوللين تيمور أ.، دكتوراه في العلوم اللغوية (قازان، روسيا).
بشيخاتشوف شفيع أ.، (موسكو، روسيا).
جاتين مراد .ي (قازان، روسيا).
(جوبريغين أندريه ف. (موسكو، روسيا
جوبريغينا لاريسا أ. (موسكو، روسيا)
د. علي أكبروف علي أكبر.ك.، دكتوراه في العلوم التاريخية (موسكو، روسيا)
د. سعيد المساوي (تطوان، المغرب)
د. آليكسييف يغور.ل.، دكتوراه في العلوم التاريخية (موسكو، روسيا).
د. إندرياسان أروسيك، دكتوراه في العلوم اللغوية (يريفان، أرمينيا).
د. بابوف فينيامين .ف.، دكتوراه في التاريخ (موسكو، روسيا).
د. برازوروف ستانيسلاف .م.، دكتوراه في التاريخ (سانت بطرسبورج، روسيا).
د. جالييف محمد حيدر.خ.، دكتوراه في العلوم اللغوية (موسكو، روسيا) .
د. دميتريييف كيريل . (سنت-أندروس، المملكة المتحدة وشمال إيرلندا).
د. كوزنيتسوف فاسيلي أ.، دكتوراه العلوم اللغوية (موسكو، روسيا).
د. كياميلوف سعيد.خ.، دكتوراه في العلوم اللغوية (موسكو، روسيا).
د. ألمازوفا ليلى .إ.، دكتوراه في العلوم الفلسفية (قازان، روسيا).
د. ليبيديف فلادمير .ف.، دكتوراه في العلوم اللغوية (موسكو، روسيا).
د. إيمان أحمد هيريدي دكتوراه في علم اللغات (القاهرة، مصر).
د. الأرفه لي، ب. (بيروت، لبنان).
كاشاف شاميل.ر. (موسكو، روسيا).
د. صابيروفا ديانا ، ر.د.، دكتوراه في العلوم التربوية (قازان، روسيا).
أستاذ / دكتور نورهان الشيخ . (القاهرة، مصر).

مكتب التمثيل بجمهورية مصر العربية:
مركز الحوار للدراسات السياسية والاعلامية .
2 ش الشركات متفرع من ش رشدى – عابدين – القاهرة – مصر.
ت / ف: 00223920375 . موبايل: -01021396352
01221646442. (+2)
بريد إلكتروني: hcpms.hewar2@gmail.com

(متاحة مجاناً)
حقوق النشر تعود لمجلة الدراسات العربية الأورأسية

Kazan (Volga Region) Federal University
Egyptian-Russian Foundation for Culture and Science
Arabic culture centre "Al-Khadara"
Awalim Center for Research and Communication

EURASIAN ARABIC STUDIES
Scientific journal

2020, № 10
ISSN 2619-1261
DOI: 10.26907/2619-1261-2020-10
Hosted on the databases of **eLIBRARY.RU, CyberLeninka, and Ulrich`s Periodicals Directory**
Published since August 2018 – 4 issues per year
Editorial address:
Office 117, 3, M. Mezhlauk str., Kazan, Russia, 420008
Phone: +7 (843) 221-33-92
E-mail: arabicstudies@mail.ru
Website: http://eas20188.org
Founders: Ramil Ravilovich Khayrutdinov, Nailya Gabdelhamitovna Mingazova
Registered by the Federal service for supervision of communications, information technology, and mass media. Certificate of registration of the printed media source (journal) ПИ № ФС 77-73332. Issued on July 24, 2018.
Signed for printing 20.06.2020. Offset paper. Digital printing.
Page size 60x84/8. Printed copies 500 copies. Printed on the basis of a make-up page, assembled by the Kazan University publishing house. Date of output: 10.07.2020
Publisher's profile: Non-commercial organization "The Institute of Cultural Legacy"
Address: 420111, Russia, Kazan, Kremlyovskaya str., 10/15.
Tel.: +7 (843) 221-33-21
Printing office addresses:
Kazan Federal University Printing House.
1/37, Professor Nuzhin str., Kazan, 420008
Phone: (843) 233-73-59, 233-73-28.
Printed in Egypt, Egyptian-Russian Foundation for Culture and Science
11769 Nozha, 114 Joseph Tito St., Helioplis – Cairo – Egypt
Tel.: + (202) 219 271 57 & 58
Fax: + (202) 219 271 50
secertary_ert@yahoo.com
www.russiannewsar.com
Subscription and distribution: submitted for processing

Editorial and Publishing Board
Assistant Editor
Shamsutdinova E.Kh. (Kazan, Russia)
Science Editor
Subich V.G., Candidate of Philology (Kazan, Russia)
Website Operator
Vitol E.V. (Kazan, Russia)
Output Editor
Vitol E.V. (Kazan, Russia)
Corrector
Khabibullina A.M. (Kazan, Russia)
Founder, Editor-in-chief
Khayrutdinov R.R., Candidate of History, Associate Professor (Kazan, Russia)
Founder, Executive Editor
Mingazova N.G., Candidate of Philology, Associate Professor (Kazan, Russia)
Deputy Editor
Zakirov R.R., Candidate of Philology, Associate Professor (Kazan, Russia)
Deputy Editor
Al-Ammari M.S., Candidate of Pedagogy, Associate Professor (Kazan, Russia)
President of the Editorial Board
El-Shafie H., Dr., President of the Egyptian-Russian Foundation for Culture and Science (Cairo, Egypt)
Board Executives
Al-Foadi R.A., Ph.D., Associate Professor (Baghdad, Iraq)
Al-Jarf R.S., Ph.D., Professor (Riyadh, Saudi Arabia)
Bernikova O.A., Candidate of Philology, Associate Professor (Saint Petersburg, Russia)
Ibragimov I.D., Candidate of Pedagogy, Associate Professor (Pyatigorsk, Russia)
Kirillina S.A. Doctor of History, Professor (Moscow, Russia)
Editorial Board
Alekseev I.L., Candidate of History (Moscow, Russia)
Alikberov A.A., Candidate of History (Moscow, Russia)
Almazova L.I., Candidate of Philosophy (Kazan, Russia)
Al-Musawi S. Ph.D., Assosiate Professor (Tetouan, Morocco)
Andreasyan A.K., Candidate of Philology (Yerevan, Armenia)
Belhamiti M.E.-M., Candidate of Philology (Oran, Algeria)

Bolshakov A.O., Ph.D., Professor (Saint Petersburg, Russia)
Chuprygin A.V. (Moscow, Russia)
Chuprygina L.A. (Moscow, Russia)
Dmitriev K., Ph.D. (St Andrews, United Kingdom)
Dyakov N.N., Ph.D., Professor (Saint Petersburg, Russia)
El-Hannach M., Ph.D., Professor (Fez, Morocco)
ElSheikh N. professor (Cairo, Egypt)
Farah S., Ph.D., Professor (Moscow, Russia)
Frolov D.V., Ph.D., Professor (Moscow, Russia)
Galiev, M.Kh., Candidate of Philology (Moscow, Russia)
Gatin M.I. (Kazan, Russia)
Gunther S., Ph.D., Professor (Göttingen, Germany)
Kashaf Sh. R. (Moscow, Russia)
Khiridi I.A., Dr. (Cairo, Egypt)
Kuznetsov V.V., Candidate of History (Moscow, Russia)
Kyamilev S.Kh., Candidate of Philology (Moscow, Russia)
Lazzerini E., Ph.D., Professor (Bloomington, USA)
Lebedev V.V., Candidate of Philology (Moscow, Russia)
Mukhametzyanova F.G., Doctor of Pedagogy, Professor (Kazan, Russia)
Mukhetdinov D.V., Candidate of Political Science, Professor (Moscow, Russia)
Naumkin V.V., Ph.D., Professor (Moscow, Russia)
Orfali B., Ph.D. (Beirut, Lebanon)
Piotrovsky M.B., Ph.D., Professor (Saint Petersburg, Russia)
Popov V.V., Candidate of History (Moscow, Russia)
Prozorov S.M., Candidate of History (Saint Petersburg, Russia)
Pshikhachev Sh.A. (Moscow, Russia)
Redkin O.I., Doctor of Philology, Professor (Saint Petersburg, Russia)
Reisner M.L., Doctor of Philology, Professor (Moscow, Russia)
Rezvan E.A., Doctor of History, Professor (Saint Petersburg, Russia)
Sabirova D.R., Doctor of Pedagogy (Kazan, Russia)
Schulz E., Ph.D., Professor (Leipzig, Germany)
Shaikhullin T.A., Doctor of Philology, Associate Professor (Kazan, Russia)
Suvorov M.N., Doctor of Philology, Professor (Saint Petersburg, Russia)
Sykiainen L.R., Ph.D., Professor (Moscow, Russia)
Timerkhanov A.A., Doctor of Philology, Associate Professor (Kazan, Russia)
Tuleubaeva S.A., Doctor of Philology, Associate Professor (Astana, Kazakhstan)

Representative Office in A.R.E.:
Al-Hewar Center for political & Media Studies.
2 El Sharekat St.-Roshdy St., Abdin, Cairo, Egypt.
T-F: (+202) 23920375- (+2) 01021396352-01221646442
E-mail: hcpms.hewar2@gmail.com

Available free of charge
©Eurasian Arabic Studies, 2020

СОДЕРЖАНИЕ

Колонка главного редактора (на русском языке) 12
Колонка главного редактора (на арабском языке) 13
Колонка главного редактора (на английском языке) 14
Колонка главного редактора (на татарском языке) 15

ФИЛОЛОГИЧЕСКИЕ НАУКИ

Суворов М.Н. Социальная отсталость, религиозный радикализм и война в романе «Косы Саады» (2014) йеменского писателя Мервана Аль-Гафури 16

ИСТОРИЧЕСКИЕ НАУКИ И АРХЕОЛОГИЯ

Аль Ахмад А.Х., Мирасраров М.П. Курдско-американские отношения в контексте сирийского кризиса 34
Аль-Аммари М.С., Николаева А.А. Российско-ливийские отношения: история и современность 54
Аль-Фавади Т.Т.Ф. Исторические корни научно-технической и инновационной дипломатии в Месопотамии и ее влияние на мировую цивилизацию 66
Сахри С. Объяснение основ международных переговоров 106

ТЕОЛОГИЯ

Абдуррахман Х.Х. Вклад Кады Кхана в развитие ханафитского фикха в Средней Азии 123

المحتويات

كلمة رئيس التحرير (باللغة الروسية) ١٢
كلمة رئيس التحرير (باللغة العربية) ١٣
كلمة رئيس التحرير (باللغة الانجليزية) ١٤
كلمة رئيس التحرير (باللغة التتارية) ١٥

العلـــــوم اللغوية

سوفوروف م.ن. التخلف الاجتماعي والراديكالية الدينية والحرب في رواية جدائل صعدة (2014) للكاتب اليمني مروان الغفوري ١٦

العلـــوم التاريخية وآلثار

لأحمد أ.خ.، ميراسراروف م.ب. االعلاقات الكردية الأمريكية في السياق الأزمة السورية ٣٤
العماري .م.ص، نيكولايف أ.أ. العلاقات الروسية الليبية: التاريخ والحداثة ٥٤
الفوادي ث.ط.ف. الجذور التاريخية لدبلوماسية العلم والتكنولوجيا والابتكار في بلاد الرافدين وأثرها في الحضارة العالمية ٦٦
شهاري .س. شرح أسس المفاوضات الدولية ١٠٦

علم اللاهوت

عبد الرحمن ح.ح. إسهامات قاضي خان في تطوير الفقه الحنفي في آسيا الوسطى ١٢٣

CONTENTS

Editor-in-Chief column (In Russian) 12
Editor-in-Chief column (In Arabic) 13
Editor-in-Chief column (In English) 14
Editor-in-Chief column (In Tatar) 15

PHILOLOGY

Suvorov M.N. Social backwardness, religious radicalism and war in Yemeni Marwan Al-Ghafuri's Novel Saada's Braids (2014) 16

HISTORY AND ARCHEOLOGY

Al Ahmad A.H., Mirasrarov M.P. Kurdish-American relations in the context of the Syrian crisis 34
Al-Ammari M.S., Nikolaeva A.A. Russian-Libyan relations: history and modernity 54
Al-Fawadi Th.T.F. The historical roots of science, technology and innovation diplomacy in Mesopotamia and its impact on global civilization 66
Sekhri S. Explaining International negotiation 106

THEOLOGY

Abdurrakhman Kh.Kh. Contribution of Qāḍī Khān to the development of Hanafi fiqh in Central Asia 123

Дорогие читатели!

Выходит в свет очередной выпуск нашего журнала «Арабистика Евразии».

В текущий номер журнала «Арабистика Евразии» включены научные исследования ученых из Алжирской Народной Демократической Республики, Республики Ирак и Российской Федерации, посвященные выявлению вопросов социальной отсталости, религиозного радикализма и войны в романе «Косы Саады» (2014) йеменского писателя Мервана Аль-Гафури; освещению политических и военных отношений военизированных подразделений курдов и США в ходе вооруженного конфликта на современной территории Сирийской Арабской Республики; ретроспективному анализу советско-ливийских и российско-ливийских отношений с момента их официального установления 4 сентября 1955 года по настоящее время; обзору культурного и научно-технического наследия Месопотамии и его влияния на остальные цивилизации; раскрытию сущности понятия «международные переговоры» и его характерных черт; описанию вклада Кады Кхана в развитие ханафитского фикха в Средней Азии. Отдельно включены некролог памяти известного татарского ученого-арабиста Габдулзямиля Габдулхаковича Зайнуллина, а так же отзыв на монографию Ливанского профессора С. Фараха «Российская цивилизация: смысл и судьба».

Несмотря на то, что 2020 год стал одним из наиболее сложных для человечества за первую четверть века с распространением пандемии коронавируса Covid-19, миллионами зараженных и сотнями тысяч умерших, он в очередной раз закалил нас, дав достойно пройти это нелегкое испытание. 2020 год также открывает новые возможности для человечества в сфере электронного (дистанционного) образования, что позволит вывести его на качественно более высокий уровень. Это касается и международного научного сотрудничества. Все научные мероприятия (форумы, симпозиумы, конференции, семинары и круглые столы) организуются и проводятся в электронном формате, что вызывает неподдельный интерес ученых. Надеемся, что этот ценный опыт будет отражен в публикациях последующих выпусков нашего журнала.

Мы надеемся, что этот выпуск журнала и намеченные мероприятия внесут значительный вклад в распространение научных идей отечественных и зарубежных ученых-арабистов и исламоведов на пути развития арабистики.

С уважением, учредители
шеф-редактор Рамиль Хайрутдинов,

главный редактор Наиля Мингазова

القراء الأعزاء،

ننشرلكم العدد التالي من مجلتنا "عربية أوراسيا."
يتضمن العدد الحالي من مجلة "عربية أوراسيا" بحوث علمية من قبل علماء من الجمهورية الجزائرية الديمقراطية الشعبية ،و جمهورية العراق وروسيا الإتحادية، المكرسة لعرض قضايا التخلف الاجتماعي والراديكالية الدينية والحرب في رواية "جدائل صعدة" (2014) للكاتب اليمني مروان الغفوري؛ تغطية العلاقات السياسية والعسكرية للوحدات شبه العسكرية للأكراد والولايات المتحدة أثناء النزاع المسلح في الأراضي الحديثة للجمهورية العربية السورية؛ تحليل استعادي للعلاقات السوفيتية الليبية والروسية الليبية من لحظة تأسيسها الرسمي في 4 سبتمبر 1955 حتى الوقت الحاضر؛ مراجعة التراث الثقافي والعلمي والتقني لبلاد الرافدين وأثره على الحضارات الأخرى؛ الكشف عن جوهر مفهوم "المفاوضات الدولية" وسماته المميزة؛ وصف لمساهمة قاضي خان في تطوير الفقه الحنفي في آسيا الوسطى. تم تضمينه بشكل منفصل نعيًا لذكرى عالم الدراسات العربية التتاري عبدالجميل جابدولكوفيتش زينولين، وكذلك مراجعة عن دراسة الأستاذ اللبناني فرح . س "الحضارة الروسية: المعنى والمصير."
على الرغم من ان عام 2020 كان واحد من أصعب الأعوام بالنسبة للبشرية في الربع الأول القرن الواحد والعشرين، في ظل انتشار وباء فيروس كورونا كوفيد 19، الذي تسبب في الملايين من المصابين ومئات الآلاف من حالات الوفاة، لقد اعطانا هذا الفيروس دافعا لاجتياز هذة المحنة بنجاح، حيث فتحت للبشرية فرص جديدة في مجال التعليم الالكتروني والتعليم عن بعد، مما سيجعله يصل الى مستوى اعلى نوعيا، وهذا ينطبق أيضا على التعاون العلمي الدولي . حيث يتم تنظيم جميع الفعاليات العلمية (المنتديات والندوات والمؤتمرات والحلقات الدراسية ونقاشات الحلقات المستديرة) وإدارتها في شكل إلكتروني ،مما يؤدي الى اهتمام حقيقي من قبل العلماء. نأمل أن تنعكس هذه التجربة القيمة في منشورات الأعداد اللاحقة من مجلتنا.
كما نأمل أن يساهم هذا العدد من المجلة والأحداث القادمة مساهمة كبيرة في نشر الأفكار العلمية للعلماء العرب المحليين والأجانب والعلماء الإسلاميين على مسار تطوير التعريب.

د. حسيـــن الشافعي
h.elshafie57@mail.ru

Dear readers!

Yet another edition of our "Eurasian Arabic Studies" journal is coming out.

The current issue of the journal comprises the works of scholars from the Algerian People's Democratic Republic, Republic of Iraq and the Russian Federation on Social Backwardness, Religious Radicalism and War in Yemeni Marwan Al-Ghafuri's Novel "Saada's Braids" (2014); Kurdish-American relations in the context of the military crisis in the territory of Syrian Arabic Republic; retrospective analysis of the Soviet-Libyan and Russian-Libyan relations starting with their official setting on September 4, 1955 up to the contemporary period; the historical roots of science, technology and innovation diplomacy in Mesopotamia and its impact on global civilization; defining the notion of "international negotiation" and its distinctive features; the description of the contribution of Qāḍī Khān to the development of Hanafi fiqh in Central Asia. Separately included in the edition are the obituary of the outstanding Tatar scholar of the Arabic world, Gabdulzyamil Gabdulkhakovich Zainullin, and the review of the monograph of the Lebanese professor S. Farah named "The Russian Civilization: sense and fate".

Although the year of 2020 has become one of the most difficult for the humankind in the first quarter of the century with the spread of the coronavirus pandemic accompanied by millions of infected and thousands of dead people, it has made yet another attempt to harden us providing the opportunity to overcome this ordeal in a decent manner. The year also presents new perspectives for the humankind in the sphere of electronic (remote) education, which will allow to raise it to a new level. This also appeals to international cooperation. All scientific events (forums, symposiums, conferences, seminars, round table discussions) are organized and conducted in the electronic mode, which causes true interest among scientists. We hope that this precious experience will be reflected in the subsequent editions of our journal.

We hope that our journal will contribute to the dissemination of the scientific ideas of the Russian and foreign specialists of the Arabic and Islamic studies for the benefit of the development of the Arabic studies.

Sincerely, the founders
Editor-in-Chief Ramil Khayrutdinov,

Executive Editor Nailya Mingazova

Хөрмәтле укучылар!

«Евразия Арабистикасы» журналының чираттагы саны дөнья күрде.

«Евразия Арабистикасы» журналының бу санына Алжир Халык Демократия Республикасы, Гыйрак Республикасы һәм Россия Федерациясе галимнәренең түбәндәге фәнни тикшеренүләре бастырылды: Йәмән язучысы Мерван Әл-Гафуриның «Сәгадәтнең чәч толымнары» романында социаль артта калганлык, дини радикальчелек һәм сугыш мәсьәләләрен ачыклау хакында; Сирия Гарәп Республикасы җирендә кораллы конфликт барышында көрдләрнең кораллы төркемнәре һәм АКШ арасында булган сәяси һәм хәрби мөнәсәбәтләр турында мәкалә; 1955 нче елның 4 нче сентябреннән башлап Советлар Союзы һәм Ливия арасында, һәм бүгенге заманда Россия Федерациясе һәм Ливия арасында урнаштырылган рәсми мөнәсәбәтләргә карата ретроспективалы анализ; Месопотамиянең мәдәни һәм фәнни-техник мирасына күзәтү ясау һәм аның башка цивилизацияләргә булган йогынтысын билгеләү турында материал; «халыкара сөйләшүләр» төшенчәсен һәм аның асыл сыйфатларын ачыклау турында язма; Урта Азиядә хәнәфи фикъһын үстерүдә үз өлешен керткән Кадый Кханның эшчәнлеге турында мәкалә. Аерым урынны татар халкының күренекле гарәп белгече Габделҗәмил Габделхак улы Зәйнуллинның некрологы, шулай ук Ливан профессоры С. Фарахның «Россия цивилизациясе: роле һәм язмышы» исемле монографиясенә бәяләмә алып торалар.

2020-нче ел яңа гасырның беренче чирегендә кешелек дөньясы өчен иң авыр елларның берсе булды. Covid-19 коронавирусы пандемиясе аркасында миллионлаган кеше инфекцияләнеп, йөзләгән мең кеше үлде, шуңар да карамастан бу вирус безне тагын да чыныктырды, без бу авыр сынауны җиңеп чыга алдык. 2020-нче ел кешелек дөньясы өчен электрон (дистанцион) белем алу өлкәсендә яңа мөмкинлекләр ачты, бу үз чиратында уку-укыту эшен тагын да югарырак сыйфатка җиткерүдә ярдәм итәчәк. Бу хәл шулай ук халыкара фәнни хезмәттәшлеккә дә кагыла. Барлык фәнни чаралар (форумнар, симпозиумнар, конференцияләр, семинарлар һәм түгәрәк өстәлләр) электрон форматта үткәрелә, мондый формат галимнәрнең чын кызыксынуын уята. Мондый тәҗрибә журналыбызның алдагы саннарында чагылыш табачак, дип ышанып калабыз.

Журналыбызның әлеге саны һәм күздә тотылган планнар безнең ил һәм чит ил гарәп белгечләре һәм ислам белгечләренең фәнни идеяләрен таратуда үз өлешен кертәчәк, дип ышанабыз.

Ихтирам белән, оештыручылар
шеф-мөхәррир Рамил Хәйретдинов,

баш мөхәррир Наилә Минһаҗева

ФИЛОЛОГИЧЕСКИЕ НАУКИ

العلـــوم اللغوية

PHILOLOGY

УДК 821.411.21

Original Paper
Оригинальная статья

SOCIAL BACKWARDNESS, RELIGIOUS RADICALISM AND WAR IN YEMENI MARWAN AL-GHAFURI'S NOVEL "SAADA'S BRAIDS" (2014)

M.N. Suvorov
St. Petersburg State University
soumike@mail.ru

Submitted: May 6, 2020
Reviewed: May 16, 2020
Accepted: May 28 , 2020

Поступила в редакцию: 6 мая 2020 г.
Одобрена рецензентами: 16 мая 2020 г.
Принята к публикации: 28 мая 2020 г.

Abstract

Violent events of the last half-century of Yemen's sociopolitical history have provided rich material for socio-historical fiction to flourish in Yemeni literature. There is, however, an extremely tragic and rather lengthy episode in the Yemeni recent history that has been touched upon only in one Yemeni literary work. This episode is the armed conflict between Yemeni government and the Houthi rebels that lasted from 2004 to 2010. Obviously, the obscurity of this war made it difficult for fiction writers to place a story in this war's confusing context. However, Marwan al-Ghafuri, a Yemeni poet and prose writer living in Germany, managed to do so in his novel Saada's Braids (2014). Three main themes determine the content of the novel: the social backwardness of Yemen, religious radicalism and war. All three themes are interwoven in the novel and presented to the reader through their perception by

Zainab, a girl from a mountainous village in Saada province. In the harsh conditions of wartime, Zainab's personal drama unfolds, leading the girl to finally settle in Sanaa.

Keywords: *Arab literature, Yemen, Marwan al-Ghafuri, Saada war, Houthis*

For citation: *Suvorov, M. N. (2020). Social backwardness, religious radicalism and war in Yemeni Marwan Al-Ghafuri's Novel Saada's Braids (2014). Eurasian Arabic Studies, 10, 16-33.*

СОЦИАЛЬНАЯ ОТСТАЛОСТЬ, РЕЛИГИОЗНЫЙ РАДИКАЛИЗМ И ВОЙНА В РОМАНЕ «КОСЫ САДЫ» (2014) ЙЕМЕНСКОГО ПИСАТЕЛЯ МЕРВАНА АЛЬ-ГАФУРИ

М.Н. Суворов

Санкт-Петербургский государственный университет

soumike@mail.ru

Аннотация

Бурные события последних пятидесяти лет социополитической истории Йемена дали писателям богатый материал, обеспечивший процветание в йеменской литературе социально-исторического жанра. Есть, однако, в этой истории один крайне трагический и достаточно продолжительный эпизод, который получил некоторое освещение только в одном йеменском произведении художественной литературы. Этот эпизод – вооруженный конфликт между правительством Йемена и повстанцами-хуситами, который продолжался с 2004 по 2010 г. Не вполне ясный характер этой войны, по-видимому, усложнял писателям задачу превращения ее в контекст какого-либо литературного сюжета. Эту задачу, однако, удалось выполнить Мервану аль-Гафури, йеменскому поэту и прозаику, проживающему в Германии, в его романе Косы Саады *(2014). Содержание романа определяют три основные темы: социальная отсталость Йемена, религиозный радикализм и война. Эти три темы в романе тесно взаимосвязаны и представлены читателю через их восприятие Зейнаб, девушкой из одного из горных селений провинции Саада. В тяжелых условиях военного времени разворачивается личная драма Зейнаб, которая завершается переселением девушки в Сану.*

Ключевые слова: *Арабская литература, Йемен, Мерван аль-Гафури, война в Сааде, хуситы*

Для цитирования: *Суворов М.Н. Социальная отсталость, религиозный радикализм и война в романе «Косы Саады» (2014) йеменского писателя Мервана Аль-Гафури // Арабистика Евразии. 2020. № 10. С. 16-33. (на английском языке)*

INTRODUCTION

The genre of socio-historical novel appeared in Yemeni literature for the first time in the 1970s, soon after two independent states – the Yemeni Arab Republic (YAR) and the People's Democratic Republic of Yemen (PDRY) – were created as a result of the revolutions of 1962 in North Yemen and 1963 in South Yemen. Most novels of this kind published in the 1970-80s depicted the hard life of Yemenis in pre-revolutionary decades and were in many cases ideologically biased.[1]

After the unification of the two Yemeni states into one state, the Republic of Yemen, in 1990, the general liberalization of public life in the country allowed Yemeni writers not only to rethink in their works the country's recent history, but also to write more openly about current events. The next three decades of Yemen's sociopolitical history were no less turbulent than the previous ones, and all this provided rich material for the socio-historical genre to flourish in Yemeni literature.

An alternative picture of the revolution of 1962 in North Yemen and the subsequent civil war was presented in the novels *Coffee Flower* (1998) by Ali Muhammad Zayd, *Another Face of Sanaa* (2004) by Ibrahim Ishaq, and *Dervish of Sanaa* (2017) by Ahmad al-Sayyad. A critical view of the sociopolitical and cultural situation in PDRY appeared in the novels *Three Midnighters* (1993) by Sa'id Awlaqi, *Soaring into the sky* (1995) by Abdullah Salim Bawazir, *The Ruined Queen* (2002)[2] and *Revelation* (2018) by Habib Saruri, and *Fruit for the Crows* (2020) by Ahmad Zayn. The process of the rapprochement and the unification of the two parts of Yemen in the second half of the 1980s, then the civil war of 1994 in the united Yemen and its consequences for the South – all this forms the historical and sociopolitical background in the novels *The Last Qarmatian* (2003) and *Yemen and Seasons of Hell* (2010) by Ahmad al-Sayyad and *To No-Man's Land* (2012) by Bushra al-Maqtari. Political hostilities between YAR and PDRY form a significant part of the background in Muhammad al-Gharbi Amran's novel *Red Manuscript* (2010). The situation in the united Yemen before the revolution of 2011, characterized by total corruption, violence on the part of the state power structures and armed tribal units, the spread of radical Islamist ideology, the suppression of civil liberties, blatant

[1] For more details see (Suvorov, 2010, p. 175-178; 2018).
[2] The novel was initially written and published in French in 1998.

female discrimination, decline in health services and education, and unprecedented increase in poverty, is reflected in one way or another in the novels *The Bird of Destruction* (2005) and *Suslov's Daughter* (2014) by Habib Saruri, *Nothing but Love* (2006) and *Submissive Wives* (2009) by Nadiya al-Kawkabani, *American Coffee* (2007) and *War under the Skin* (2010) by Ahmad Zayn, and *Happy Land of Intrigues* (2018) by Wajdi al-Ahdal.[3]

There is, however, an extremely tragic and rather lengthy episode in Yemeni recent history that has been touched upon only in one Yemeni literary work. This episode is the armed conflict between Yemeni government and the Houthi (or Huthi) rebels, also known as Saada war, that lasted in six cycles from 2004 to 2010. Although the conflict has claimed thousands of lives and caused a humanitarian disaster in Saada, Yemen's northernmost province, its exact causes and driving forces were hard to define.

Victoria Clark writes, "Among Yemenis, the true causes of the unrest which began in 2004 remain as obscure as they did to the outside world which generally, but mistakenly, explains it as either a self-contained sectarian struggle between a minority of Yemeni Shiites and a majority of Yemeni Sunnis, or as a proxy war between Shiite Iran and Sunni Saudi Arabia over supremacy on the peninsula, in which the al-Huthis are raised to the rank of an organisation like Hezbollah, or finally, as a local jihadist movement guaranteed to ally itself with al-Qaeda. If all three of these accounts are certainly wide of the mark, the truth remains hard to discern" (Clark, 2010, p. 246-247).

Another author, Ginny Hill, writes, "Human Rights Watch characterized the media blackout in Saada as the strongest in the world. Foreign journalists were routinely barred from entering the combat zone, and Yemeni journalists based in Sana'a were often forced to rely on phone calls with local tribal contacts to report the conflict. Claims and counterclaims were impossible to verify. <…> The lack of reliable information emerging from Saada helped to perpetuate this smouldering, multifaceted conflict. There was neither a formal tally of casualties – nor an informal body count – but the combined number of dead soldiers, civilians and rebels supposedly numbered thousands. Claims for the war's causes encompassed Zaidi[4] revivalism, accusations of *sayyid*[5] supremacy, economic neglect, smuggling, profiteering, elite rivalry,

[3] For more information about all these novels see (Suvorov 2010, p. 295-333; 2013; 2018; 2019; 2020).

[4] Zaidi is the adjective form for Zaidism, which is one of the branches of Shia Islam (note by M. Suvorov).

[5] *Sayyid* (f. *sayyida* or *sharifa*, pl. *sada*) – is a member of a family that traces its lineage back to the prophet Muhammad. Before the revolution of 1962 Zaidi *sada* were the ruling elite in North Yemen, and after the revolution they were somewhat marginalized by the republican regime. They, however, continued to hold strong positions in Saada province, predominantly Zaidi, which for this or another reason received little economical support from the

regional interference and the relationship of the modern central state to semi-autonomous marginal communities, as well as calls for social justice. The rebels simply said they wanted their people released from prison, the withdrawal of the Yemeni army from Saada and freedom to worship according to their tradition" (Hill, 2017, p. 175-176).

The above excerpts explain why it was not easy for a fiction writer to place a story in the confusing context of this obscure war. However, Marwan al-Ghafuri[6] managed to do so in his novel *Saada's Braids* (2014), and this is what I'm going to discuss below.

MATERIALS AND METHODS

The text of the novel *Saada's Braids* presents an imaginary Facebook correspondence between Marwan al-Ghafuri himself and a young Yemeni woman living in Sanaa, who at first introduces herself as Iman. The correspondence continues from the beginning of February to the end of March 2014, after which Iman deletes her account.

Iman, who has previously read al-Ghafuri's novel *Khazrajite*[7], tells the writer about her misadventures – in order for him to write a new novel based on her story. In his response messages, very emotional and highly poetized, the writer expresses sincere empathy for Iman's troubles and covertly confesses his love for her. At the same time, he compares different episodes of Iman's story with various tragic and romantic stories that exist in the cultural heritage of the East and the West. These stories include the story of fisherman José Salvador Alvarenga, who spent 13 months drifting in the ocean without fresh water and food, the story of Rudaba and Zal of Ferdowsi's *Shahnameh*, the story of long-haired Rapunzel, the heroine of a brothers Grimm's fairy tale, the story of Bishr al-Hafi, a famous Muslim Sufi-saint, etc.

Iman's real name, as Marwan soon learns, is Zainab. She is 25 years old and was born in a remote mountain village in Saada province to a Zaidi family. Zainab spent her youth in the conditions of the armed conflict between Yemeni government and the Houthis, in which the men of her village fought on the side of the Houthis[8]. Zainab talks about six wars in Saada, whose numbers the locals use for dating events in their rural life. Since the third war, Zainab's beloved older brother Hasan was involved in the conflict.

---

government. And it was members of a charismatic *sayyid* family of al-Houthi (first Hussein al-Houthi, and after his killing his brother Abd al-Malik al-Houthi) who led Zaidi rebels in Saada against the government (note by M. Suvorov).

[6] Marwan al-Ghafuri (b. 1979) is a Yemeni poet and novelist, a professional cardiologist living in Germany.

[7] See (al-Ghafuri, 2013).

[8] Al-Ghafuri, however, does not use the term "Houthis" in the novel, but calls the rebels *mujahidun* (i. e. people of Jihad) or simply men of Saada.

Life conditions in the village are largely archaic: there is no school, no doctor, no roadway.[9] The nearest taxi rank is almost an hour away on foot. All this is compounded by the wartime shortage: there are almost no cars left in the village, and gasoline is not available in the entire province. The latter circumstance did not allow the villagers to take Zainab's father to the hospital when he had the fatal heart attack.

In a message to Marwan Zainab says, "If you climb to the top of the mountain that rises above our homes, forgetting for a while about Iman's long braids, and look around the space spread out before you, you won't find a single public school in it. If you take up binoculars and use them to examine mountain slopes, paths and valleys stretching for tens of kilometers, you won't see a single child dressed in school uniform and carrying school bag" (al-Ghafuri, 2014, p. 51).[10]

Public life in the village is led by Sayyid, a representative of the *sada* stratum, who preaches to the villagers, summons tribal militia for war, and treats the sick with the help of the Quran and his own hereditary "divine grace". It is in his arms, at the recitation of Quranic *ayat*, that Zainab's father, who suffered from heart disease, but never visited a doctor, dies.

Father's personality in Zainab's story is very colorful – it is a typical Yemeni tribesman. At breakfast, after morning prayers, he is always cheerful and kind, and at dinner, after chewing *qat*[11], he is always sullen and nervous. With his family members he is taciturn and responds to all the concerns and fears of his wife with one phrase "Everything will be alright!" According to Zainab, she saw her father scared only once, just before his death, when he started vomiting.

Zainab tells Marwan about how the life of the village was affected by the conflict between the government and men of Saada, which very soon acquired a character of a religious conflict between two main religious groups in Yemen: the Zaidis and the Sunnis (especially the Sunnis of Salafi bias). Long before the armed conflict began, many young Yemenis, including some Zaidis, received religious education at Saudi-sponsored religious schools where they were inculcated with Salafi views. In predominantly Zaidi areas, the growing influence of Salafis (or Wahhabis, as Zainab

[9] To compare, Ginny Hill writes, "When Hussein's targeted killing in 2004 put an end to the first rebellion, the security services chose to display images of his corpse on massive poster boards inside Saada city as visible proof of his death, because hardly anyone living in Hussein's home district, who did not possess a private generator, had access to electricity or televisions" (Hill, 2017, p. 181).

[10] This and the following citations are translated from Arabic by the author of the article.

[11] Qat (Catha edulis) is a plant of light narcotic properties, chewing the leaves of which in the company of friends has long been a kind of social habit in Yemen, the main way of socialization.

calls them) was being perceived especially painfully, which helped creating an atmosphere of religious intolerance.[12]

During the armed conflict, this religious intolerance reached its peak. So, Zainab's fellow villagers expel from the village a man named Abd al-Hafiz, who previously taught children Arabic and the Quran at the mosque, then went to work in Saudi Arabia, and returned, allegedly, a convinced Wahhabi. Religious intolerance also extends to several Jewish families living in a neighboring village of Al Salem, who are forced to abandon their homes.[13]

Some details in Zainab's messages to Marwan give the reader an idea of the biased information field that existed around that armed conflict. Here is, for example, how the Zaidis' attitude to the state power had changed during the conflict:

"We had to go down a terribly steep slope and then continue on a horizontal road cut through the mountains. This road was built when I went to classes at the mosque, that is, when I was between 12 and 14 years old. At that time people said that the road had been built at the state expense, but later they began to tell about a *sayyid* who built this road for our villages, and we completely forgot the story of the state's beneficence" (al-Ghafuri, 2014, p.143-144).

And here is how the governmental newspapers covered this conflict:

"Hasan bought a newspaper for himself. It was 'Akhbar al-Yawm'. On the front page there were intertwined headlines, such as 'Rioters Impose the Practice of Pleasure-Marriages[14] in Villages' or 'Obscurantists' Forces Defeated'. There was also a headline in red above a photo of rocket launchers and tanks reading 'The Final War'" (al-Ghafuri, 2014, p. 199).

For Zainab, the war is embodied in the occasional roar of explosions that reaches the village, and in the bodies of dead villagers, mostly young men. There are so many dead in the village that "it has become normal for a woman to go to a funeral in one house and after that be released from the obligation of attending funerals in other houses" (al-Ghafuri, 2014, p. 233). Zainab is particularly distressed by Hasan's account of how his comrades-in-arms abused a wounded soldier of the government army who had been captured by them. The dying soldier told his tormentors that his

[12] Ginny Hill writes, "Religious politics in the volatile crucible of Saada were stoked by the presence of the Salafis. Saada played host to a network of Salafi madrasas, sponsored in part by money from the Saudis, who established a religious footprint throughout Yemen with Saleh's consent from the 1980s onwards. Saudi-sponsored Salafism became a 'significant local force, competing with traditional identities', and many viewed 'the spread of these schools as an attempt to weaken Zaidi social and political influence'" (Hill, 2017, p. 184-185).

[13] Interestingly, Al Salem is the real name of a village in Saada province, whose Jewish dwellers were forced to leave their homes during the conflict (Hill, 2017, p. 182).

[14] Pleasure-marriage (zawaj al-mut'a) is a private and verbal temporary marriage contract, that is practiced in Twelver Shia Islam, but generally not accepted in Sunni Islam. Often it is regarded as religiously veiled prostitution (note by M. Suvorov).

brother, a native of Taizz, worked as mathematics teacher in a secondary school in Saada province. Zainab tearfully makes Hasan promise her that he won't go to war again.

And this is how Zainab describes to Marwan what she felt after the funeral of one of the killed villagers:

"Many years ago, when I was a child, I met him at the door of the village store. He asked me about the price of my new shoes which I had on my feet. I said I didn't know, because my father had bought them for me in the city of Saada. He said that no one had bought him shoes for a long time.

I must have been nine years old. I told him that when a boy grows up, he gets money and buys everything he needs.

He smiled happily. Then he waited a long time until he grew up and could buy shoes. But as soon as he grew up and became an adult, he became dead.

The motherland cost him as much as a pair of shoes. I won't tell you his name. Even when he returned to the village as a dead body, I didn't think that anyone was interested in learning his name or remembering that he had any name at all" (al-Ghafuri, 2014, p.73-74).

The harsh conditions of life in the village, the atmosphere of religious intolerance, the war and its many casualties – all this forms the background on which Zainab's personal tragedy unfolds, setting one of the main themes of the novel.

Between the fifth and sixth wars, when Zainab is nineteen-year-old, her belly begins to grow in size, which is accompanied by internal pains. Her parents and fellow villagers suspect that she is pregnant, but she categorically denies this possibility. Illegitimate pregnancy of a woman in the traditional Muslim society of Yemen brings the most terrible shame not only on the pregnant woman, but also on all her relatives. The usual way to get rid of this shame is to kill the pregnant woman.

Exactly at this time Zainab's father dies, and this is how she describes to Marwan her father's wake:

"For ten days, our house turned into a theater, where women spoke words of condolence and empathy to the family, but among themselves led quite different speeches. Like birds of prey, they looked around the room, trying to see Iman with her swollen belly.

'God knows, I heard that she had an affair with teacher Abd al-Hafiz,' one woman whispered to another in the guest room.

The women had forgotten why they had come; they were preoccupied with another question – Iman's belly, which was growing in size for some unknown reason. However, the women of the village knew the reason:

'Of course, she had time with a man'.

All conversations revolved around the man's personality.

'Shameless wench, she killed her father, who could not bear such a disgrace,' a woman said to her neighbor on the left.

'He should have cut her down and finish with that, not driven himself to death,' the neighbor answered.

My mother was reading the words of women in their eyes, and her heart was on fire. For a time, she forgot her grief over my father's death and was experiencing another grief, because of me. Because of my swollen belly. Because of my illegitimate pregnancy, as they said.

Now, as I write this message to you, a strange thought has occurred to me. When I think about what was being said about me, and how my story was being told to each other by girls and women, I notice a strange thing. While telling it, they not only received satisfaction from the awareness of their own high morality, but also the pleasure of savoring it. Some of them, as we learned from time to time, could not discuss during the entire time of their gatherings with friends anything other than my sin with an unknown man. All the details were being discussed. The whole story was being recreated – how we met, how we dated, and even intimate details. Religious morality in this story took up much less space than sexual details. Each pair of interlocutors was constructing this story in its own way. Two women were composing it together and experiencing it together. Soon enough, the story became as secret as any forbidden pleasure. At first, I was being told that women were disgusted even to mention my name. However, the stories that were coming to me through my sister, who was collecting them, showed no trace of disgust and were full of lust" (al-Ghafuri, 2014, p. 90-92).

Zainab tells Marwan that she really felt love for teacher Abd al-Hafiz when she attended his classes at the mosque. Her young imagination was captivated by Arab poems about love, which the teacher introduced to his students. But soon after Abd al-Hafiz left for Saudi Arabia, a rumor spread in the village that the teacher had been secretly dating with Safiyya, Zainab's older friend, Sayyid's daughter. And it was because of this dating that Sayyid's men first forced the teacher to go to work in Saudi Arabia, and after his return, banished him from the village altogether.

Interestingly, Safiyya herself told Zainab about her secret dating with a young Wahhabi, but called that guy Yahya, not Abd al-Hafiz.

The story of Safiyya opens up another important theme in the novel – the problem of social archaism in Yemen, which manifests itself, in particular, in the preservation of the traditional pyramid of social strata with its inherent norms of marital correspondences. A woman can only marry a man who belongs to her stratum or to the stratum located above in the pyramid. When Safiyya's Wahhabi was absent from the village for a long time, she could not even ask his mother where her son was.

"When Safiyya imagines what might happen in the village if someone saw her in the house of Wahhabi's mother, her legs start trembling. How can a girl born to a *sada* family dare to visit a woman born in a stable? Even if her parents allowed her to do this, the villagers would refuse to accept it. They would consider such an act of the girl not only an insult to their faith, but also an insult to their history. It would look as if Safiyya, taking a large shovel in her hands, dug up the graves of their ancestors and threw their remains out for food to birds of prey" (al-Ghafuri, 2014, p. 58).

Interestingly, it is Safiyya and her relatives who most savor the story of Zainab's pregnancy, because this story can obscure the rumor of Safiya's affair with Abd al-Hafiz.

The only person who believes that Zainab is not pregnant is her brother Hasan. Zainab persuades Hasan to take her to Sanaa for medical examination. At this time the sixth war begins and the government promises to use the scorched-earth tactics. Sayyid gathers a militia of young villagers, calling them to a victorious war. This is how Zainab describes his sermon:

"It was not long before the praiseworthy Sayyid delivered a speech to the inhabitants of our and other, distant villages. He said that God promised us victory, but he did not say anything about those to whom God promised defeat. I imagined his audience, in their excitement, seeing themselves victorious, without even thinking about what their enemies look like.

The message of that day still rings in my ears: 'It was ordained that our faith would always and everywhere have enemies, and it was ordained for this Community that God would send it someone who would protect its faith and its land.' I had a feeling that the congregation liked the phrase 'protect its land'. In a village like ours, people easily understand what war means if they are told – even in a figurative sense – that it means protection of land, valleys, and wells. The sermon ended, and everything became even vaguer than it was before. Intuitively, we realized only one thing – we would have to provide more fighters.

The continuation of the speech was so intricate that one couldn't understand it easily or remember anything from it. It could even seem that there was no continuation at all" (al-Ghafuri, 2014, p. 113-114).

Unlike other young villagers, Hasan refuses to go to war, explaining that he must take care of his widowed mother, as well as take his ill sister to Sanaa for treatment. Sayyid, dissatisfied with Hasan's refusal and believing that Zainab is pregnant, not ill, promises to help him to deliver his sister to Sanaa. He obviously hopes that in gratitude for this service, Hasan will go to war. Hasan accepts Sayyid's help. Sayyid finds a driver for them, gives them the address of one of his relatives in whose house they can stay in Sanaa, and sends his brother with them as an escort.

Zainab's conversation at the taxi rank with a small shepherdess about the war, the views of villages deserted because of the war, young ragged Houthi fighters at checkpoints, a sermon about Jihad that sounds, instead of songs, from the speakers of the car tape recorder – all this makes Zainab depressed. A change occurs in her soul: she wants to say goodbye to her past, to the wildness of rural mores, to forget about religion and war, to start a new life. In a message to Marwan, she tells him how she recalled a saying of old woman Sham'a, her Jewish friend, that the prophet Muhammad is "the prophet of tribesmen".

"I recalled our last meeting," Zainab writes. "It occurred to me – I still don't understand why – that I wouldn't like to meet this prophet of the tribesmen either on my way to Sanaa or in Sanaa itself. I would like to meet another prophet on my path, who is suitable for all people, including me. A prophet, who, even being convinced by people that I committed a sin, would answer them in the manner of his brother Christ, 'Let him who is without sin among you throw a stone at her'" (al-Ghafuri, 2014, p. 127-128).

On the way, Zainab decides to take a new name – the name of the shepherdess Iman, whom she met at the taxi rank. Iman means "faith" or "belief"; in the case of Zainab, it is her belief in herself, in her own endurance, in her own future. This belief in herself makes her – in violation of Muslim etiquette – express her own opinion of the war to her male companions:

"I know dozens of houses in our village that live in misery and grief, as if in total darkness, because of these wars. What good is it for a woman who has lost her son to be told that her son was a man of Jihad and died a martyr? My mother wanted only one thing – for Hasan to become a man like our grandfathers were, to plow land and take care of crops, to give life to children and please his mother's heart" (al-Ghafuri, 2014, p.155).

The men are not willing to keep up this conversation, but Zainab knows that Hasan is on her side, because before leaving, he said:

"How I hate this war! We go with people we don't know to kill other people we don't know for the sake of winners whom we don't know. Even among the defeated, we don't know anyone. I have asked myself a thousand times, lying on my stomach on a hillock or in a dry watercourse: What will happen if we win or lose? In both cases, we will either go home or die" (al-Ghafuri, 2014, p.109).

In Sanaa, Zainab and Hasan stay in the house of Sayyida, an elderly female relative of Sayyid. According to the results of the initial medical examination of Zainab, doctors in the hospital make a preliminary diagnosis – an internal tumor. In a message to Marwan Zainab describes her thoughts on the eve of the final examination:

"What's worse for you: carrying a child whose father is unknown to your family, or having a tumor? What scares you more: that you got pregnant in secret from your family, or that a tumor growing inside you kills you? What would be easier for the villagers to accept: that a girl bleeds to death, or that she spends an hour in the bed of an unknown man? If you, Iman, lived in another country, your family would pray to God that it be an illegitimate child, not a tumor. My mother would probably say, 'Sleep with whoever you want, just live'.

Hasan has taken care of me and believes in me. What would happen if he stopped believing me? No doubt, he would say, 'It is better for you to die than to sleep with someone illegitimately.' It didn't even occur to me to ask him, 'What is better for you: that your sister is pregnant, or that she is on the verge of death? What are you secretly hoping for: that it turns out to be a tumor, or that it turns out to be an illegitimate child?' I did not ask him such questions, because I was not ready to experience more disappointment" (al-Ghafuri, 2014, p. 196).

The preliminary diagnosis being confirmed, the doctors perform the operation on Zainab. Hasan is almost mad with joy that it was a tumor, not a child, and that the operation was successful. Soon he goes back to the village, leaving Zainab with Sayyida for a period of post-operative rehabilitation.

Two months later, Hasan returns to Sanaa and tells Zainab bad news. Sayyid's brother, who had accompanied them to Sanaa, returned to the village immediately after Zainab's operation and told people there that doctors found a dead baby in Zainab's womb. After this message, Zainab decides not to return to the village ever. And after some time Hasan dies on the battlefield – either in the government's sixth war with the Houthis, or in the subsequent violent events.

At the time of her correspondence with Marwan, Zainab, who now calls herself Iman, has been living in Sayyida's house for five years, and her messages to Marwan contain some impressions that she has received in Sanaa. Thus, about the growing influence of religion on public life, she writes:

"It seems to me that I live in a kind of a theater of azans and prayers, in which there is no activity other than religious. At the beginning of each year, I feel that the number of mosques has increased slightly again, as well as the number of people who come to pray in them. But virtue is becoming less and less, and good people are also becoming less on the streets" (al-Ghafuri, 2014, p. 20).

The insignificance of the results of 2011 revolution, which took place in Sanaa before Iman's eyes, causes her bitter irony:

"Old women say that when the revolution came, electric light disappeared. Girls say that gasoline is also missing. Men say that many inexpensive necessities have disappeared. They do not talk about the disappearance of the ruler and do not remember him. They only want the things that have disappeared to return, and they remember them" (al-Ghafuri, 2014, p. 16).

Sayyida, who became one of Iman's dearest people, has her own tragic story, which she tells Iman. This story, in a sense, continues the unfinished story of Safiyya. In her youth, Sayyida loved a young man, who could not marry her because he did not belong to the *sada* stratum. Knowing of her origin, he did not even dare to pose the question of their marriage before her relatives. And she didn't ask him to do so, either. When he was thirty years old, he told her that he was marrying another woman. And she never married. But in her seventies, she continued to think about her beloved as if they had never parted.

RESULTS

One can distinguish three themes that are most prominent in *Saada's Braids*. These themes are: the social backwardness of Yemen, religious radicalism and war. All three themes are interwoven in the novel and presented to the reader through their perception by Zainab, the heroine of the novel.

The social backwardness of Yemen manifests itself, first of all, in inequity of different social strata that is expressed, in particular, in the persistent norms of marital correspondences. It also manifests itself in the plight of Yemeni woman, who is deprived of her human right to choose her life path. Another manifestation of social backwardness is the persistent complex of archaic mores, customs and beliefs that dominates Yemeni public opinion, being supported by general Muslim religious tradition and by certain religious figures. Zainab herself becomes a victim of these

mores and traditions, and for this reason, at a crucial moment in her life, expresses dislike for Muslim prophet Muhammad, "the prophet of tribesmen", as she calls him.

Social backwardness creates fertile ground for religious radicalism. In the conditions of the archaic mass consciousness, ignorance and religiosity, certain religious-political leaders mobilize their supporters with religious slogans, presenting their struggle for power as Jihad, the protection of the "true" faith. This is what Sayyid does in the novel. Jihadists' actions extend not only to their armed opponents, but also to peaceful people, adherents of another religion or another trend within the same religion. There are several victims of religious radicalism in the novel, including the Jewish old woman Sham'a and other residents of the village of Al Salem, Salafi teacher Abd al-Hafiz and other Salafists.

Zainab and her brother Hasan hate the war that is being waged in the province. The causes and purposes of this war are not clear to them, the losses are obvious. Hasan participates in the war because tribal traditions oblige him to stand shoulder to shoulder with his fellow tribesmen. But he hates killing people whom he doesn't know for the benefits of other people whom he also doesn't know. Hasan and Zainab understand that the main reason for the persistence of the war is social backwardness and religious radicalism that prevail in Yemen, especially in rural areas. And this, as al-Ghafuri seems to be suggesting, applies to all wars that have taken place in the recent history of Yemen.

CONCLUSION

The three themes, which define the content of the novel, are the most problematic not only for modern Yemen, but also for the entire Arab-Muslim world, which is surviving now a conflict between globalism and traditionalism. This fact makes al-Ghafuri's novel very attractive not only for the Eastern readers, who are the witnesses of this conflict, but also for those Westerners who want to better understand what is happening in the Arab-Muslim world.

BIBLIOGRAPHIC REFERENCES

1. الأهدل، وجدي. (2018). أرض المؤامرات السعيدة. بيروت، لبنان: نوفل. 310 ص.
2. عمران، محمد الغربي. (2010). مصحف أحمر. بيروت، لبنان: الكوكب. 348 ص.
3. عولقي، سعيد. (1993). السمار الثلاثة. صنعاء، اليمن: عبادي للدراسات والنشر. 112 ص.
4. باوزير، عبدالله سالم. (1995). يا طالع الفضاء. صنعاء، اليمن: عبادي للدراسات والنشر. 80 ص.

5. Clark, Victoria. (2010). Yemen. Dancing on the Heads of Snakes. Hampshire: Yale University Press. 311 p.
6. الغفوري، مروان. (2013). الخزرجي. عمان، الأردن: أزمنة. 110 ص.
7. الغفوري، مروان. (2014). جدائل صعدة. بيروت، لبنان: الآداب. 239 ص.
8. Hill, G. (2017). *Yemen Endures. Civil War, Saudi Adventurism and the Future of Arabia.* New York: Oxford University Press.
9. إسحاق، إبراهيم. (2004). صنعاء الوجه الآخر. القاهرة، مصر: الهلال. 179 ص.
10. الكوكباني، نادية. (2006). حب ليس إلا. القاهرة، مصر: ميريت للنشر. 195 ص.
11. الكوكباني، نادية. (2009). عقيلات. صنعاء، اليمن: عبادي للدراسات والنشر. 307 ص.
12. المقطري، بشرى. (2012). خلف الشمس. الدار البيضاء، المغرب: المركز الثقافي العربي. 206 ص.
13. سروري، حبيب. (2002). الملكة المغدورة. صنعاء، اليمن: المهاجر. 263 ص.
14. سروري، حبيب. (2005). طائر الخراب. صنعاء، اليمن: مؤسسة العفيف الثقافية. 247 ص.
15. سروري، حبيب. (2014). إبنة سوسلوف. بيروت، لبنان: الساقي. 220 ص.
16. سروري، حبيب. (2018). وحي. بيروت، لبنان: الساقي. 255 ص.
17. الصياد، أحمد. (2004). آخر القرامطة. بيروت، لبنان: المؤسسة العربية للدراسات والنشر. 219 ص.
18. الصياد، أحمد. (2010). اليمن وفصول الجحيم. بيروت، لبنان: رياض الريس للكتب. 247 ص.
19. الصياد، أحمد. (2017). درويش صنعاء. بيروت، لبنان: دار العربية للعلوم. 177 ص.
20. Суворов М. (2010). Художественная проза Йемена (1940 – середина 2000-х годов). СПб.: Студия «НП-Принт». 359 с.
21. Суворов М. (2013). Новые романы из Йемена: между откровением и эпатажем. *Вестник Санкт-Петербургского университета. Сер. 13.* Вып. 4, с. 68-78.
22. Suvorov M. (2018). Historical Novel in Modern Literature of Yemen. *Eurasian Arabic Studies, 1,* 87-94.
23. Suvorov M. (2019). Two Novels about the Information War in Yemen on the Eve of the Revolution of 2011. Вестник Санкт-Петербургского университета. Сер. 13. Вып. 3. С. 298-310.

24. Suvorov M. (2020). Yemen and the Arab World in Wajdi al-Ahdal's novels: from Parody to Realism. *Eurasian Arabic Studies, 9*, 51-64.
25. زيد، علي محمد. (1998). زهرة البن. بيروت، لبنان: الكنوز الأدبية. 368 ص.
26. زين، أحمد. (2007). قهوة أميركية. الدار البيضاء، المغرب: المركز الثقافي العربي. 160 ص.
27. زين، أحمد. (2010). حرب تحت الجلد. بيروت، لبنان: الآداب. 192 ص.
28. زين، أحمد. (2020). فاكهة للغربان. ميلان، إيطاليا: منشورات المتوسط. 239 ص.

BIBLIOGRAPHIC REFERENCES

1. al-Ahdal, Wajdī. (2018). Arḍ al-mu'āmarāt al-sa'īda [Happy Land of Intrigues]. Beirut: Dār Nawfal. 310 p. (In Arabic)
2. 'Amrān, Muḥammad al-Gharbī. (2010). Muṣḥaf aḥmar [Red Manuscript]. Beirut: Dār al-Kawkab. 348 p. (In Arabic)
3. 'Awlaqī, Sa'īd. (1993). Al-Summār al-thalātha [Three Midnighters]. Sanaa: Markaz 'Ubādī li-l-dirāsāt wa-l-nashr. 112 p. (In Arabic)
4. Bāwazīr, 'Abdullāh Sālim. (1995). Yā ṭāli' al-faḍā' [Soaring into the Sky]. Sanaa: Markaz 'Ubādī li-l-dirāsāt wa-l-nashr. 80 p. (In Arabic)
5. Clark, Victoria. (2010). Yemen. Dancing on the Heads of Snakes. Hampshire: Yale University Press. 311 p.
6. al-Ghafūrī, Marwān. (2013). Al-Khazrajī [Khazrajite]. Amman: Dār Azmina. 110 p.
7. al-Ghafūrī, Marwān. (2014). Jadā'il Ṣa'da [Saada's Braids]. Beirut: Dār al-ādāb. 239 p. (In Arabic)
8. Hill, G. (2017). *Yemen Endures. Civil War, Saudi Adventurism and the Future of Arabia.* New York: Oxford University Press.
9. Isḥāq, Ibrāhīm. (2004). Ṣan'ā' al-wajh al-akhar [Another Face of Sanaa]. Cairo: Dār al-Hilāl. 179 p. (In Arabic)
10. al-Kawkabānī, Nādiya. (2006). Ḥubb laysa illā [Nothing but Love]. Cairo: Dār Mīrīt li-l-nashr. 195 p. (In Arabic)
11. al-Kawkabānī, Nādiya. (2009). 'Aqīlāt [Submissive Wives]. Sanaa: Markaz 'Ubādī li-l-dirāsāt wa-l-nashr. 307 p. (In Arabic)
12. al-Maqṭarī, Bushrā. (2012). Khalf al-shams [To No-Man's Land]. Casablanca: al-Markaz al-thaqāfī al-'arabī. 206 p. (In Arabic)
13. Sarūrī, Ḥabīb. (2002). Al-Malika al-maghdūra [The Ruined Queen]. Sanaa: Dār al-Muhājir. 263 p. (In Arabic)

14. Sarūrī, Ḥabīb. (2005). Ṭā'ir al-kharāb [The Bird of Destruction]. Sanaa: Mu'assasat al-'Afīf al-thaqāfiyya. 247 p. (In Arabic)
15. Sarūrī, Ḥabīb. (2014). Ibnat Sūslūf [Suslov's Daughter]. Beirut: Dār al-sāqī. 220 p. (In Arabic)
16. Sarūrī, Ḥabīb. (2018). Waḥy [Revelation]. Beirut: Dār al-sāqī. 255 p. (In Arabic)
17. al-Ṣayyād, Aḥmad. (2004). Ākhir al-qarāmiṭa [The Last Qarmatian]. Beirut: Al-Mu'assasa al-'arabiyya li-l-dirāsāt wa-l-nashr. 219 p. (In Arabic)
18. al-Ṣayyād, Aḥmad. (2010). Al-Yaman wa-fuṣūl al-jaḥīm [Yemen and Seasons of Hell]. Beirut: Riad El-Rayyes Books S.A.R.L. 247 p. (In Arabic)
19. al-Ṣayyād, Aḥmad. (2017). Darwīsh Ṣan'ā' [Dervish of Sanaa]. Beirut: Dār al-'Arabiyya li-l-'ulūm. 177 p. (In Arabic)
20. Suvorov M. (2010). Hudozhestvennaya proza Iemena (1940 – seredina 2000-h godov) [Yemeni prose fiction (1940 – mid-2000s)]. St.Petersburg: Studiya "NP-Print". 359 p. (in Russian). (In Russian)
21. Suvorov M. (2013). Novye romany iz Iemena: mezhdu otkroveniem i epatazhem [New Novels from Yemen: Between Revelation and Epatage]. Vestnik of Sankt-Petersburg University. Ser. 13, issue 4, pp. 68-78. (in Russian)
22. Suvorov M. (2018). Historical Novel in Modern Literature of Yemen. *Eurasian Arabic Studies,1*, 87-94.
23. Suvorov M. (2019). Two Novels about the Information War in Yemen on the Eve of the Revolution of 2011. Vestnik of Sankt-Petersburg University. Ser. 13, issue 3. Pp. 298-310.
24. Suvorov M. (2020). Yemen and the Arab World in Wajdi al-Ahdal's novels: from Parody to Realism. *Eurasian Arabic Studies*, *9*, 51-64.
25. Zayd, 'Alī Muḥammad. (1998). Zahrat al-bunn [Coffee Flower]. Beirut: Dār al-Kunūz al-adabyya. 368 p. (In Arabic)
26. Zayn, Aḥmad. (2007). Qahwa amīrkiyya [American Coffee]. Casablanca: al-Markaz al-thaqāfī al-'arabī. 160 p. (In Arabic)
27. Zayn, Aḥmad. (2010). Ḥarb taḥt al-jild [War under the Skin]. Beirut: Dār al-ādāb. 192 p. (In Arabic)
28. Zayn, Aḥmad. (2020). Fākiha li-l-ghurbān [Fruit for the Crows]. Milan: Manshūrāt al-Mutawassiṭ. 239 p. (In Arabic)

Information about the author
Doctor of Philology
Mikhail Nikolaevich Suvorov
St. Petersburg State University
19903, Saint-Petersburg, Universitetskaya nab. 7-9
Russia
soumike@mail.ru

Информация об авторе
Доктор филологических наук
Михаил Николаевич Суворов
Санкт-Петербургский государственный университет
19903, Санкт-Петербург, Университетская набережная, 7-9
Россия
soumike@mail.ru

Conflicts of Interest Disclosure: *The author declares Conflicts of Interest Disclosure.*

Раскрытие информации о конфликте интересов: *Автор заявляет об отсутствии конфликта интересов.*

ИСТОРИЧЕСКИЕ НАУКИ И АРХЕОЛОГИЯ

العلـــوم التارخيية والآثار

HISTORY AND ARCHEOLOGY

УДК 327

Оригинальная статья
Original Paper

КУРДСКО-АМЕРИКАНСКИЕ ОТНОШЕНИЯ В КОНТЕКСТЕ СИРИЙСКОГО КРИЗИСА

А.Х. Аль Ахмад[1], М.П. Мирасраров[2]

независимый исследователь[1], Казанский (Приволжский) федеральный университет[2]

amad-980@mail.ru[1], mirasrarov@gmail.com[2]

Submitted: April 15, 2020
Reviewed: May 18, 2020
Accepted: May 22, 2020

Поступила в редакцию: 15 апреля 2020 г.
Одобрена рецензентами: 18 мая 2019 г.
Принята к публикации:22 мая 2019 г.

Аннотация

В статье освещаются политические и военные отношения военизированных подразделений курдов и США в ходе вооруженного конфликта на современной территории Сирийской Арабской Республики. Самоорганизация курдов в Сирии происходила постепенно и преимущественно под влиянием внешних факторов – прежде всего, политической активности курдов в соседних странах и стран оказывавших активную поддержку курдским лидерам. С того момента, когда обширные территории Сирийской Арабской Республики были захвачены запрещенными группировками и правительственные войска отступили с северных частей страны, курды, оставшиеся без значительной поддержки вынуждены, будут начать совместные военные действия с США по зачистке территорий. В ходе этого сотрудничества будут освобождены обширные территории на северо-востоке Сирийской Арабской Республики от запрещённых группировок. В статье также рассматриваются, динамика

курдско-американских отношений до начала вооруженного конфликта на территории Сирийской Арабской Республики и Ирака. Сотрудничество между США и курдскими лидерами уже имели место быть и раньше до конфликта на территории Сирии, пересечение их интересов происходила вследствие новой политики в отношении Ближнего Востока со стороны администрации США или же в следствии смены легитимных властей в государствах с наличием курдского населения. Тенденции сотрудничества между США и курдскими лидерами носили не долгосрочный характер что позволяло США вести многовекторную политику как с курдскими лидерами, так и с официальным правительством государства на территории которого находится курдское меньшинство. Авторы считают, что курдскую проблему можно решить только при урегулировании сирийского кризиса и сотрудничестве основных региональных держав на Ближнем востоке.

Ключевые слова: *Курды, Сирия, конфликт, гражданская война, сотрудничество*

Для цитирования: *Аль Ахмад А.Х., Мирасраров М.П. Курдско-американские отношения в контексте сирийского кризиса // Арабистика Евразии. 2020. № 10. С. 34-53.*

KURDISH-AMERICAN RELATIONS IN THE CONTEXT OF THE SYRIAN CRISIS

A.H. Al Ahmad[1], M.P. Mirasrarov[2]

Independent researcher[1], Kazan (Volga Region) Federal University[2].

amad-980@mail.ru[1], shandra83@rambler.ru[2]

Abstract

The article covers the political and military relations between the Kurdish and United States paramilitary units during the armed conflict in the present-day Syrian Arab Republic. The self-organization of the Kurds in Syria took place gradually and mainly under the influence of external factors - primarily the political activity of the Kurds in neighboring countries and countries that actively supported the Kurdish leaders. From the moment when the vast territories of the Syrian Arab Republic were seized by prohibited groups and government troops retreated from the northern parts of the country, the Kurds, who were left without significant support, were forced to begin joint military operations with the United States to clean up the territories. In

the course of this cooperation, vast territories in the northeast of the Syrian Arab Republic will be freed from banned groups. The article also examines the dynamics of Kurdish-American relations before the outbreak of armed conflict in the Syrian Arab Republic and Iraq. Cooperation between the United States and Kurdish leaders had already taken place before the conflict in Syria, the intersection of their interests was due to a new policy towards the Middle East by the US administration or as a result of the change of legitimate authorities in the countries with the Kurdish population. Cooperation trends between the United States and Kurdish leaders were not long-term in nature, which allowed the United States to pursue a multi-vector policy with both Kurdish leaders and the official government of the state in whose territory the Kurdish minority is located. The authors believe that the Kurdish problem can be solved only with the settlement of the Syrian crisis and the cooperation of the main regional powers in the Middle East.
Keywords: *Kurds, Syria, conflict, civil war, cooperation*

For citation: *Al Ahmad, A.H., & Mirasrarov, M.P. (2020). Kurdish-American relations in the context of the Syrian crisis. Eurasian Arabic Studies, 10, 34-53. (In Russian)*

ВВЕДЕНИЕ

На Ближнем Востоке курдская община, которая является одной многочисленных этнических групп, проживающих на территории Ирана, Турции, Ирака, и Сирии, не имеет своего государства. Курдское население до нынешнего момента выступает за увеличение их прав и социальной защиты в государстве проживания, и это в свою очередь вызывает негативную реакцию государства в отношении курдов. В Ираке, например, после интервенции США и их союзников курды смогли получить максимальные выгоды, начиная с поста президента страны (в настоящее время президент Ирака – Бархам Салих (из иракской курдской общины) до создания своей курдской автономии на севере Ирака. Однако, следовало бы особо отметить, что курды всегда были открытыми к сотрудничеству со странами, которые вели активную политику по свержению легитимных властей на Ближнем Востоке.

В ходе конфликтов, которые происходили на территории Ирака, Ирана и Сирии, курдов всегда использовали как, реакционные силы внутри страны для проведения эффективной операции в отношении руководства страны или использовали их, как сепаратистов для дестабилизации внутренней обстановки государства. В Сирийской Арабской Республике активность курдского

населения проявилась после смерти Х. Асада в виде массовых выступлений борьбы за свои права, но значимых успехов они не добились. Продолжался жесткий контроль за курдским населением и уже к началу так называемой «Арабской весны», недовольство курдского населения в Сирии достигло максимума. Курды начинают формировать свои структуры в виде незаконных вооруженных формирований, и это в свою очередь дало возможность курдам успешно сопротивляться запрещенным группировка не без иностранной помощи соответственно. В ходе сирийского кризиса, возникло военное сотрудничество между курдскими формированиями и США, что позволило очистить значительные территории на севере Сирии от запрещенных группировок.

МАТЕРИАЛЫ И МЕТОДЫ ИССЛЕДОВАНИЯ

В статье использованы материалы из Государственного департамента США, а также данные исследований ряда отечественных специалистов. В том числе были рассмотрены источники из международной прессы и новостных агентств.

Методологической основой исследования послужили принципы историзма и общенаучные методы. Историко-хронологический метод понимается как принцип изучения действительности, когда изучаемый объект рассматривается в динамике его закономерного развития, возникновения и изменения во времени, во взаимной связи с окружающими процессами, что позволяет проанализировать изучаемую нами проблематику в процессе его развития.

Из общенаучных методов использованы следующие методы: синтез информации, индукция и дедукция, сравнительный анализ, метод восхождения от абстрактного к конкретному

Последним этапом стал анализ полученной информации в единый обзор исторической ситуации, с указанием перспектив её развития автором в рассматриваемый период.

РЕЗУЛЬТАТЫ

Курдское население, особенно в Турции, Ираке и Сирии, были глубоко затронуты изменениями, происходящими на Ближнем Востоке. Нестабильность встряхнула арабский мир и представляла серьезную опасность, но в тоже время это предоставило большие возможности изменить региональный статус-кво, из-за которого большинство курдов находятся в глубокой неудовлетворенности.

Сотрудничество США с курдскими руководителями началось задолго до сирийского кризиса и продолжается до сих пор, это отмечает государственный секретарь США М. Помпео в своем интервью в столице американского штата

Теннесси[1]. Курдистан расположен на территории четырех государств Ближнего Востока и это в свою очередь предоставляет широкие возможности для США, использовать разногласия между курдским населением и правительством этих стран в своих интересах. США долго не вмешивались в связи курдов с правительством, пока во главе стран Ирака, Ирана и Турции были лояльные к Америке лидеры, но после прихода к власти авторитетных правителей, которые начали следовать идеи панарабизма в своей политике, а также укрепление внешней политики СССР на Ближнем Востоке способствовали заинтересованности США к курдской проблеме. После прихода к власти в Ираке партии ПАСВ (партия арабского социологического возрождения «Баас»), которую возглавлял Саддам Хусейн, внутренняя политика наряду с внешней начали приобретать негативные направления для США, в частности это было связано с укреплением сотрудничества между СССР и Ираком. Так в конце 1960-х и в начала 1970-х гг. администрация президента Ричарда Никсона после смены власти в Ираке, долго принимая решение все же протянула руку помощи курдским оппозиционерам в их борьбе за создание курдской автономию на севере страны, что в конечном итоге испортило отношения между Ираком и США[2].

Следующий президент США, который также использовал курдский фактор для укрепления позиций на Ближнем Востоке был Дж. Картер для него курдский вопрос и национальное движение курдов были причиной дестабилизации в регионе, поэтому для США это стало ключевым моментом в помощи курдскому движению [Сенников,2018, С. 41].

В 90-х годах политика Америки в отношении курдов кардинально поменялась, от роли второстепенного до значимого игрока в политике США на Ближнем Востоке. Исходя из этого реализация ряда мер со стороны американского истеблишмента показывает, о тенденции долгосрочного характера нового курса в отношении курдов. Особое место имели вопросы, связанные с преодолением коммуникационной блокады Иракского Курдистана. Американцы содействовали строительству двух новых аэропортов в Эрбиле и Сулеймании,

[1] Государственный секретарь США высоко оценил сотрудничество с курдами по всему Ближнему Востоку, а также выразил уверенность в том, что нынешняя администрация США продолжит поддержку курдов в Сирии. United States Department of State. URL: https://www. //state.gov/secretary-michael-r-pompeo-with-joel-ebert-of-the-tennessean/ (дата обращения 10.01.2020).

[2] На протяжении более десяти лет курды боролись против иракского правительства и делали бесчисленные просьбы об американской помощи, но безрезультатно и после тщательного анализа рисков администрация Никсона пришла к выводу, что советско-иракская угроза интересам запада была достаточно значительной, чтобы оправдать помощь курдам. The Secret Origins of the U.S.-Kurdish Relationship Explain Today's Disaster // « Foreign policy». URL: https://foreignpolicy.com/2019/10/14/us-kurdish-relationship-history-syria-turkey-betrayal-kissinger/. (дата обращения: 05.01.2020 г.).

был проложен путь к свободному воздушному коридору до курдского «анклава». Все это отражало новую политику в отношении курдов как, сохранение двухсторонних отношений в долгосрочной перспективе. И нужно отметить это входило в план США к военной подготовке плацдарма для будущего свержения режима в Ираке [Жигалина, 2004, С. 69].

Позиции курдов в Ираке кардинально изменились после того как США успешно провели операцию по свержению легитимной власти Саддама Хусейна. В октябре 2005 года, курды выдвинули свои требования по созданию своей автономии на севере Ирака, основной задачей курдских лидеров было получение территорий до того, как их коснулась арабизация, а также нефтяных месторождений в провинции Таамим (город Киркук). В соответствии со статьей 141 новой конституции Ирака от 2005 года, была признана курдская автономия в составе Ирака, таким образом, дополнительные гражданские права курдов были закреплены в новой конституции [3]. Послевоенное устройство Ирака открыло путь к сотрудничеству курдов с США и их союзникам. Помощь курдов в борьбе против Иракского режима было основополагающим условием развития двухсторонних отношений, в стремлении достижение мира и безопасности в регионе. С нашей точки зрения, получение курдами автономии способствовало развитию их внешних связей, особенно со странами, которые поддержали операцию по свержения легитимной власти в Ираке. Подтверждением укрепления отношений США с Иракским Курдистаном является значительное усиление американской военной базы в Киркуке, что в свою очередь охарактеризовало долгосрочность двухсторонних отношений[4].

Исходя из вышесказанного, необходимо отметить, что курды в Ираке были сепаратисткой политической и военной силой, которая оказала сопротивление законным властям страны при полной поддержки США и ряда стран Запада. В свою очередь, США использовали этот фактор в ослаблении центрального правительства в своих политических интересах и в настоящее время используют поддержку курдов, чтобы оказать влияние на Багдад, особенно, когда Парламент Ирака в обязательном порядке потребовал от Правительства

[3] В новой конституции Ирака были отражены значительные изменения в правах населения, были новые пункты с расширением прав женщин, курды получили возможность самоуправления, но в рамках общей политики Ирака, то есть в соответствии с новой конституцией курдская политика не должна стать угрозой для целостности государства. Constitution of the Republic of Iraq 2005. URL: https://constitutions.unwomen.org/en/countries/asia/iraq (дата обращения 10.01.2020).

[4] Большинство военных баз США перестали функционировать после свержения режима, но военная база в Киркуке получила некоторые модернизации вооружений и увеличение постоянного военного контингента. Institute for the Study of War. Iraq order of battle 2011. URL: https://www.jstor.org/stable/resrep07868 (дата обращения 10.01.2020).

вывести все иностранные войска со всей территории Ирака. Сотрудничество с иракскими курдами позволило США успешно начать подготовку к широкомасштабной военной интервенции по свержению бывшей легитимной власти иракского президента С. Хусейна.

Следует отметить, что к курдам в Сирии относились, как к сепаратистам и в значительной мере это было связанно с восстанием иракских курдов в 1961 г. что способствовало к тенденции повышенной опасности в Сирии и тотального контроля курдских районов со стороны сирийского правительства [Мазур, 2005, С. 127].

Новая стратегия внутренней и внешней политики Сирии следовала идее арабского социализма, что в свою очередь отрицало существование других этнических меньшинств кроме арабской. Следующим шагом было принятие новой конституции в 1973 году, которая укрепляла позиции националистической партии БААС, было очевидным, что курды на севере страны являлись для них угрозой территориальной целостности государства. До конца правления Хафиза Асада, положение курдов в Сирии никак не поменялось, тотальный контроль позволял сирийскому руководству удерживать северные районы Сирии, где были основные поселения курдского населения. Иначе говоря, гражданских прав у курдов было намного меньше, чем у арабского населения. Кроме того, у курдов также не было свободы слова, курдский язык запрещался и в своем большинстве, курды в Сирии не имели сирийского гражданства и право голоса, и возможность быть избранными на политическую должность.

Как отмечает О.А. Мазур, со сменой власти в июле 2000 г. положение сирийских курдов не изменилось, и особенно остро стал вопрос о статусе курдов без гражданства на территории Сирии, которые могли стать угрозой с началом операции США в Ираке. Подготовка США плацдарма для операции по свержению С. Хусейна в Ираке, подтолкнуло американское правительство к поддержке курдского населения в том числе и в Сирии. [Мазур, 2005, С. 137].

С началом военной операции США в Ираке по свержению законной власти С. Хусейна курды начали активно помогать США, курды не забыли печальных событий в их истории, когда 16 марта 1988 года против них иракское правительство применило химическое оружие и около 5 тысяч человек погибло [5]. И оппозиционные настроения сохранялись среди курдского населения в Ираке что способствовало к сотрудничеству курдского населения с

[5] The Secretary's Meeting with Shevardnadze – Second Small Group Meeting: Arms Control Issues. URL: https://history.state.gov/historicaldocuments/frus1981-88v06/d173 (дата обращения: 05.01.2020 г.).

американскими военными. С 2003 года курды в Ираке предоставили свою территорию для высадки американского десанта что значительно повлияло на успех американской операции и уменьшению жертв среди солдат. После свержения режима С. Хусейна, Америка выступала за постепенную ликвидацию арабизации которая была навязана правительство Ирака. США не скрывали, что их действия в Ираке вместе с тем являлись акцией устрашения против Тегерана и Дамаска в будущем [Иванов, 2011, С. 57].

В октябре 2005 года на общеиракском референдуме была одобрена конституция страны, закрепившая статус Курдского автономного района с центром в Эрбиле[6].

Следует отметить, что Сирийские курды активизировались, после свержения легитимности власти в соседнем государстве и были воодушевлённые действиями в Ираке и провозглашением там курдским населением автономии. Начало обострения отношений между курдами и арабами в Сирии, после прихода к власти Б.Асада особо ужесточились. Причиной было столкновение между арабскими и курдскими футбольными болельщиками в 2004 с множеством человеческих жертв с обеих сторон. В свою очередь это вызвало к закрытию курдских политических организаций по всей Сирии и преследованию политически активных курдов требующих увеличения прав курдскому населению. Репрессии против курдов усиливалась, после чего курдская антиасадовская аппозиция в марте 2006 года приняла в Вашингтоне конференцию по обеспечению демократических прав курдам [Вертяев, Иванов, 2015, С. 326]. Целью конференции было привлечение внимания мирового сообщества к правам курдского населения в Сирии.

К основным причинам курдской проблемы в Сирии можно отнести:

1. Правительство Сирии исключает какие-либо возможности и попытки создания на севере Сирии курдской автономии с широкими полномочиями, так как с точки зрения сирийских властей это угрожает национальной (государственной) безопасности страны и приведет к размещению американских военных баз на территории Сирии;
2. Потеря контроля на северных границах государства где проживает курдское население, приведет к дестабилизации обстановки в стране;

[6] Референдум, проведенный иракскими курдами закрепил статус Курдского автономного района с центром в Эрбиле, также его право иметь органы управления и собственные военизированные формирования, самостоятельно распоряжаться нефтяными доходами, курдский язык был объявлен вторым государственным языком Ирака. Иракский Курдистан. Досье. URL: https://tass.ru/info/1311929 (дата обращения: 06.01.2020 г.).

3. Предотвращение перехода с территории Ирака и Турции курдского населения, и образование сепаратистских вооруженных отрядов;
4. Автономный район под контролем курдов мог стать оружием замедленного действия для соседних государств, прежде всего, Сирии, Ирака, Турции и Ирана.

Таким образом, к началу гражданской войны в Сирии, курдская сирийская оппозиция была ущемлена в своих правах и была открыта к сотрудничеству с другими внешними политическими силами для получения конституционных прав наравне с большинством арабского населения. Следует особо отметить, что в дальнейшем это выльется в широкомасштабную войну на несколько фронтов с одной стороны против запрещенных исламских группировок, а с другой, против угнетающего курдов правительства.

Начало гражданской войны в Сирии

«Арабская весна» предоставила курдским политическим деятелям в регионе значительные возможности для достижения своих целей. В частности, в Сирии и Ираке курдские партии воспользовались ослаблением центрального правительства. Курдское политическое движение в Турции, наряду с ее движением в Сирии, также использовало борьбу против «Исламского государства» (запрещена в РФ), чтобы получить большую политическую и дипломатическую поддержку. На наш взгляд, антиправительственные выступления против режима Б. Асада в 2011 году способствовали образованию вакуума власти в северных частях страны, и у курдского населения появилась реальная возможность для создания автономии на севере Сирии.

Как только правительство Б. Асада начало концентрацию войск в местах с антиправительственными выступлениями и выводить военных из большинства курдских районов на севере страны, различные курдские политические партии - давно подавленные и жившие сомнительным существованием под эгидой баасистов – начали действовать, чтобы заполнить образовавшийся политический вакуум. Из них связанная с РПК партия PYD (Партия Демократического Союза) и его вооруженное крыло YPG (Народные Подразделения защиты) быстро стали набирать силу.

С большим количеством опытных бойцов из РПК, PYD удалось взять под контроль три курдские зоны в северной Сирии - Африн, Кобане и Джазира - и объявить «демократическую автономию» (Рожава) в этих областях[7].

[7] Курды Сирии назначили муниципальный совет для одного из трех большинства курдских регионов в западном Курдистане, на северо-востоке страны, через два месяца после того, как они объявили о самоуправлении. Syria Kurds declare democratic autonomy, name municipal government in western Kurdistan.

Официальный Дамаск не признал автономию, провозглашённую на севере Сирии, сирийское правительства заявило, что оно будет готово рассмотреть вопрос о предоставлении курдам своей автономии только после завершения гражданской войны в Сирии[8]. Уже с октября 2014 года положению курдов в Сирии усугубилось в связи с атаками на них террористических группировок в частности ИГ (запрещена в РФ)[9].

Самопровозглашённая автономия в Сирии осталась в значительной степени незаметной для остального мира, до лета 2014 года, пока ИГ (запрещена в России) не ворвалось в сознание международного сообщества, как мировая угроза. Именно тогда мир обратил внимание на сражающихся сирийских курдов с ИГ (Запрещена в РФ). В Европе и США, были запущены политические кампании для поддержки PYD и РПК, что в свою очередь вызывало большую тревогу в Анкаре, официальные представители Турции считают, что эти курдские партии связаны с террористическими организациями [10] . После объявления президентом США в 2014 году о создании международной коалиции против ИГ (Запрещена в РФ) и началом нанесения авиаударов по позициям запрещённых группировок, США начинают поддерживать курдов в их борьбе против ИГ[11].

Борьба с ИГ является существенным (официальным) интересом США в их международной политике, особенно после захвата боевиками города Мосул в июне 2014 года. Поскольку курдские отряды довольно успешно сопротивлялись атакам ИГ, в особых условиях лета и осени 2014 года произошло совпадение краткосрочных интересов. На наш взгляд комбинация YPG / YPJ (Отряды народной самообороны и Отряды женской самообороны) и

«Ekurd daily». URL: https://ekurd.net/mismas/articles/misc2014/1/syriakurd1019.htm (дата обращения: 06.01.2020 г.).

[8] В апреле 2015 года министр по делам национального примирения Али Хайдар заявил о готовности сирийских властей обсуждать с курдами условия предоставления им автономии после завершения конфликта в стране. История сирийских курдов. Досье // «ТАСС». URL: https://tass.ru/info/2685549 (дата обращения: 06.01.2020 г.)

[9] Сирийские курды, проживающие на севере Сирии, образовали собственную автономию Рожава, которая состоит из трех кантонов — на северо-западе, севере и северо-востоке Сирии и эти территории стали мишенью для боевиков запрещенных группировок и без помощи других государств курды в одиночку не могли противостоять вооруженным нападениям. Силы «Исламского Государства» направлены против сирийских курдов // «Риа Новости». URL: https://ria.ru/20141007/1027298004.html (дата обращения: 06.01.2020 г.)

[10] Президент Турции неоднократно заявлял, что курдские партии связаны с запрещенными группировками, но доказательств правительство Турции так и не предъявило. Cameron Abadi Why Is Turkey Fighting Syria's Kurds? // «Foreign policy». URL: https://foreignpolicy.com/2019/10/17/turkey-claim-syrian-kurds-terrorists-not-isis-ypg-pkk-sdf/ (дата обращения: 06.01.2020 г.)

[11] Глобальная коалиция для борьбы с ИГ была создана в сентябре 2014 года и в нее входило более 82 государств, которые вели борьбу против ИГ не только на территории Ирака и Сирии, но и предотвращали движения иностранных боевиков-террористов через границы, а также боролись за поддержку, стабилизацию и восстановления инфраструктуры в пострадавших районах. The Global Coalition against Daesh. URL: https://theglobalcoalition.org/en/mission/ (дата обращения: 07.01.2020 г.)

США в то время была единственной реалистичной возможностью победить ИГ (запрещена в России) собственно в Сирии. Недостаточно было бороться с ИГ в Ираке, в обоих государствах его нужно было победить в противном случае это привело бы к полному захвату территорий. Все остальные оппозиционные силы были либо не в состоянии бороться с ИГ (запрещена в России) или у них не было никакого интереса. Сотрудничество с сирийским правительством было политически невозможно.

Иначе говоря, обе стороны были заинтересованы в сотрудничестве, чтобы иметь возможность победить ИГ (запрещена в России). Курды Рожавы не просили одностороннюю поддержку от США и будет точнее утверждать о сотрудничестве двух уверенных в себе игроков. Военное сотрудничество началось с разгрома ИГ (запрещена в РФ) в Кобани, которое состояло в основном из воздушных бомбардировок против ИГ (запрещена в России) по согласованию с YPG / YPJ.

Хотелось бы упомянуть, что если обратиться к записи переговоров от 14 марта 2015 года с несколькими парламентариями от Народно-демократической партии заключенных в тюрьму, а также с лидером РПК Абдулла Оджаланом, то станет очевидным что, США оказали давление на YPG / YPJ, и основной целью США являлось объединение YPG / YPJ со структурой командования ДПК – Пешмерга[12]. Стоит предположить, что США таким образом хотели объединить YPG / YPJ с иракскими курдами, на которых уже было значительное американское влияние. Также следует отметить, что с осени 2015 года сотрудничество с курдами снова активизировалось. Осенью того же года прошло широкое планирование и координация по освобождению определенных районов. Когда Тель-Абьяд был освобожден в июне 2015 без значительной поддержки со стороны Глобальной коалиции против ИГ (запрещена в России).

У США были и другие долгосрочные мотивы для начала военного сотрудничества с YPG / YPJ / SDF (Сирийские демократические силы):

1. Возвращение на ближневосточную политическую арену основном позитивном в ключе, восстановление престижа государства после оккупации Ирака в 2003 году;
2. В долгосрочной перспективе ограничить влияние Ирана в Сирии и Ираке используя всевозможные рычаги давления в том числе и через курдов;

[12] А. Оджалан в своем интервью выступал против интеграции Сирийских курдов с Иракскими так как это бы давало общий рычаг давления со стороны США и Великобритании. Öcalan'ın öngörüsü Rakka'da zaferi nasıl getirdi // «Dicle News Agency». URL: http://mezopotamyaajansi.com/tum-haberler/content/view/3779 (дата обращения: 07.01.2020 г.)

3. Ограничение новой политики турецкого государства, которое стремится стать региональной державой и отходит от всеобъемлющей политики НАТО;
4. Поддержка ДПК и YNK (Патриотический союз Курдистана) в Южном Курдистане чтобы укрепить их как курдскую политическую силу, зависимою от США.

В октябре 2015 года курдские Отряды народной самообороны объявили о создании нового альянса вместе с повстанческими группировками, объединение получило название SDF (Сирийские демократические силы)[13]. YPG / YPJ всегда были заинтересованы в создании стратегического альянса с нереакционными силами в Сирии. В тоже время, США приветствовали этот шаг, так как дальнейшие военные операции проводили совместно. И то, что они работают с курдско-арабским альянсом, а не только с курдами позволило США эффективнее координировать свои действия. Первые общие операции SDF и США были организованы к востоку и югу от города Хесеке (Аль Хасака), а также в южных районах Кобани, включая плотину Тишрин, в конце осени 2015 года и зимой 2016 года[14]. Операция началась 5 ноября 2016 года, где SDF при поддержке американской авиации и спецназа очистили город от боевиков ИГ (Запрещена в РФ). Совместными усилиями были зачищены, города Табка и Ракка на севере Сирии, также был освобожден город Тешрин. В ноябре 2016 года, наконец, началась операция по освобождению региона Ракка. За первые месяцы были освобождены северные и северо-западные районы, но до полной очистки города от запрещенных группировок еще было не так близко, тем не менее военная координация между SDF и США стала лучше, чем раньше, это также было связано с подготовкой и обучением некоторых подразделений SDF со стороны военных США. В связи с активными действиями со стороны SDF и воздушными ударами США по боевикам, Ракка была полностью освобождена в октябре 2017 года[15]. Тем временем в 2017 новая администрация США во главе с президентом Дональдом Трампом с измененной концепцией внешней политики

[13] Консолидация сил, которые против официального правительства в Дамаске произошли в том числе и по инициативе курдской стороны и в свою очередь северо-восток Сирии стал еще более не управлаемым. Сирийские курды объявили о создании нового альянса с оппозиционерами // «Риа Новости». URL: https://ria.ru/20151012/1300515419.html (дата обращения: 07.01.2020 г.).

[14] Курдские отряды заявили, что полностью очистили от исламистов расположенный на границе с Турцией сирийский город Кобани. В ходе боев, были ликвидированы порядка двухсот исламистов. Во время двухнедельного сражения за Кобани поддержку курдам оказывала авиация США и союзников. Сирия: курды полностью освободили Кобани от исламистов // «Euronews». URL: https://ru.euronews.com/2015/06/27/kobane-militants-driven-out-of-strategic-syrian-town (дата обращения: 07.01.2020 г.)

[15] В своем заявлении госсекретарь США Р. Тиллерсон заявил, что до полной победы над запрещенными группировками еще далеко, но идет работа по разминированию города и дальнейшей консолидации сил в регионе. США Освобождение Ракки не означает окончания борьбы с ИГ // «ТАСС». URL: https://tass.ru/mezhdunarodnaya-panorama/4664788 (дата обращения: 07.01.2020 г.)

предоставила SDF кроме боеприпасов, в серьезном количестве тяжелое вооружение, военную технику и транспортные средства[16]. Собственно, то, что подготовила администрация Обамы, было реализовано Дональдом Трампом.

Результаты, достигнутые совместными действий США и SDF:

1. Был создан совместный плацдарм для борьбы против запрещенных террористических группировок на севере Сирии;
2. Одним из значимых результатов стало освобождение значительной части севера Сирии от запрещенных террористических группировок;
3. Кооперация всех курдских отрядов в Сирии в одно крыло для совместных действий против запрещенных террористических группировок;
4. США смогли подготовить отряды хорошо подготовленных курдов для сохранения стабильности в отвоеванных территориях;
5. Мировое сообщество обратило внимание на проблему курдов в Сирии и непосредственно начало приглашать их на переговоры по сирийскому урегулированию.

Вопрос курдов в Сирии может быть урегулирован с помощью ответственного подхода SDF, а также постоянных переговоров между США и Россией. Важно отметить что вопрос об автономии курдов может быть решен только после сирийского урегулирования и одним из важных игроков тут является Россия, в свою очередь президент страны еще в начале вступления российских ВКС в сирийскую войну отметил что, сирийское урегулирование невозможно без учета интересов всех этнических и политических групп в том числе и курдов[17].

Ключевым моментом в самоопределении курдов является референдум о независимости Иракского Курдистана в сентябре 2017 года, где кроме Израиля ни одно государство Ближнего Востока не поддержало эту инициативу[18]. Стоит отметить что независимый Курдистан мог стать угрозой для Сирии и Ирака в случае предоставления своей территории израильским военным.

В решении курдского вопроса на наш взгляд требуется:

[16] США передали курдам тяжелое вооружение также стоит отметить что американские военные советники обучили курдов пользоваться новыми вооружениями, все это означает что США намерены сократить военное присутствие на севере Сирии. Трамп поручил вооружить курдские отряды в Сирии // «BBC». URL:https://www.bbc.com/russian/news-39865919 (дата обращения: 07.01.2020 г.)

[17] Президент России подчеркнул, что Сирия ведет в одиночку бои против запрещённых исламистских группировок, которые дестабилизируют весь регион и в свою очередь Россия готова помочь сирийскому правительству против исламистов. Встреча с Президентом Сирии Башаром Асадом // Официальный сетевой ресурс Президента России. URL: http://kremlin.ru/events/president/news/50533 (дата обращения: 08.01.2020 г.)

[18] 25 сентября 2017 года был референдум по отделению Иракского курдистана, где большинство проголосовало за выход, но реформа не прошла и вызвала ухудшение отношения с Багдадом. Причины и последствия референдума о независимости Иракского Курдистана // «ТАСС». URL: https://tass.ru/mezhdunarodnaya-panorama/4584321 (дата обращения: 08.01.2020 г.)

1. Создать совместный план действий по предоставлению сирийским курдам автономии в соответствии с резолюцией 61/295 ООН о правах коренных народов[19];
2. Учитывать интересы курдских руководителей и сделать их постоянными представителями на мирных переговорах по Сирийскому урегулированию;
3. Закрепить права курдского населения в новой конституции Сирии после мирного урегулирования конфликта;
4. Требуется создание атмосферы доверия сирийского правительства и народа страны, курды должны остаться в состав Сирии и сохранить её территориальную целостность и отказаться от любой помощи со стороны США.

В марте 2019 года президент США Дональд Трамп объявил о победе над ИГ (Запрещена в РФ) на территории Сирии, и подчеркнул, что немногочисленные остатки халифата будут зачищены SDF[20]. Альянс курдских подразделений, вооружённый современным оружием США, вполне эффективно сможет контролировать освобожденные территории как от запрещенных группировок, так и от любой другой агрессии в отношении курдов.

ВЫВОДЫ

Исходя из вышеизложенного, хотелось бы отметить, что сотрудничество США с курдскими формированиями было успешным в борьбе против запрещенных террористических группировок. В основном курдско-американский альянс носил военный характер, целью которого было сотрудничество в период военных операции против запрещенных исламистских группировок во время сирийского кризиса. В долгосрочной перспективе для США создание на севере Сирии автономии курдов было бы очень эффективным в плане сотрудничества с оппозиционной группой для координации своей политики в отношении стран на чьей территории есть курдское население и таким образом оказывать на них политическое давление. Курдов как альтернативную силу на Сирийской территории признали не только США, но практически вся коалиция, которая сражалась против запрещенных исламских группировок, это также стало значительным прорывом в консолидации курдов и позволит им более эффективно решать вопрос о предоставлении автономии на севере Сирии во

[19] Резолюцией 61/295 Генеральной Ассамблеи ООН от 13 сентября 2007 года. URL: https://www.un.org/ru/documents/decl_conv/declarations/indigenous_rights.shtml (дата обращения: 08.01.2020 г.)

[20] Угроза со от радикальных группировок в Ираке и Сирии сохраняется, но по слова президента США сама структура ИГ была разрушена коалиционными силами и разрозненные группировки остаются в некоторый районах, но уже не представляют значимой опасности. Трамп объявил о победе над «Исламским государством» // « BBC». URL: https://www.bbc.com/russian/news-47678782 (дата обращения: 08.01.2020 г.)

время переговоров с официальным Дамаском. В свою очередь главный союзник США на Ближнем Востоке Израиль также готов поддержать курдских руководителей в их стремлении к автономии что является еще одним важным фактором курдско-американского сотрудничества. Получение автономии курдов в Ираке или же в Сирии позволит улучшить отношение с Израилем и в первую очередь по направлению развития ВПК, а затем размещение военных подразделений на курдской территории и учитывая этот фактор Багдад и Дамаск не готовы предоставлять полную своду курдскому населению по соображениям территориальной безопасности. Характер длительности сотрудничества курдов и американцев можно будет оценить лишь с окончанием сирийского кризиса и как будут складывать курдско-американские отношения в послевоенный период.

ЛИТЕРАТУРА

1. Interview, Secretary Michael R. Pompeo with Joel Ebert of the Tennessean. United States Department of State. URL: https://www.state.gov/secretary-michael-r-pompeo-with-joel-ebert-of-the-tennessean/ (дата обращения: 7.12.2019).
2. The Secret Origins of the U.S.-Kurdish Relationship Explain Today's Disaster. URL: https://foreignpolicy.com/2019/10/14/us-kurdish-relationship-history-syria-turkey-betrayal-kissinger/ (дата обращения: 8.01.2020).
3. Сенников А.И Курдский вопрос в ближневосточной политике администрации Дж. Картера в 1977–1978 гг. // Вестник Нижегородского университета им. Н.И. Лобачевского. 2018. № 1. 251 с.
4. Жигалина О.И. Курдская политика США в Ираке и проблемы турецких курдов. Современный исламский восток и страны запада М. 2004 г. 193 с.
5. Constitution of the Republic of Iraq 2005. URL: https://constitutions.unwomen.org/en/countries/asia/iraq (дата обращения: 8.01.2020).
6. Institute for the Study of War. Iraq order of battle 2011. URL: https://www.jstor.org/stable/resrep07868 (дата обращения: 8.01.2020).

7. Мазур О.А. Курдский вопрос в политическом конфликте в Сирии (после 2011 года): дис… канд. полит. наук. Москва, 2005. 206 с.
8. The Secretary's Meeting with Shevardnadze - Second Small Group Meeting: Arms Control Issues. URL: https://history.state.gov/historicaldocuments/frus1981-88v06/d173 (дата обращения: 8.01.2020).
9. Иванов С.М. Иракский Курдистан на современном этапе (1991–2011 гг.). М.: ИМЭМО РАН, 2011. 86 с.
10. Иракский Курдистан. Досье [Электронный ресурс]. URL: https://tass.ru/info/1311929 (дата обращения: 8.01.2020).
11. К.В. Вертяев, С.М. Иванов Курдский национализм: История и современность. М.: ЛЕНАНД, 2015. 352 с.
12. Syria Kurds declare democratic autonomy, name municipal government in western Kurdistan [Электронный ресурс] URL: https://ekurd.net/mismas/articles/misc2014/1/syriakurd1019.htm (дата обращения: 8.01.2020).
13. История сирийских курдов. Досье [Электронный ресурс]. URL: https://tass.ru/info/2685549 (дата обращения: 8.01.2020).
14. Силы «Исламского Государства» направлены против сирийских курдов [Электронный ресурс]. URL: https://ria.ru/20141007/1027298004.html (дата обращения: 8.01.2020).
15. Cameron Abadi Why Is Turkey Fighting Syria's Kurds? Электронный ресурс]. URL: https://foreignpolicy.com/2019/10/17/turkey-claim-syrian-kurds-terrorists-not-isis-ypg-pkk-sdf/ (дата обращения: 8.01.2020).
16. The Global Coalition against Daesh [Электронный ресурс]. URL: https://theglobalcoalition.org/en/mission/ (дата обращения: 8.01.2020).
17. Öcalan'ın öngörüsü Rakka'da zaferi nasıl getirdi [Электронный ресурс]. URL: http://mezopotamyaajansi.com/tum-haberler/content/view/3779
18. Сирийские курды объявили о создании нового альянса с оппозиционерами [Электронный ресурс]. URL: https://ria.ru/20151012/1300515419.html (дата обращения: 8.01.2020).
19. Сирия: курды полностью освободили Кобани от исламистов [Электронный ресурс]. URL: https://ru.euronews.com/2015/06/27/kobane-militants-driven-out-of-strategic-syrian-town (дата обращения: 8.01.2020).

20. Освобождение Ракки не означает окончания борьбы с ИГ [Электронный ресурс]. URL: https://tass.ru/mezhdunarodnaya-panorama/4664788 (дата обращения: 8.01.2020).
21. Трамп поручил вооружить курдские отряды в Сирии [Электронный ресурс]. URL: https://www.bbc.com/russian/news-39865919 (дата обращения: 8.01.2020).
22. Встреча с Президентом Сирии Башаром Асадом //Официальный сетевой ресурс Президента России [Электронный ресурс]. URL: http://kremlin.ru/events/president/news/50533 (дата обращения: 8.01.2020).
23. Причины и последствия референдума о независимости Иракского Курдистана [Электронный ресурс]. URL: https://tass.ru/mezhdunarodnaya-panorama/4584321 (дата обращения: 8.01.2020).
24. Резолюцией 61/295 Генеральной Ассамблеи ООН от 13 сентября 2007 года [Электронный ресурс]. URL: https://www.un.org/ru/documents/decl_conv/declarations/indigenous_rights.shtml (дата обращения: 8.01.2020).
25. Трамп объявил о победе над «Исламским государством» [Электронный ресурс]. URL: https://www.bbc.com/russian/news-47678782 (дата обращения: 8.01.2020).

BIBLIOGRAPHIC REFERENCES

1. Interview, Secretary Michael R. Pompeo with Joel Ebert of the Tennessean. United States Department of State United States Department of State. Retrieved from https://www.state.gov/secretary-michael-r-pompeo-with-joel-ebert-of-the-tennessean/.
2. The Secret Origins of the U.S.-Kurdish Relationship Explain Today's Disaster. Foreign policy. Retrieved from https://foreignpolicy.com/2019/10/14/us-kurdish-relationship-history-syria-turkey-betrayal-kissinger/
3. Sennikov A.I Kurdskij vopros v blizhnevostochnoj politike administracii Dzh. Kartera v 1977-1978 [Kurdish issue in the Middle East policy of The Carter administration in 1977-1978] // Vestnik Nizhegorodskogo universiteta im. N.I. Lobachevskogo, 2018, № 1. 251 p. (In Russian)

4. Zhigalina o.i. kurdskaja politika SShA v Irake i problemy tureckih kurdov [US Kurdish Policy in Iraq and Turkish Kurdish Issues]. Sovremennyj islamskij vostok i strany zapada M., 2004. 193 p. (In Russian)
5. Constitution of the Republic of Iraq 2005. Retrieved from https://constitutions.unwomen.org/en/countries/asia/iraq.
6. Institute for the Study of War. Iraq order of battle 2011. Retrieved from https://www.jstor.org/stable/resrep07868.
7. Mazur O.A. Kurdskij vopros v politicheskom konflikte v Sirii (posle 2011 goda)[Kurdish issue in the political conflict in Syria (after 2011)]. dis. kand. /polit. nauk. M, 2005. 206 p. (In Russian)
8. The Secretary's Meeting with Shevardnadze - Second Small Group Meeting: Arms Control Issues. Retrieved from https://history.state.gov/historicaldocuments/frus1981-88v06/d173.
9. Ivanov S.M. Irakskij Kurdistan na sovremennom jetape (1991–2011). [Iraqi Kurdistan at the present stage 1991-2011] M.: IMJeMO RAN, 2011. 86 p. (In Russian)
10. Irakskij Kurdistan. Dos'e [Iraqi Kurdistan. Dossier] TASS. Retrieved from https://tass.ru/info/1311929. (In Russian)
11. K.V. Vertjaev, S.M. Ivanov Kurdskij nacionalizm: Istorija i sovremennost'. M.: LENAND, 2015. 352 p. (In Russian)
12. Syria Kurds declare democratic autonomy, name municipal government in western Kurdistan. Ekurd daily. Retrieved from https://ekurd.net/mismas/articles/misc2014/1/syriakurd1019.htm.
13. Istorija sirijskih kurdov. Dos'e. [The story of the Syrian Kurds. Dossier]. TASS. Retrieved from https://tass.ru/info/2685549. (In Russian)
14. Sily «Islamskogo Gosudarstva» napravleny protiv sirijskih kurdov [Islamic State forces target Syrian Kurds]. RIA Novosti. Retrieved from https://ria.ru/20141007/1027298004.html. (In Russian)
15. Cameron Abadi, Why Is Turkey Fighting Syria's Kurds? // «Foreign policy». Retrieved from https: https://foreignpolicy.com/2019/10/17/turkey-claim-syrian-kurds-terrorists-not-isis-ypg-pkk-sdf/.
16. The Global Coalition against Daesh. URL: https://theglobalcoalition.org/en/mission/.

17. Öcalan'ın öngörüsü Rakka'da zaferi nasıl getirdi [How did Öcalan's prediction brought victory in Raqqa?]. Mezopotamya agency. Retrieved from: http://mezopotamyaajansi.com/tum-haberler/content/view/3779. (In Turkish)
18. Sirijskie kurdy objavili o sozdanii novogo al'jansa s oppozicionerami [Syrian Kurds announce new alliance with opposition]. RIA Novosti. Retrieved from: https://ria.ru/20151012/1300515419.html. (In Russian)
19. Sirija: kurdy polnost'ju osvobodili Kobani ot islamistov [Syria: Kurds completely liberated Kobani from Islamists]. Euronews. Retrieved from: https://ru.euronews.com/2015/06/27/kobane-militants-driven-out-of-strategic-syrian-town. (In Russian)
20. Osvobozhdenie Rakki ne oznachaet okonchanija bor'by s IG [Liberating Raqqa does not mean the end of the fight against IS]. TASS. Retrieved from: https://tass.ru/mezhdunarodnaya-panorama/4664788. (In Russian)
21. Tramp poruchil vooruzhit' kurdskie otrjady v Sirii [Trump instructs to arm Kurdish forces in Syria]. BBC. Retrieved from: https://www.bbc.com/russian/news-39865919. (In Russian)
22. Vstrecha s Prezidentom Sirii Basharom Asadom [Meeting with President of Syria Bashar Assad] //Oficial'nyj setevoj resurs Prezidenta Rossii. Retrieved from: http://kremlin.ru/events/president/news/50533. (In Russian)
23. Prichiny i posledstvija referenduma o nezavisimosti Irakskogo Kurdistana [Reasons and consequences of the referendum on independence of Iraqi Kurdistan]. TASS. Retrieved from: https://tass.ru/mezhdunarodnaya-panorama/458432. (In Russian)
24. Rezoljuciej 61/295 General'noj Assamblei OON ot 13 sentjabrja 2007 goda. [Resolution adopted by the General Assembly on 13 September 2007]. Retrieved from: https://www.un.org/ru/documents/decl_conv/declarations/indigenous_rights.shtml. (In Russian)
25. Tramp objavil o pobede nad "Islamskim gosudarstvom" [Trump declares victory over Islamic State]. BBC. Retrieved from: https://www.bbc.com/russian/news-47678782. (In Russian)

Информация об авторах
Кандидат юридических наук
независимый исследователь
Амад Хассан Аль Ахмад
Казань, Россия
amad-980@mail.ru

Студент бакалавриата
Мирсаид Пулат угли Мирасраров
Казанский (Приволжский) федеральный университет
420008, Казань, ул. Кремлёвская, 18
Россия
Mirasrarov@gmail.com

Information about the authors
Candidate of Law,
Independent researcher
Amad Hassan Al Ahmad
Kazan, Russia
amad-980@mail.ru

Undergraduate student
Mirsaid Pulat ugli Mirasrarov
Kazan (Volga Region) Federal University
420008, Kazan, 18 Kremlyovskaya street
Russia
Mirasrarov@gmail.com

Раскрытие информации о конфликте интересов: *Автор заявляет об отсутствии конфликта интересов.*
Conflicts of Interest Disclosure: *The author declares Conflicts of Interest Disclosure.*

УДК 327

Оригинальная статья
Original Paper

РОССИЙСКО-ЛИВИЙСКИЕ ОТНОШЕНИЯ: ИСТОРИЯ И СОВРЕМЕННОСТЬ

М.С. Аль-Аммари[1], А.А. Николаева[2]
Казанский (Приволжский) федеральный университет[1,2]
alamary2011@mail.ru[1], anastasianikolaeva1998@gmail.com[2]

Поступила в редакцию: 2 марта 2020 г. *Submitted: March 2, 2020*
Одобрена рецензентами: 26 марта 2020 г. *Reviewed: March 26, 2020*
Принята к публикации: 15 апреля 2020 г. *Accepted: April 15, 2020*

Аннотация

Цель данного исследования – провести комплексный ретроспективный анализ советско-ливийских и российско-ливийских отношений с момента их официального установления 4 сентября 1955 года по настоящее время. Актуальность выбранной темы заключается в том, что вопрос российско-ливийских отношений на современном этапе остается малоизученным, несмотря на то, что взаимоотношения между этими двумя странами претерпели значительные изменения после гражданской войны 2011. В данной статье рассмотрены перспективы дальнейшего двустороннего взаимодействия, а также позиция российской стороны по урегулированию ливийского кризиса. Автор данной статьи уделяет большое внимание внутриполитическим процессам, происходившим в Ливии в указанный период, а также их влиянию на двусторонние отношения России и Ливии. Методологической основой исследования является диалектический подход к рассматриваемым событиям. Одним из методов нашего исследования послужил ретроспективный анализ советско-ливийских и российско-ливийских отношений. В ходе нашего исследования мы пришли к следующим выводам:

1. Важным фактором развития советско-ливийских отношений выступал антиамериканский вектор политики Джамахирии и сотрудничество Москвы и Триполи в военно-технической области;

2. После распада СССР сотрудничество России и Ливии было фактически свернуто, что объяснялось нежеланием России вступать в американо-ливийское противостояние. СНЛАД лишилась своего основного союзника, что сделало ее более уязвимой к актам внешней агрессии.
3. События 2011 года в Ливии привели к краху ливийской государственности, масштабной политической, экономической и социальной катастрофе. Говорить о возможности эффективного двустороннего сотрудничества на данном этапе не представляется возможным в силу фактического отсутствия в Ливии единого правительства и острейшего кризиса политической власти.
Ключевые слова: *Ливия, Россия, СССР, международные отношения, «арабская весна», политический кризис*

Для цитирования: *Аль-Аммари М.С., Николаева А.А. Российско-ливийские отношения: история и современность // Арабистика Евразии. 2020. № 10. С. 54-65.*

RUSSIAN-LIBYAN RELATIONS: HISTORY AND MODERNITY

M.S. Al-Ammari[1], A.A. Nikolaeva[2]
Kazan (Volga Region) Federal University[1,2]
alamary2011@mail.ru[1], anastasianikolaeva1998@gmail.com[2]

Abstract
The purpose of this study is to conduct a comprehensive retrospective analysis of Soviet-Libyan and Russian-Libyan relations starting with the point of their official establishment on September 4, 1955 to the present moment. The chosen topic is by all means relevant due to the fact that the issue of Russian-Libyan relations at the present stage remains poorly understood, despite the fact that the relations between these two countries have undergone significant changes since the 2011 civil war. This article discusses the prospects of further bilateral cooperation, as well as the position of the Russian side on the handling of the Libyan crisis. The author of this article pays great attention to the internal political processes that took place in Libya during that period, as well as their impact on the bilateral relations between Russia and Libya. The methodological basis of the research is a dialectical approach to the events under consideration. One of the methods of our research is retrospective

analysis of Soviet-Libyan and Russian-Libyan relations. As the result, we came to the following conclusions:
1. A significant reason for the development of Soviet-Libyan relations was the anti-American policy avenue of the Jamahiriya as well as cooperation between Moscow and Tripoli in the military-technical field;
2. After the collapse of the Soviet Union the cooperation between Russia and Libya was virtually stopped due to Russia's unwillingness to join the US-Libyan confrontation. The Socialist Jamahiriya has lost its main ally, which made it more vulnerable to external aggression.
3. The events of 2011 in Libya led to the collapse of the Libyan state, a large-scale political, economic and social disaster. It is impossible to talk about the possibility of effective bilateral cooperation at this stage due to the actual absence of a unified government and the acute crisis of political power in Libya.
Keywords: *Libya, Russia, USSR, international relations, "Arab Spring", political crisis*

For citation: *Al-Ammari, M.S., & Nikolaeva, A.A. (2020). Rossiysko-liviyskiye otnosheniya: istoriya i sovremennost' [Russian-Libyan relations: history and modernity]. Eurasian Arabic Studies, 10, 54-65.*

ВВЕДЕНИЕ

Как отмечает ряд экспертов, ситуация в некогда стабильной Ливии продолжает накаляться, а перспективы урегулирования глубокого внутриполитического кризиса представляются туманными, в особенности, на фоне фактического превращения бывшей Джамахирии в поле противостояния мировых и региональных держав. С момента свержения и убийства полковника М. Каддафи в Ливии фактически отсутствует единое правительство: страна разделена между ПНЕ (Правительством национального единства) в Триполи во главе с Файезом Сарраджем, которое поддерживает ООН и Ливийской национальной армией под командованием Халифы Хафтара, которая контролирует восток страны. Ситуация усложняется функционированием в Ливии множества экстремистских и террористических группировок.

Как отмечает в своей работе «Российско-ливийские экономические отношения (их ход и перспективы)» Г.И. Смирнова, политико-дипломатические отношения между Россией и Ливией всегда были довольно сложными [Смирнова, 2002, С. 24]. Сам Каддафи не раз отмечал, что СССР и Ливийская Джамахирия были на

разных идеологических полюсах, к тому же бывший СССР, а затем Россия никогда не были главными экономическими партнерами Ливии. Однако советско-ливийское сотрудничество в военно-технической области носило широкомасштабный характер [Эльмалян, 2007, С. 56]. Важным фактором развития сотрудничества между Москвой и Триполи выступал антиимпериалистический и антиамериканский вектор ливийской внешней политики. СССР в условиях Холодной войны было выгодно существование в арабском мире политического режима, ставившего во главу угла противостояние с США. Однако после распада Советского Союза и окончания Холодной войны двустороннее экономическое сотрудничество России с Ливией было практически полностью свернуто. Причиной этому, по мнению одного из ведущих отечественных экспертов по Ливии А. З. Егорина, стало сближение США и России и, как следствие, нежелание Москвы вступать в американо-ливийскую конфронтацию [Егорин, 1999, С. 321].

Сегодня в условиях непрекращающегося противостояния между ПНЕ и ЛНА, Россия поддерживает контакты с обеими сторонами конфликта. Москву неоднократно посещали как лично Халифа Хафтар, так и представители Правительства национального единства. Как отмечает один из постоянных аналитиков Института Ближнего Востока Николай Кожанов, «вступив в ливийский конфликт, Москва показывает Европе и США, что она не ограничится Сирией и Украиной, и что ее успех в Сирии неслучаен».

МАТЕРИАЛЫ И МЕТОДЫ ИССЛЕДОВАНИЯ

Официально дипломатические отношения между СССР и Ливией были установлены 4 сентября 1955 года. Однако новый виток развития двусторонних отношений наступил после революции «Аль-Фатех» 1 сентября 1969, в результате которой марионеточный режим короля Идриса ас-Сенуси был свергнут группой молодых военных, назвавших себя «Свободные офицеры юнионисты-социалисты» во главе с М. Каддафи, и было объявлено, что Ливия становится на новый, социалистический путь развития. Безусловно, СССР, который видел в странах Ближнего Востока и Северной Африки стратегически важный с точки зрения влияния регион, не мог оставить этот факт без внимания. Не менее важным фактором развития двустороннего сотрудничества стал открытый антиамериканизм революционного ливийского руководства. К тому же, как отмечает в своем исследовании «Советское/российское направление во внешней политике Египта и Ливии во второй половине XX века» Е. В. Ульянищева, факт прихода к власти взявшего курс на сближение с США А.

Садата в Египте вынудил Советский Союз начать свертывание своей политики в этой стране и приступить к поискам нового союзника в Северной Африке [Ульянищева, 2008, С. 143]. Важным фактором в сближении Советского Союза с Ливией играло военно-стратегическое положение страны, поскольку Ливия, будучи расположенной вблизи важных морских коммуникаций, занимает важное стратегическое положение и связывает страны Западной Европы с Ближним Востоком. Таким образом, СССР видел в Ливии потенциального партнера в противостоянии с экспансией США в бассейне Средиземного моря.

Следует отметить, что, несмотря на кажущуюся идеологическую близость Ливии и СССР, новый ливийский руководитель М. Каддафи имел собственное видение «социалистического пути». Ливийский «эксперимент», утверждал он, служит «альтернативой капиталистическому материализму и коммунистическому атеизму» [Егорин, 1999, С. 42]. В своих многочисленных интервью ливийский лидер неоднократно подчеркивал, что «не видит противоречий между социализмом и исламом». В частности, в интервью бейрутской газете «Аль-Барак» полковник заявил, что «основы научного социализма заложены Кораном и сводятся к справедливости, к борьбе с угнетением и рабством» [Бланди, 1987, С. 100]. Впрочем, ряд исследователей-востоковедов небезосновательно полагают, что разработка М. Каддафи идей «третьего пути», отличного от капитализма и коммунизма, была продиктована реалиями племенного ливийского общества. «Сознавая, что его режим нуждался в поддержке племен, – пишут Д. Бланди и Э. Лайсетт, – он воспринял анахроническое самосознание бедуинов и заложил его в основу своей политической теории» [Бланди, 1987, С. 99]. «Третий путь» М. Каддафи сформулирован в его небезызвестном фундаментальном труде под названием «Зеленая книга», где он категорически отвергает диктатуру одной партии или одного класса. Он также отрицает классовую борьбу, утверждая, что «победителем в ней всегда выходит орудие правления – отдельная личность, группа людей, партия, класс, побеждённым же всегда оказывается народ, то есть подлинная демократия» [Каддафи, 1989, С. 45]. Таким образом, вышеописанные положения «ливийского социализма», а также доктрина ливийского лидера, согласно которой любая сверхдержава, в том числе СССР, представляет угрозу для развивающихся стран, очевидно, не способствовали идеологическому сближению Ливии и Советов.

Так или иначе, несмотря на некоторые трудности в политико-дипломатических отношениях между Триполи и Москвой, военно-техническое сотрудничество между двумя странами продолжалось. Как отмечает Д. А. Стрельцов в своей

работе «Россия и страны Востока в постбиполярный период»: «До распада Советского Союза и окончания эры холодной войны основной объем торгово-экономического сотрудничества со странами Магриба приходился на поставки советской военной техники и обучение военных специалистов из стран региона» [Стрельцов, С. 123]. Так, в 1972 в результате подписания советско-ливийского соглашения по военному сотрудничеству Ливия получила первую партию танков Т-54. Ливия нуждалась в советском оружии и закупала его в значительных масштабах. На первое место в советско-ливийских отношениях вышел прагматизм.

В 1980-х годах наблюдалось свертывание торговых связей СССР и СНЛАД, хотя, конечно, поставки советского оружия в Джамахирию не прекращались. В остальном же торговля, как отмечает А. З. Егорин «была крайне несбалансированной». Так, по мнению исследователя, несмотря на резкий антизападный курс, революционное руководство СНЛАД в своей экономической политике предпочитало сотрудничество с развитыми промышленными странами, в первую очередь с европейскими, географически близкими к Ливии, а также с Японией и Южной Кореей [Егорин, 1999, С. 142]. Объем торгово-экономического сотрудничества с Ливией в 1970-1980-х годах составлял около одного миллиарда долларов. Двусторонние экономические отношения Триполи и Москвы развивались стабильно. Что же касается полито-дипломатических связей, то, несмотря на постепенное угасание сотрудничества между СССР и СНЛАД в начале 1980-х годов, представители обеих стран регулярно поддерживали контакт. М. Каддафи трижды посещал Москву с официальными визитами.

Спад сотрудничества между Триполи и Москвой, который, по мнению ряда экспертов, был вызван отчасти внутригосударственными проблемами СССР, вызвал резкое ужесточение американской политики в отношении Ливийской Джамахирии. Так, в августе 1981 года США провели провокационные учения в заливе Сидра у побережья Ливии, в результате чего были сбиты два ливийских самолета, несших патрульную службу. В 1986 году США совершили авианалет на ливийские города, жертвами которого, по оценкам профессора Пенсильванского университета и специалиста по Ливии Дж. Брюса, оказались не менее 100 ливийских граждан [Брюс, 2002, С. 73]. Руководство Джамахирии обратилось в ООН с требованием принять меры по противодействию агрессии США и подало жалобу в связи с вопиющим нарушением норм международного права. Однако никаких реальных мер со стороны ООН принято не было. США

неоднократно обвинили Ливию в «поддержке международного терроризма», не подкрепляя свои обвинения существенными доказательствами. Так, например, 7 января 1986 года Р. Рейган открыто обвинил Ливию в террористических атаках, произошедших в аэропортах Вены и Рима, несмотря на заключение по этому делу европейских следователей, пришедших к выводу, что теракты были осуществлены представителями той части долины Бекаа в Ливане, которая находится под сирийским контролем. Советский Союз резко осудил действия США против Ливии, а после атаки на Ливию в 1986 году, для предотвращения конфликта Черноморскому флоту было приказано спланировать и провести командно-штабное учение с силами Средиземноморской эскадры в районе залива Сидра. Тем не менее, это не остановило усиливающуюся антиливийскую политику США. Как отмечает в своих статьях доктор исторических наук Александр Окороков, однажды, встретившись с советскими журналистами, ливийский лидер М. Каддафи упрекнул советскую сторону в слабой помощи Ливии в отражении американского нападения. Впрочем, будет весьма справедливо отметить, что это стало только началом заметного спада в отношениях между Москвой и Триполи.

В марте 1992 г. Российская Федерация проголосовала в Совете Безопасности ООН за принятие резолюции о введении экономических санкций и блокаде авиаперевозок по отношению к Ливии. Резолюция подразумевала полный запрет на любое сотрудничество с этой страной. Исключением были, разве что, гуманитарные программы. Как отмечает в своей работе «Отношения между Ливией и Российской Федерацией на современном этапе» А. Эльмалян, подобный запрет стал сильным ударом по ливийско-российским отношениям, так как советско-ливийское сотрудничество в военно-технической области носило широкомасштабный характер [Эльмалян, 2007, С. 58]. Интерес представляет статья «Каддафи наказан, Россия тоже», где подчеркивается, что резолюция №731 СБ ООН серьезно затрагивает Россию. Автор статьи пишет: «Фактически с помощью санкций нас заставили в одночасье уйти из Ливии. В то же время на продажу Ливией своей нефти, которую закупают, прежде всего, западноевропейские страны, санкции распространены не были. В результате санкций мы недосчитываем около 18 млрд. долл. И это в то время, когда Европа буквально захлебывается ливийской нефтью...». В ноябре 1993 года СБ ООН принял резолюцию № 843 о введении дополнительных санкций против Джамахирии, которые нанесли заметный ущерб нефтяной отрасли; ливийское руководство было вынуждено ослабить предпринимаемые им в последние годы

усилия по диверсификации экономики СНЛАД. Внешнеполитический курс Ливии претерпел значительные изменения.

Санкции, введенные в отношении Ливии, не могли не сказаться на ее иностранных партнерах, в том числе, на России: выполнение целого ряда заключенных между странами договоренностей было приостановлено. Оказавшаяся под гнетом санкций Джамахирия была не в состоянии выплачивать свой долг перед СССР, который по некоторым оценкам составлял 4,6 миллиардов долларов. Общие потери для России от применения санкций составили примерно 40 миллиардов долларов, в то время как, согласно данным мирового банка, ущерб для ливийской экономики составил 18 миллиардов долларов [Брюс, 2002, С. 90]. И хотя после снятия санкций было предпринято немало попыток наладить двустороннее сотрудничество, Россия на ливийском рынке явно отставала от своих конкурентов.

Одним из самых переломных и трагических этапов в истории современной Ливии, безусловно, стали события «арабской весны» и интервенция военного блока НАТО. Множество исследователей и специалистов по Ливии таких как В. Н. Пухов, В. А. Целуйко, М. М. Мусин посвятили свои работы анализу внешних и внутренних факторов, оказавших влияние на события в этой стране. В свете обеспечения российских интересов на фоне ливийского кризиса примечательно высказывание бывшего посла РФ в Ливии В. Чамова в его интервью газете «Эхо Москвы», где экс-посол подчеркнул, что Россия и Ливия «в последние годы были нацелены на тесное сотрудничество и не в интересах России терять такого партнера». В. Чамов отметил, что «российские компании заключили (с Ливией) на несколько лет вперед очень выгодные контракты на десятки миллиардов евро». Таким образом, бывший посол РФ в Ливии, как он впоследствии писал в своей работе «Ливийская драма: видение российского дипломата» [Чамов, С. 567], был убежден, что война в Ливии и свержение правительства М. Каддафи негативно отразится на российских интересах в регионе.

РЕЗУЛЬТАТЫ

С 1970-х до падения правительства Каддафи двусторонние отношения СССР и Ливии, главным образом, основывались на экономическом и военном сотрудничестве. Важным фактором развития советско-ливийских отношений выступал антиамериканский вектор политики Джамахирии и сотрудничество Москвы и Триполи в военно-технической области.

После распада СССР сотрудничество России и Ливии было фактически свернуто, что объяснялось нежеланием России вступать в американо-ливийское

противостояние. Вследствие этого СНЛАД лишилась своего основного союзника, что сделало ее более уязвимой к актам внешней агрессии, а факт того, что в 1992 Россия присоединилась к санкциям против Ливии. свидетельствовал о смене вектора российской внешней политики в Ливии. Двустороннее сотрудничество стало налаживаться лишь с 2008 года, когда В. Путин простил Ливии долг в несколько миллиардов. С этого момента экономическое сотрудничество возобновилось, и между Москвой и Триполи был подписан ряд многомиллиардных контрактов.

События 2011 года в Ливии привели к краху ливийской государственности, масштабной политической, экономической и социальной катастрофе. Говорить о возможности эффективного двустороннего сотрудничества на данном этапе не представляется возможным в силу фактического отсутствия в Ливии единого правительства и острейшего кризиса политической власти. Россия в ливийском конфликте выступает скорее в роли арбитра и посредника, ратуя за переговоры между ЛНА Х. Хафтара и ПНЕ Ф. Сарраджа.

ВЫВОДЫ

Следует заметить, что современный этап российско-ливийского взаимодействия остается малоизученным аспектом международных отношений, а научной литературы, посвященной роли России в стабилизации ливийского кризиса, практически нет. Впрочем, этому есть логическое обоснование: на сегодняшний день исход противостояния двух главных противоборствующих сил в Ливии остается неясным, особенно, в свете более активного включения в этот конфликт ряда внешних игроков, что лишь усугубляет и так непростую ситуацию. Положить конец гражданской войне может только решительная победа одной из сторон. Россия в данном конфликте, как уже ранее было отмечено, поддерживает связи со всеми сторонами конфликта и выступает скорее в качестве посредника в ливийском урегулировании. Как отмечает старший преподаватель НИУ «Высшая школа экономики» Леонид Исаев, обозначение своих позиций в Ливии позволяет российскому руководству надеяться, что его интересы будут учтены в послевоенном переделе этой страны.

Впрочем, говорить об окончании гражданской войны или проведении президентских или парламентских выборов пока не приходится. Новый период активных боевых действий в разрушенной Ливии, представляющей собой «лоскутное одеяло» и практически распавшейся на многочисленные

квазигосударственные образования, явно будет долгим и весьма кровопролитным.

ЛИТЕРАТУРА

1. Смирнова Г.И. Российско-ливийские экономические отношения (их ход и перспективы) // Ближний Восток и современность / сост., отв. ред. А. О. Филоник М. Р. Арунова. М., 2009. С. 23-36.
2. Эльмалян А.С. Отношения между Ливией и Российской Федерацией на современном этапе // Журнал международного права и международных отношений. 2007. № 4.. С. 56-58.
3. Егорин А.З. Современная Ливия. История Ливии XX век. М.: Институт востоковедения РАН. 1999. 342 с.
4. Ульянищева Е.В. Советское/российское направление во внешней политике Египта и Ливии во второй половине XX века. М.: 2008. 262 с.
5. Товмасян А.С. Ливия на пути независимости и социального прогресса. М., Наука. 1980. 206 с.
6. М. Каддафи. Зеленая книга. М.: Международные отношения. 1989, С. 54-55.
7. Стрельцов Д.А. Россия и страны Востока в постбиполярный период. учеб. пособие // Аспект Пресс / под ред. Д.В. Стрельцова. М., 2014. С. 123-124.
8. Чамов В.В. Ливийская драма: видение российского дипломата // Институт Востоковедения РАН: сб. статей «Ближний Восток, Арабское пробуждение и Россия: что дальше?». М. 2012. С. 564 – 576.
9. Рясов А.В. Влияние идей русских радикал-революционеров на формирование мировоззрения М. Каддафи // сб. статей «Ближний Восток и современность». №7. М. 2009. 327 с.
10. Васильев А.М. Россия на Ближнем Востоке: от мессианства к прагматизму // изд. фирма «Вост. лит.». М., 1993. 397 с.
11. Blundy D., Lycett F. (1987). *Qaddafi & the Libyan Revolution.* L.: Weidenfeld and Nicolson.
12. St. John, R.B. (2002). *Libya and the United States. Two centuries of strife.* Philadelphia. Univ. of Pennsylvania press.
13. Россия-Ливия: сферы двухстороннего сотрудничества. Справка // РИА Новости. 17.04.2008. [Электронный ресурс]. URL: https://ria.ru/20080417/105289966.html (дата обращения 22.02.2020).

14. Исаев Л. Зачем России Ливия? // Riddle. 28.01.2019. [Электронный ресурс]. URL: https://www.ridl.io/ru/zachem-rossii-livija/ (дата обращения 23.02.2020).

BIBLIOGRAPHIC REFERENCES

1. Smirnova G.I. (2009). Rossijsko-livijskie ekonomicheskie otnosheniya (ih hod i perspektivy) [Russian-Libyan economic relations (their course and prospects)] Blizhnij Vostok i sovremennost' / sost., otv. red. A. O. Filonik M. R. Arunova. M., 2009. pp. 23-36.
2. El'malyan A.S. (2007). Otnosheniya mezhdu Liviej i Rossijskoj Federaciej na sovremennom etape [Relations between Libya and the Russian Federation at the present stage]. Zhurnal mezhdunarodnogo prava i mezhdunarodnyh otnoshenij. 2007. № 4. pp. 56-58.
3. Egorin A.Z. (1999). Sovremennaya Liviya. Istoriya Livii XX vek. [Modern Libya. History of XX century Libya]. M.: Institut vostokovedeniya RAN. 1999. 342 p.
4. Ul'yanishcheva E.V. (2008). Sovetskoe/rossijskoe napravlenie vo vneshnej politike Egipta i Livii vo vtoroj polovine XX veka. [Soviet / Russian direction in the foreign policy of Egypt and Libya in the second half of the XX century]. M.: 2008. 262 p.
5. Tovmasyan A.S. (1980). Liviya na puti nezavisimosti i social'nogo progressa. [Libya on the path of independence and social progress]. M., Nauka. 1980. 206 p.
6. M. Kaddafi. (1989). Zelenaya kniga. [The Green book]. M.: Mezhdunarodnye otnosheniya. 1989. pp. 54-55.
7. Strel'cov D. A. (2014). Rossiya i strany Vostoka v postbipolyarnyj period. [Russia and Eastern countries in the post-bipolar period]. ucheb. posobie // Aspekt Press / pod red. D.V. Strel'cova. M., 2014. pp. 123-124.
8. Chamov V.V. (2012). Livijskaya drama: videnie rossijskogo diplomata [The Libyan drama: the vision of a Russian diplomat]. Institut Vostokovedeniya RAN: sb. statej «Blizhnij Vostok, Arabskoe probuzhdenie i Rossiya: chto dal'she?». M. 2012. pp. 564 – 576.
9. Ryasov A.V. (2009). Vliyanie idej russkih radikal-revolyucionerov na formirovanie mirovozzreniya M. Kaddafi [Influence of ideas of Russian radical revolutionaries on the formation of M. Gaddafi's worldview]. sb. statej «Blizhnij Vostok i sovremennost'». №7. M. 2009. 327 p.

10. Vasil'ev A.M. (1993). Rossiya na Blizhnem Vostoke: ot messianstva k pragmatizmu [Russia in the middle East: from messianism to pragmatism]. izd. firma «Vost. lit.». M., 1993. 397 p.
11. Blundy D., Lycett F. (1987). *Qaddafi & the Libyan Revolution.* L.: Weidenfeld and Nicolson.
12. St. John R.B. (2002). *Libya and the United States. Two centuries of strife.* Philadelphia. Univ. of Pennsylvania press.
13. Rossiya-Liviya: sfery dvuhstoronnego sotrudnichestva. Spravka (04.2008) [Russia-Libya: areas of bilateral cooperation. Reference]. RIA Novosti. Retrieved from https://ria.ru/20080417/105289966.html. (In Russian)
14. Isaev L. (01.2019). Zachem Rossii Liviya? [Why Does Russia Need Libya?]. Riddle. Retrieved from: https://www.ridl.io/ru/zachem-rossii-livija/. (In Russian)

Информация об авторах
Кандидат пед. наук, профессор
Мохаммед Салех Аль-Аммари
Казанский (Приволжский) федеральный университет
420008, Казань, ул. Кремлёвская, 18
Россия
alamary2011@mail.ru

Студент-бакалавр
Анастасия Александровна Николаева
Казанский (Приволжский) федеральный университет 420008, Казань, ул. Кремлёвская, 18
Россия
anastasianikolaeva1998@gmail.com

Information about the authors
Professor, PhD
Mohammed Saleh Al-Ammari
Kazan (Volga Region) Federal University
420008, Kazan, Kremlyovskaya str., 18
Russia
alamary2011@mail.ru

Bachelor degree student
Anastasia Alexandrovna Nikolaeva
Kazan (Volga Region) Federal University
420008, Kazan, Kremlyovskaya Str., 18
Russia
anastasianikolaeva1998@gmail.com

Раскрытие информации о конфликте интересов: *Автор заявляет об отсутствии конфликта интересов.*

Conflicts of Interest Disclosure: *The author declares Conflicts of Interest Disclosure.*

УДК 94

المقال الأصلي
Original Paper
Оригинальная статья

الجذور التاريخية لدبلوماسية العلم والتكنولوجيا والابتكار في بلاد الرافدين وأثرها في الحضارة العالمية

ثائر طاهر فاضل الفوادي
وزارة خارجية جمهورية العراق
talfuady@yahoo.com

Поступила в редакцию: 28 апреля 2020 г.	*Received: April 28, 2020*	*تم الاستلام في ٢٨ أبريل ٢٠٢٠*
Одобрена рецензентами: 21 мая 2020 г.	*Reviewed: May 21, 2020*	*تم التقييم في ٢١ مايو ٢٠٢٠*
Принята к публикации: 30 мая 2020 г.	*Accepted: May 30, 2020*	*تم القبول للنشر في ٣٠ مايو ٢٠٢٠*

الملخص

مع أن مصطلح دبلوماسية العلم قد ظهر في القرن الواحد والعشرين، إلا أنها من حيث المفهوم والتطبيق فقد عُرفت منذ فجر التاريخ، إذ تُظهر الرقم الطينية والمدونات المسمارية والآثار أن حضارة بلاد الرافدين أول من مارس نشاطات دبلوماسية العلم والتكنولوجيا والابتكار منذ حوالي (3500 قبل الميلاد)، فقد أقامت حضارة بلاد الرافدين شبكة مواصلات تجارية تربطها مع الدول المجاورة، ومصر، واليونان، والبحر الأسود وبحر قزوين، وصولا إلى الجزر البريطانية، مما أتاح انتقال العناصر الثقافية من بلاد الرافدين إلى الحضارات الأخرى المجاورة والبعيدة، وقد اقتبست الحضارات الأخرى، ومنها المصرية، والإغريقية، والرومانية، الكثير من العلوم والمعارف والتكنولوجيا والابتكارات الرافدينية، فقد أرسلت بلاد الرافدين الأطباء لمعالجة حاشية الملوك في مملكة ماري (سوريا)، واسيا الصغرى (الأناضول)، والحضارة المصرية، كما وقد وضعت حضارة بلاد الرافدين أسس علوم الرياضيات قبل اليونان بـ(1500 سنة)، وكتبت قصص الطوفان والخليقة وكلكامش قبل اليونان والرومان بعشرات القرون وتأثروا بها واقتبسوا منها فكتبوا الإلياذة والأوديسة والانياذة، إذ أن سكان بلاد الرافدين أول من اخترع الكتابة، وعرف علوم الكيمياء، والفلك، والطب، والهندسة، وصهر المعادن، وفن العمارة وتخطيط المدن، وهم من اوجد

نظام الستين، الدائرة 360 درجة، ألـ 60 دقيقة، الـ60 ثانية، وعدد ساعات اليوم، وعدد أيام الأسبوع، وعدد أشهر السنة، كلها منجزات وموروثات بلاد الرافدين تناقلت بين الحضارات حتى وصلت إلى عالمنا المعاصر وصارت جزء منه بفضل دبلوماسية العلم والتكنولوجيا والابتكار في بلاد الرافدين.

الكلمات المفتاحية: العلم والتكنولوجيا، الابتكار، بلاد الرافدين، التعاون المتبادل، الدبلوماسية

للاقتباس: الفوادي، ث.ط.ف. (2020). الجذور التاريخية لدبلوماسية العلم والتكنولوجيا والابتكار في بلاد الرافدين وأثرها في الحضارة العالمية. الدراسات العربية الأوراسية، ١٠، ص ص ٦٦-١٠٥.

THE HISTORICAL ROOTS OF SCIENCE, TECHNOLOGY AND INNOVATION DIPLOMACY IN MESOPOTAMIA AND ITS IMPACT ON GLOBAL CIVILIZATION

Th.T.F. Al-Fawadi

Ministry of foreign Affairs of the Republic of Iraq

talfuady@yahoo.com

Abstract

Although the term ‘‘diplomacy of science’’ has appeared in the XXI century, this term has been known since the dawn of history. The clays and cuneiform codes and monuments show that the Mesopotamian civilization was the first state which practised science, technology and innovation diplomacy since about 3500 B.C. The civilization of Mesopotamia established a commercial transportation network, linking it with the neighboring countries, such as Egypt, Greece, the Black Sea and the Caspian Sea, and the British Isles. This allowed the transfer of cultural elements from Mesopotamia to other neighboring and distant civilizations; as a result, the Egyptian, Greek, and Roman civilisations, borrowed a large amount of scientific, and technological innovations of the Mesopotamian origin. Mesopotamia sent doctors to treat the royal courts in the Kingdom of Mary (Syria), Asia Lesser (Anatolia), and the Egyptian civilization.

The Mesopotamian civilization laid the foundations of mathematics 1500 years before Greece, and the stories of the Flood and the Creation and Gilgamesh were written decades and years before Greece and the Romans, influencing them to write the Iliad, the Odyssey and the Aeneid.

As the inhabitants of Mesopotamia invented writing and were good at chemistry, astronomy, medicine, engineering, smelting, architecture, and city planning, they created the sexagesimal numeric system, the 60 minutes, the 60 seconds, the circle of 360 degrees, the number of hours of the day, the number of days of the week, and the number of months of the year. All of the achievements of Mesopotamia were used by other civilizations until they reached our contemporary world and became part of it thanks to the diplomacy of science, technology and innovation in Mesopotamia.
Keywords: *science and technology, innovation, Mesopotamia, mutual cooperation, diplomacy*

For citation: *Al-Fawadi, Th.T.F. (2020). The historical roots of science, technology and innovation diplomacy in Mesopotamia and its impact on global civilization. Eurasian Arabic Studies, 10, 66-105. (In Arabic)*

ИСТОРИЧЕСКИЕ КОРНИ НАУЧНО-ТЕХНИЧЕСКОЙ И ИННОВАЦИОННОЙ ДИПЛОМАТИИ В МЕСОПОТАМИИ И ЕЕ ВЛИЯНИЕ НА МИРОВУЮ ЦИВИЛИЗАЦИЮ

Т.Т.Ф. Аль-Фавади

Министерство иностранных дел Республики Ирак

talfuady@yahoo.com

Аннотация

Хотя термин «научно-техническая дипломатия» появился в XXI веке, он как понятие был известен еще на заре истории. Изучение глиняных табличек, клинописи и исторических памятников доказывает, что Месопотамии была первой страной, где начали практиковать научно-техническую и инновационную дипломатию примерно с 3500 года до н.э.

В данной статье рассматривается культурное и научно-техническое наследие Месопотамии и его влияние на остальные цивилизации.

Месопотамия создала торговую транспортную сеть, связывающую ее с соседними странами, Египтом, Грецией, Черным и Каспийским морями, вплоть до Британских островов, что способствовало распространению достижений Месопотамии в соседние и отдаленные страны. Следует отметить, что египтяне, греки и римляне переняли многие достижения месопотамцев в области науки и техники. Так, Месопотамия посылала врачей лечить приближенных монархов в царство Мари (Сирия), в Малую Азию

(Анатолию) и в египетскую цивилизацию. Как Месопотамская цивилизация заложила основы математической науки за 1500 лет до Греции, так и Эпос о Гильгамеше со сказаниями о Потопе и Сотворении были созданы за десятки веков до греков и римлян, что способствовало написанию «Илиады», «Одиссеи» и «Энеиды».

Поскольку месопотамцы первыми изобрели письменность, хорошо знали химию, астрономию, медицину, машиностроение, металлургию, архитектуру и градостроительство, именно они создали шестидесятеричную систему счисления – деление круга на 360 градусов, одного часа на 60 минут, одной минуты на 60 секунд, суток на двенадцать часов, неделю на количесвто дней, одного года на двенадцать месяцев.

В заключение, благодаря научно-технический и инновационной дипломатии Месопотамии, все ее наследие передавалось из одной цивилизации в другую, до тех пока оно не дошло до нас и не стало частью современного мира.

Ключевые слова: *наука и техника, инновации, Месопотамия, взаимное сотрудничество, дипломатия*

Для цитирования: *Аль-Фавади Т.Т.Ф. Исторические корни научно-технической и инновационной дипломатии в Месопотамии и ее влияние на мировую цивилизацию // Арабистика Евразии. 2020. № 9. С. 66-105. (на арабском языке)*

المقدمة

ظهر مصطلح "دبلوماسية العلم"، أو "الدبلوماسية العلمية"، حديثاً في القرن الحادي والعشرين بعد صدور أول كتاب في هذا المجال في مؤتمر معاهدة القطب الجنوبي عام 2009، (Berkman, 2018)، وعرّفتها البرفسورة نينا فيدوروف (Nina Fedoroff)، مستشارة العلوم والتكنولوجيا في وزارة الخارجية الأميركية في فترة تولي كوندليزا رايس، وهيلاري كلينتون وزارة الخارجية، على أنها "استخدام التفاعلات العلمية بين الدول لمعالجة المشاكل المشتركة التي تواجهها الإنسانية وبناء شراكات دولية بناءة تقوم على أساس المعرفة" (Koppelman, Day, Davison, Elliott, & Wilsdon, 2010, p. 2)، وقد اختلف الباحثون في تحديد بداياتها وجذورها التاريخية، فقد أشار الباحث كيجيرمو كوتيرز نيتو (Guillermo Gutierrez Nieto) إلى أن تاريخ نشأة دبلوماسية العلم يعود إلى استراتيجيات إعادة دول أوربا بعد الحرب العالمية الثانية، وان توطيدها تركز على مجال معين من التعاون في البحث النووي خلال الحرب الباردة، ثم بعد ذلك تطورت دبلوماسية العلم بشكل مضطرد مع العدد المتزايد للجهات الفاعلة والموضوعات ذات العلاقة بالدبلوماسية (Nieto, 2018, p. 56).

وترى الجمعية الملكية البريطانية، وهي مؤسسة أكاديمية ملكية بريطانية تعنى بتعزيز التفوق العلمي، أن تاريخ نشأة دبلوماسية العلم ظهر في العام 1660م، بالتزامن مع تاريخ تأسيس الجمعية، وإن المملكة المتحدة مارست نشاطات دبلوماسية العلم منذ ذاك الوقت بهدف تجاوز الصراعات العسكرية والاختلافات السياسية والثقافية مع البلدان الأخرى، إذ تم تعيين فيليب زولمان (Philip Zollman)، وزيرا للخارجية في الجمعية الملكية في عام 1723م، وكان دوره يقتضي التواصل مع العلماء في خارج المملكة والاطلاع ومتابعة قضايا الأفكار والبحث العلمي معهم (Koppelman et al, 2010, p.1).

بينما أوغل بعضهم في القدم وارجع جذورها إلى القرن الثالث عشر قبل الميلاد، إذ يشير الباحث فاوكان توركيان (Vaughan Turekian)، انه لا يوجد أدنى شك في أن العلم (وتطبيقاته)، قد أُستخدم عبر التاريخ كوسيلة لمعالجة التحديات، وان معاهدة السلام (قادش)، التي وقعت عام (1300 ق.م) بين فرعون مصر رمسيس الثاني، والملك حاتوسيلي الثالث (ملك الحيثين)، تعد واحدة من أكثر الأمثلة الواردة في هذا الخصوص، فعلى الرغم من أن المعاهدة لم تحدد التعاون التقني، إلا أن تعزيز العلاقة بين العلم والدبلوماسية يمكن الاستدلال عليه من خلال عملية بسيطة ركزت على عملية تبادل العلوم بين الملكين، عندما أرسل حاتوسيلي رسالة إلى رمسيس يسأله: "هل يمكن أن ترسل لي أحد أطبائك لمساعدة أختي في الحمل؟" (Turekian, 2018, p. 5).

لكن التنقيبات الأثرية والرقم الطينية تكشف لنا أن ممارسات وتطبيقات دبلوماسية العلم والتكنولوجيا والابتكار قد ظهرت جليا في تعاملات وأنشطة حضارة بلاد الرافدين (Mesopotamia)، أول حضارة عرفتها البشرية، وأول من اخترع الكتابة، ودوّن التاريخ، ومارس الدبلوماسية، وعرف العلوم والمعارف، والصناعات، والكيمياء، والأدب، وعلوم الرياضيات، والفلك، وعرفت فنون العمارة وتخطيط المدن والشوارع، وعلوم الطب، والهندسة، وقد تأثرت الحضارات الأخرى بتلك العناصر الثقافية لبلاد الرافدين وأخذت واقتبست الكثير منها، وبما أن العلم اثبت خاصية أن كل متأثر بغيره مؤثر في غيره، مع مراعاة النسبية في مدى التأثر والتأثير، لذا فان كل الأشياء في الكون تتأثر ببعضها البعض، وعليه فان المجتمعات التي كونت الحضارات خضعت لنفس النظرية العلمية في تأثرها وتأثيرها بغيرها، فالحركة التاريخية والتيارات الحضارية لا تعرف الحدود الجغرافية ولا تتوقف عندها سواء كانت قومية أو قارية، فالإغريق والرومان قد تلقوا تراث الحضارات الشرقية القديمة ونقلوه بدورهم إلى أوروبا[1]، فإذا كانت عملية إعادة أعمار أوروبا والتعاون العلمي في مجال ما، وإرسال الأطباء وتقديم الخدمات الطبية بين الملوك والدول تعد أمثلة على دبلوماسية العلم، فان اختراع الكتابة المسمارية وانتشار اللغات السومرية والبابلية واستعمالها في المخاطبات والمراسلات بين الممالك والدول الأخرى، وانتقال العلوم والمعارف والتكنولوجيا من بلاد الرافدين إلى الحضارات الأخرى المجاورة والبعيدة مثل العيلامية (ايران)، والحيثية (الاناضول)، والمصرية، والإغريقية، والرومانية يعد

[1] رضا، ح. ر. (2015). بلاد النهرين في العصر الهيللنستي (331-126 ق.م)، أطروحة دكتوراه في الآداب في التاريخ القديم اليوناني والروماني.

الفوادي، ث. ط. ف. (2020). الجذور التاريخية لدبلوماسية العلم والتكنولوجيا والابتكار في بلاد الرافدين وأثرها في الحضارة العالمية. الدراسات العربية الأوراسية، ١٠، ص ص ٦٦-١٠٥.

دليلا على تطبيقات دبلوماسية العلم والتكنولوجيا والابتكار في بلاد الرافدين منذ 3500 سنة قبل الميلاد.

مشكلة البحث

من المتعارف عليه أن مصطلح دبلوماسية العلم، أو"الدبلوماسية العلمية"، قد ظهر في القرن الحادي والعشرين وتحديدا في عام 2009، لكن الرقم الطينية والآثار والمدونات المسمارية السومرية والبابلية تشير إلى إن دبلوماسية العلم والتكنولوجيا والابتكار من حيث المفهوم والتطبيق ظهرت في حضارة بلاد الرافدين منذ (3500 عام ق.م)، فقد كانت أول حضارة عرفها الإنسان، وأول من مارس الدبلوماسية والعلوم والمعارف والتكنولوجيا والابتكار، لذا اقتضت الدراسة البحث في بدايات وجذور دبلوماسية العلم والتكنولوجيا والابتكار في حضارة وادي الرافدين، وكيف انتقلت علوم ومعارف وتكنولوجيا بلاد الرافدين إلى الحضارات الأخرى، وكيف أثرت علوم ومعارف وتكنولوجيا حضارة بلاد الرافدين في الحضارة العالمية وعالمنا المعاصر.

فرضية البحث

بما أن الدبلوماسية، والعلوم، والمعارف، والتكنولوجيا، والابتكارات، والفنون، ارتبطت ارتباطا وثيقا بالحضارة، وبما أن حضارة بلاد الرافدين أقدم حضارة عرفها الإنسان، وبما أن الحضارات الإنسانية شكلت خيطا متصلا انتقلت من خلاله تلك العناصر الثقافية فيما بينها وصولا إلى عالمنا المعاصر، لذا يفترض البحث أن حضارة بلاد الرافدين تعد مهد دبلوماسية العلم والتكنولوجيا والابتكار، ومن خلالها انتقلت العلوم والمعارف والاختراعات والابتكارات إلى الحضارات الأخرى التي شكلت الحضارة العالمية.

منهجية البحث

تم اعتماد المنهج التاريخي المقارن والمستند إلى الحقائق والاكتشافات العلمية التي وثقت مراحل تطور دبلوماسية العلم بوصفها أداة لصيقة للتطور العلمي في بلاد الرافدين، كما وتم اعتماد المنهج التحليلي والاستكشافي المقارن لغرض المقارنة والمقاربة في وصف الحقيقة العلمية المستخدمة لتوثيق العلاقات الدبلوماسية.

هيكلية البحث

لتحقيق فرضية الدراسة فقد تم تقسيم البحث إلى مقدمة وخاتمة تتضمن استنتاجات، وثلاثة مباحث:

- المبحث الأول: حضارة بلاد الرافدين (Mesopotamia)، مهد الدبلوماسية والعلم والتكنولوجيا والابتكار.

– المطلب الأول: الجذور التاريخية للدبلوماسية في حضارة بلاد الرافدين (3500 ق.م.).

– المطلب الثاني: الجذور التاريخية للعلوم والتكنولوجيا والابتكار في بلاد الرافدين (3500 ق. م.).

- المبحث الثاني: اثر اختراعات وابتكارات وعلوم ومعارف بلاد الرافدين في الحضارة الإنسانية.

– المطلب الأول: اثر اختراع الكتابة في بلاد الرافدين في الحضارة الإنسانية (3500 ق.م.).

– المطلب الثاني: اثر تدوين وكتابة التاريخ في بلاد الرافدين على الحضارة الإنسانية (3000 ق.م.).

– المطلب الثالث: اثر علوم ومعارف بلاد الرافدين في الحضارة الإنسانية (4000 ق.م.).

- المبحث الثالث: دبلوماسية العلم والتكنولوجيا والابتكار في بلاد الرافدين وأثرها في الحضارة العالمية.

– المطلب الأول: دبلوماسية العلم والتكنولوجيا والابتكار في بلاد الرافدين وأثرها في الحضارة المصرية.

– المطلب الثاني: دبلوماسية العلم والتكنولوجيا والابتكار في بلاد الرافدين وأثرها في الحضارة الإغريقية

– المطلب الثالث: دبلوماسية العلم والتكنولوجيا والابتكار في وادي الرافدين وأثرها في الحضارة الرومانية.

المبحث الأول: حضارة بلاد الرافدين، مهد الدبلوماسية والعلم والتكنولوجيا والابتكار

إن أهم أسس الحضارة هي المدينة والتوثيق أي الكتابة، فالمدينة تعني وجود تجمع سكاني كبير يطيع سلطة حاكم يفرض القانون ويدافع عن المدينة بجيش محترف وشديد التنظيم مع وجود قضاء ومؤسسات دينية، وأما التوثيق فهو قابلية الإنسان على التسجيل كمرجع للمستقبل مثل، عقود التجارة والزواج، والقوانين، والرسائل والأدب، والعلوم، والفنون، وغيره[2]، فكل شيء بدء في وادي الرافدين قبل (6000 سنة قبل الميلاد)، القانون المدني الأول، وإقامة العدل، والتنظيم الاجتماعي والسياسي، والتخطيط الحضري وفن العمارة، والسجل الأول للملكية، والحوار مع الآلهة، واختراع الكتابة، مظاهر شكلت أسس الحضارة، ودونها يستحيل أن نتصور كيف يكون عالمنا اليوم، فكان للسومريين والأكاديين تأثيراً حاسما على العالم (Lorenci, 2013)، ويعد السومريون مؤسسي حضارة وادي الرافدين، إذ قاموا باختراع الحضارة بين (4300 و 3500 سنة ق.م) في جنوب العراق، وقد امتازت حضارتهم بجميع الميزات الحضارية الحديثة وتميزوا بشغفهم للمعرفة، وأقاموا علاقات تجارية مع مناطق بعيدة جدا، بعضها في قارات أخرى، لذا لم تكن الحضارة السومرية أول حضارة فقط، بل كانت معجزة في تاريخ البشرية، فالفرق الذي أحدثته في الحياة البشرية كان هائلا وتأثيرها في الحضارات الأخرى كان كبيرا[3].

[2] جميل، ز. خ. (29 يناير، 2015). الأصول السومرية للحضارة المصرية. القدس العربي. مقتبس من https://www.alquds.co.uk.

[3] جميل، ز. خ. (29 يناير، 2015). الأصول السومرية للحضارة المصرية. القدس العربي. مقتبس من https://www.alquds.co.uk.

وقد قامت على ارض الميسوبوتاميا حضارات (سومر وأكد وبابل وأشور)، ويعد علماء الغرب الآركيولوجيين الحضارة السومرية أقدم حضارة متمدّنة على وجه الأرض في العهود القديمة، التي ساهمت في أغناء الحضارات الأخرى بكل ما تحتاجه من معالم التمدّن والتطوّر ويؤكدون أن هناك ترابط بين الحضارة السومرية وبين التطور الحاصل في الحضارات الأخرى، إذ أن الكتابة والإحداث والعلوم والابتكارات التي ذكرت في المدونات والألواح الطينية السومرية شكلت مصدرا حضاريا وثقافيا وعلميا وروحيا واجتماعيا للحضارات الأخرى، الأكدية والآشورية والبابلية والمصرية واليونانية والهندية ولأجيال وأجيال من بعدهم[4].

المطلب الأول: الجذور التاريخية للدبلوماسية في حضارة بلاد الرافدين (3500 ق.م).

أن الدبلوماسية من حيث المفهوم تعد ظاهرة ملازمة للاستقرار الإنساني لانها جاءت لتلبية رغبات وحاجات قامت على فلسفة تنظيمية معينة تختلف من مجتمع إلى أخر، فكانت مرحلة استقرار الإنسان في ظل جماعات بشرية لها الأثر في بلورة ألأفكار، والتصورات، والمعتقدات، وأنماط المعيشة، واختلافها من جماعة بشرية لأخرى، ومن منطقة لأخرى، ومن فترة تاريخية لأخرى، بحيث كان هذا الاستقرار يهدف إلى تلبية احتياجات آنية أو الاستعداد لمواجهة أمور مستقبلية بين تلك المجتمعات، وقد عثر على قرائن وآثار تعود إلى ما قبل (3500 ق.م)، تمثلت في ألواح طينية تعود إلى حضارة بلاد الرافدين، وآثار في الصين، والهند، والإغريق، والرومان تدل على وجود ممارسات دبلوماسية، فقد أكدت وجود إشكال لعلاقات ودية وسلمية ذات طبيعة دبلوماسية تتعلق بإعلان السلم أو الحرب أو عقد الصلح[5] ، لذا فان الدبلوماسية من حيث المصطلح بمعنى Diploma في الحضارة اليونانية في القرن التاسع قبل الميلاد قد جاء متأخرا بالآلاف السنين عن الدبلوماسية من حيث المفهوم والممارسة.

يوجد ترابط وثيق بين الدبلوماسية والحضارة، ويعرفها كثير من المختصين بالشؤون الدبلوماسية على أنها التفاوض والحوار والتمثيل بين الدول، ونظرا لأهمية العلاقات التي تقيمها الدول فيما بينها، وحاجتها لمعالجة مشاكلها، ورغبتها في تسوية خلافاتها، كل هذا كان يقتضي التفاوض والتشاور بينها من آن لآخر لعقد اتفاقات ومعاهدات لتنظيم تلك المسائل[6]، وبما أن الكيانات تطورت مع تطور المجتمع البشري الذي عرف ظهور حضارات مختلفة منذ القدم وصلت إلى أوج قوتها وعظمتها ثم انهارت لتظهر حضارات أخرى مكانها متطورة أكثر حضاريا وأكثر اتساعاً جغرافياً ومعرفةً، ونتيجة لهذا الاحتكاك اليومي فيما بينها أو سعي طرف للهيمنة على طرف أخر برزت "الدبلوماسية"، كوسيلة للاتصال والتفاهم بين تلك الكيانات السياسية والاجتماعية[7]، إذن فالدبلوماسية هي فن إدارة العلاقات بين الدول، والدول عبارة عن مجموعة من البشر بينهم اتصال وتفاعل وعلاقات مختلفة، والمجتمع الراقي هو المجتمع الذي يتعامل إفراده مع

---

[4] المقدسي، ص. السومريون وانجازاتهم الحضارية والعلمية. مقتبس من http://www.ahewar.org/debat/show.art.asp?aid=366578&r=0

[5] بوروبي، عبد اللطيف. (2017) الدبلوماسية و التفاوض، ص 9.

[6] ابو هيف، ع. ص. (1995). القانون الدولي العام (ط. 1).الإسكندرية، مصر: منشأة المعارف، ص 10.

[7] العجرمي، م. ع. (2011). الدبلوماسية: النظرية والممارسة. مقتبس من https://www.politics-dz.com. ص 22.

الفوادي، ث. ط. ف. (2020). الجذور التاريخية لدبلوماسية العلم والتكنولوجيا والابتكار في بلاد الرافدين وأثرها في الحضارة العالمية. الدراسات العربية الأوراسية، ١٠، ص ص ٦٦-١٠٥.

بعضهم بأسلوب حضاري وفق أصول وآداب وسلوكيات معينة، كما ويطبقون هذا الأسلوب في تعاملهم مع المجتمعات الأخرى، وان هذه الآداب والسلوكيات تندرج ضمن الحضارة المميزة لكل مجتمع وتميزه عن غيره، وتنعكس خصائصها على أفراد هذا المجتمع ومن ضمنهم مهنة الدبلوماسي، لذلك يُعرف الدبلوماسي بأنه مبعوث حضارة لدى حضارة[8].

وقد اختلف الباحثون في الشؤون الدبلوماسية في تحديد نشأة الدبلوماسية، فمنهم من يرى أن مفهوم الدبلوماسية توطد مع ولادة أول بعثة دبلوماسية دائمة وتطور مع تطور الدولة القومية، حيث بدأ ولأول مرة استخدام مصطلح (دبلوماسية) في القرن الثامن عشر وخاصة مع مؤتمر فيينا لعام 1815 وتوسع المفهوم في حينه ليشمل تسيير العلاقات السياسية ما بين الدول وإدارتها بكل ما يتعلق بها[9]، بينما ترى فئة أخرى أنها ظهرت مع أول تبادل قام به الكرسي البابوي في القرن الثالث عشر، وفئة أخرى ترى أن تاريخ الدبلوماسية بدء مع نظام العلاقات التي قامت بين القبائل والعشائر والشعوب إي المجتمعات القبلية، وقد حصر بعضهم الدبلوماسية بمجتمعات ومراحل معينة وأنكروا ممارستها في مجتمعات أخرى. فقد ارجع كورنيليوس بلاغا (Cornelius Blaga) الدبلوماسية إلى الكرسي البابوي، ودبلوماسية المدن الايطالية وخصوصا البندقية. بينما يرى موات (Mawat) أن الدبلوماسية بدأت عام 1451 في نهاية حروب المائة عام. أما هلِ (Hill) يرى أنها بدأت مع القرن العشرين أي مع مرحلة الدبلوماسية العلنية[10]، لكن الشواهد والأدلة كثيرة وحاضرة على أن أول ممارسات للدبلوماسية كانت في حضارة وادي الرافدين، إذ يقول دوليل (Delisle) في معرض طرحه لآثار الدبلوماسية "ثمة أثارا للممارسة الدبلوماسية وجدت على الألواح الأشورية، وفي التاريخ الصيني والهندي والإغريقي والروماني مما يثبت وجود علاقات ذات طابع دولي تأسست بين الشعوب القديمة منذ (3500 -3000 ق.م)" وكانت الدبلوماسية والعلاقات الدولية أكثر نشاطا في ذلك التاريخ في منطقة ارض بلاد الرافدين وتمتد إلى وادي النيل[11]. كما أن الآثار التي وجدت في بلاد الرافدين بيّنت وجود علاقات دولية سلمية بين المدن والممالك، حيث عثر في العراق في منطقة (كلده) على آثار يرجع تاريخها إلى سنة (3000 ق. م)، تحوي نقوشا مسمارية تفيد قيام علاقات سلمية واتفاق بين مدينتي (لكش) وملكها (يني كرزو) و(أوما) وملكها (شارا)، بتوسط ملك (كيش) وهو (ساتزان) وكان الاتفاق حول تخطيط الحدود بين الدولتين حيث جعلوا قناة (كرزو)هي الحد الفاصل بينهما، وبذلك تكون حضارات سومر وأكد وأشور وبابل قد عرفوا الدبلوماسية في العصور القديمة قبل غيرهم[12].

[8] الموسوعة الجزائرية للدراسات السياسة والإستراتيجية، ماهية الدبلوماسية، مفهومها، المفاهيم المرتبطة بها، تطورها التاريخي ووظائفها. مقتبس من https://www.politics-dz.com

[9] العجرمي، م. ع. (2011). الدبلوماسية: النظرية والممارسة. مقتبس من https://www.politics-dz.com. ص ص 2-3.

[10] بوروبي، عبد اللطيف. (2017) الدبلوماسية و التفاوض، ص 57.

[11] الشامي، ع. ح. (2007). الدبلوماسية) ط3(.عمان، الأردن: دار الثقافة للنشر، ص 61.

[12] رحيمة، ل. (2014). سيادة الدولة وحقها في مباشرة التمثيل الدبلوماسي (أطروحة دكتوراه في القانون الدولي). مقتبس من http://dspace.univ-tlemcen.dz/bitstream/112/7228/1/ledermecherahima.pdf

أيضا عُثر على نص مثير للاهتمام ضمن الحفريات المحفوظة في أرشيفات ماري، ويروي النص بإيجاز حادثة دبلوماسية تُعد واحدة من أولى الأحداث الدبلوماسية في التاريخ، وقد وقعت بين سفير مملكة ماري، ومسؤول تشريفات قصر حمورابي (1750 - 1792 ق.م)، ملك بابل، وتقع مملكة ماري القديمة (Mari) في أعالي نهر الفرات داخل الحدود السورية، ولغتهم السومرية والبابلية، وقد اكتسبت أهمية سياسية واقتصاده بحكم موقعها الجغرافي المميز في نقطة الاتصال ما بين بلاد الرافدين وبلاد سورية، وكانت طرق القوافل التجارية والحملات العسكرية تمر من خلالها، لذا قد قضت زمنا طويلا تحت سيطرة السومريين والاكديين والأشوريين والبابليين، حيث تذكر المدونات التاريخية أن حمورابي ملك بابل وقع حلفا مع زمري ليم ضد حلف عيلام واشنونا، واتسع مدى العلاقات الدبلوماسية بينها ولم تقتصر على تبادل السائل بل تبادل الهدايا الشخصية بين وتبادل السفراء والمبعوثين فكان في بلاط كل منهما مبعوث للطرف الأخر وكانوا موظفين ذوي مكانة مهمة يشمل عملهم نقل الإخبار بين البلاطين وتنسيق المفاوضات وكتابة الأوضاع العسكرية والسياسية في كلا المملكتين[13].

مفاد الحادثة الدبلوماسية، أن علاقات التعاون والتحالف سادت بين بابل وملكها حمورابي ومملكة ماري وحاكمها زمري ليم، وان سفير مملكة ماري واسمه (لاوم) الذي كان مقيما في البلاط البابلي تم دعوته لحضور حفل استقبال أقامه حمورابي لممثلي الممالك ماري، ويامخد، وهي مملكة عمورية عصمتها حلب (سوريا)، وكان البروتوكول يقتضي في حال المثول أمام الملك حمورابي يجب إن يرتدي السفراء ملابس محددة ومخصصة لهذا الغرض يتم تزويدهم بها من قبل مسؤول البروتوكول في القصر، وتشير الواقعة إلى أن طاقم سفارة يامخد قد استلموا الملابس والملحقات للمثول أمام حمورابي، أما طاقم سفارة ماري لم يستلموا الملابس أو بوصف أكثر دقة أن السفير (لاوم) واثنين من معاونيه قد تلقوا الملابس وكل ما هو ضروري لحفل الاستقبال لكن بقية أعضاء السفارة لم يتلقوا الملابس، وبذلك يكون تمثيلهم يقتصر على ثلاثة أشخاص دون حاملي الهدايا وآخرون الأمر الذي سيكون بمثابة عارا على مملكة ماري فامتنعوا عن التقدم والدخول للحفل وطالبوا بتوضيح فكان عذر مسؤول البروتوكول أن الحفل مخصص فقط للمناصب العليا في السفارة، لكن في المقابل أن طاقم سفارة يامخد كانوا يرتدون ملابسهم بالكامل، على اثر ذلك يرفض سفير ماري ما يحصل ويعده إهانة وسوء نية تجاه مملكة ماري فتحصل مشادة بين لاوم ومسؤولي القصر تنتهي بالعراك فيغادر ممثلي سفارة ماري وقد تعرضوا للضرب والاهانة، فيما بعد يصل الأمر إلى إسماع حمورابي فيأمر بإرسال الملابس واستقبال طاقم السفارة بأكمله، وبعد حضورهم للقصر يخبرهم حمورابي بأنهم قد تسببوا بالمتاعب وضايقوا من في القصر، وانه فقط من يحدد رؤية من يريد ومتى ما يريد، وربما يكون تصرف حمورابي مع سفير ماري نابع من إدراكه أن ماري باتت تشكل أكثر خطورة من كونها حليفا فلبث يبحث عن ذرائع لقطع العلاقات مع زمري ليم ملك ماري. في نهاية المطاف يتحمل سفير ماري هذا الإساءة والتقليل من الشأن

[13] معضد، ع. ه. (2016). التاريخ السياسي لمملكة ماري القديمة. مجلة التراث العلمي العربي، 4 ، ص ص 303- 309.

الفوادي، ث. ط. ف. (2020). الجذور التاريخية لدبلوماسية العلم والتكنولوجيا والابتكار في بلاد الرافدين وأثرها في الحضارة العالمية. الدراسات العربية الأوراسية، ١٠، ص ص ٦٦-١٠٥.

ويكتب على الفور إلى ملكه زمري ليم يروي الحادثة بإيجاز، فيقطع الأخير علاقاته مع بابل ويتحالف مع أعداء سابقين له للهجوم على حمورابي(La Diplomacia Babilónica, 2017).

المطلب الثاني: الجذور التاريخية للعلوم والتكنولوجيا والابتكار في بلاد الرافدين (3500 ق م).

أن الوعي والتفكير العقلي والنشاط الروحي لم يتوقف لحظة واحدة طوال تاريخ الإنسان، فمنذ أقدم عصور التاريخ البشري كان الإنسان يستعين بأدوات تساعده في عمله وهي أداوت تستحق اسم تكنولوجيا، فتهذيب قطعة من الحجر أو المعدن وربطها بقطعة خشبية من جذع الشجرة واستخدامها فأسا لقطع الأشجار أو تقليب الأرض نوع من التكنولوجيا، واستخدم النار للطهي أو التدفئة أو في صهر المعادن كان اكتشافا تكنولوجيا عظيما (زكريا، 2018، ص 41)، أذن العلم ظاهرة قديمة وحديثة في أن واحد، انه قديم إذا ما تم النظر إليه بأوسع واشمل معانيه، أي انه كل محاولة يبذلها العقل البشري لفهم نفسه والعالم المحيط به، ومن الصعب تحديد نقطة بداية ذاك النوع من النشاط العلمي الذي نطلق عليه اسم العلم، إذ أن كل سلوك كان يقوم به الإنسان منذ عهوده البدائية قد أسهم بغير شك في تهذيب تفكيره وصقله على نحو يساعد على ظهور العلم في مرحلة لاحقة، كما وان تجارب البشرية قد أكسبتها خبرات أدت إلى تراكمات في المدى الطويل إلى ظهور بوادر أولى للتفكير العلمي، لكن يمكن تحديد البدايات من خلال وثائق لحضارات قديمة تعيينا على معرفة تاريخها سواء اتخذت تلك الوثائق شكل كتابات مدونة أو آثار مادية تتيح الاستنتاج، وكما نعلم فان أقدم الحضارات الإنسانية قد ظهرت منذ ألاف السنين في بلاد الرافدين والنيل والى الشرق منها في انهار الهند والصين ودلت تلك الآثار التي خلفتها على أنها حضارات ناضجة كل النضج بالقياس إلى عصرها ((زكريا، 2018، ص ص 85-86).

تجدر الإشارة إلى أن الإنسان عندما حاول دراسة ومعرفة مصادر التكنولوجيا، ولم يستطع إيجاد الخيط الرابط ارتد إلى تفسيرات تضع هذه الجذور خارج إطارها البشري وبسبب النقص في المعرفة المتواصلة فان أول من تكلم عن تاريخ التكنولوجيا أرجعها إلى الهبات الإلهية ثم جاء بعدها بدور الطبيعة الكبير، ولقد كان الإغريق ينسبون شغل المعادن إلى احد ألهتهم، ايفايستوس Hephaestus والعبريون الى رجل من ذرية قايين هو توبالقايين، وبالنسبة لميتولوجيا اليونيانية فانها الاغرز بهذا الشأن فان كلمة "تكني" Techne توحي لهوميروس بفكرة "هبة من السماء" ، اما ب. ميشيل فيرى أن العلم قبل القرن السادس قبل الميلاد لم يكن يُمييز عن التكنولوجيا وان التكنولوجيا "شئ الهي". وكان الآلهان عند اليونان أثينا وايفايستوس، يمثلان النظام التقني وكل النشاطات التقنية في الأزمنة القديمة، وقد قاما بكل هذه الابتكارات التكنولوجية، وان أثينا هي ربة النسيج، وان ايفايستوس الإله التقني بامتياز الذي تصور الشغل بالمعدن بواسطة النار[14] في المقابل نجد ان بين الألف الثامن ونهاية الألف الثالث ظهرت أولى الحضارات التقنية الكبيرة في بلاد الرافدين ومصر، ومن ثم اخذ الانتقال التكنولوجي والتطور يطال المناطق المجاورة رويدا رويدا

[14] جيل، ب. (1996). موسوعة تاريخ التكنولوجيا (ط.1) (ترجمة هيثم اللمُع). بيروت، لبنان: المؤسسة الجامعية للنشر. ص ص 111-113.

الفوادي، ث. ط. ف. (2020). الجذور التاريخية لدبلوماسية العلم والتكنولوجيا والابتكار في بلاد الرافدين وأثرها في الحضارة العالمية. الدراسات العربية الأوراسية، ١٠، ص ص ٦٦-١٠٥.

في فجر الألف السادس قبل الميلاد، وفي نهاية الإلف الرابع استفادت كل المناطق وحتى مصر من الحضارة التقنية الفريدة لبلاد الرافدين وكان اختلاط الشعوب يسهل عملية انتقال تلك التقنيات[15].

أن سومر أول من وضع اللبنة الأولى للتقدم العلمي والتكنولوجي في المنطقة، وتطورت العلوم والتكنولوجيا في بلاد ما بين النهرين خلال فترة أوروك (4100-2900 قبل الميلاد)، فقد كانوا أول من مارس الفرضية العلمية، وانخرطوا في الابتكار التكنولوجي، واخترعوا الكلمة المكتوبة، والرياضيات المتقدمة، وعلم الفلك، وعلم التنجيم، وحتى صمموا مفهوم الوقت نفسه، وان بعض أهم اختراعاتهم هي العجلة، الشراع، الكتابة، القوس، أدوات الري والزراعة، مدن، خرائط، الرياضيات، الوقت والساعات، علم الفلك والتنجيم، الأدوية الطبية والجراحة (Mark, 2019). وعلى الرغم من كل هذه الابتكارات والاختراعات العلمية فقد اعترض بعض العلماء على استخدام مصطلحات "العلم" أو "الطريقة العلمية" في الإشارة إلى الاختراعات والابتكارات السومرية في بلاد ما بين النهرين واعزين السبب إلى أن الجانب الديني لعب دوراً مهمًا في حياة الناس واعتبرت إرادة الآلهة العامل الأخير والوحيد في كيفية عمل الكون والحياة على الأرض، لكننا نجد أن مصطلح "الطريقة العلمية" هو المصطلح الأكثر دقة لكيفية تحرك الناس في بلاد ما بين النهرين لأنهم مع الحفاظ على مفهوم الحياة الإلهية، سمحوا لأنفسهم بتخيل عالم يعمل وفقاً لقوانين طبيعية معينة، وفي محاولة لمعرفة كيف، وضعوا الأساس للبحث العلمي الذي تم تطويره في وقت لاحق من قبل المفكرين المصريين واليونانيين ثم استمر لغاية يومنا هذا. (Mark, 2019).

كان العقل السومري مبدعا حيث اخترع دولاب الفخار عام (4000 ق. م)، والعجلة عام (3000 ق.م)، وقد اظهر عبقريات مدهشة في الاختراع والابتكار إذ من خلال اختراعه المحراث النصف الميكانيكي عام (4000 ق. م)، احدث ثورة زراعية في أنتاج الحبوب ثم رافقت تلك الثورة الزراعية ثورة صناعية في مجال الصناعات الحرفية البسيطة مثل الفخار الملون المتقن الصنع وإنتاج وتصنيع الألبان وتسويقها واستخدام الموازين والمكاييل وقد ساهمت تلك الاختراعات والابتكارات في تطور علاقات الحضارة السومرية مع الحضارات الأخرى المجاورة حيث انتقلت العلوم والفنون السومرية إلى الشعوب المجاورة بواسطة تاجر العربة الذي كان يتبادل معهم المنتجات والمعارف والثقافات[16] ، فقد نشرت المجلة العلمية (Nature) أدلة أشارت إلى أن عملية تخمير الشعير كانت تمارس لأول مرة في سومر بين 4000 و 3000 قبل الميلاد. كما وقد عثر على مصنع لتصنيع البيرة في إيران عمره (6000) سنة (Ann Wendy Blog, 2013)، وجاءت عملية تخمير البيرة نتيجة للممارسات الزراعية السومرية حيث يُعتقد أن البيرة قد تم اكتشافها من خلال الحبوب المخمرة (Mark, 2019).

وهكذا استطاعت حضارات بلاد ما بين النهرين القديمة أن تحقق العديد من التطورات المهمة في مجالات العلوم والتكنولوجيا، وتركت حقائق مثيرة للاهتمام حول تكنولوجيا بلاد الرافدين، حيث

[15] جيل، ب. (1996). موسوعة تاريخ التكنولوجيا (ط.1) (ترجمة هيثم اللمُع). بيروت، لبنان: المؤسسة الجامعية للنشر. ص ص 158-228.
[16] الشمري، ح. (2013). سرقة حضارة الطين والحجر(ط.1). بغداد،العراق: دار ومكتبة عدنان للنشر. ص 21.

تعد جدران بابل واحدة من عجائب الدنيا السبع القديمة في العالم، ويمكن القول أن سكان بلاد ما بين النهرين ابتكروا الآلة البسيطة المسماة برغي أرخميدس، الذي كان يساعد على رفع المياه إلى المرتفعات اللازمة للنباتات في حدائق بابل المعلقة الشهير، كما طور الأشوريون إعمالا زجاجية وصنعوا زجاجا للفن لكي يستمر عمرا أطول، وانشئوا قنوات ري مختلفة لجلب المياه إلى نينوى عاصمة الإمبراطورية الأشورية (Ancient Mesopotamia).

كما عرفت حضارة بلاد الرافدين علوم الكيمياء منذ أقدم العصور، إذ أكدت الحفريات الأثرية أن العراقيين القدماء عرفوا استخدام النار، وابتكار صناعة الفخار الملون، كما عرفوا العمليات الكيميائية كإذابة وصب المعادن كالنحاس والفضة والذهب والحديد، وتمكنوا من صناعة الزجاج والتفنن بالتزجيج وإرساله إلى ملوك مصر والحيثيين، وفي مطلع الألف الأول ق.م، تمكنوا من كربنة الحديد واستخدامه في صناعة الأسلحة، ويعتقد العالم كامبل تومبسون بان العراقيين القدماء ابتكروا الثقاب من الكبريت، واستخرجوا مركبات عديدة مثل ملح المونيا والزئبق والرصاص الأبيض، وإنهم صنعوا أجهزة التقطير حوالي 3500 ق.م، إذ عثر على جهاز متطور للتقطير في تل تبه كاوره (قرب الموصل،) ووصفات بابلية لتصنيع العطور، واشتهروا بالصناعات الغذائية مثل مشقات الألبان، وحفظ الأطعمة بالتمليح والخزن في الجلود بعد إضافة التوابل، أو التجفيف بالشمس، وعرفوا الدباغة والنسيج والألوان وغيرها من العلوم والمعارف[17].

وبهذا الشكل كان لدى سكان وادي الرافدين ميل كبير للاختراع والابتكار كما يعبر عنه صموئيل كريمر بقوله "كان لدى شعب سومر ميل غير عادي للاختراع التكنولوجي، وكان هناك شئ في الهوية السومرية دفعهم إلى الحلم الكبير والتفكير ببراعة واضعين أمامهم ضغوطا كبيرة نحو الطموح والنجاة والأفضلية والهيبة والشرف"(Kiger, 2019)، والقدرة على تطوير تلك الاختراعات وتطبيقها على نطاق واسع، حيث استطاعوا إنتاج سلع ضخمة مثل المنسوجات والفخار والاتجار بها مع أقوام آخرين، كما استطاعوا اختراع المحراث وهي تقنية حيوية في الزراعة حتى أنهم أصدروا دليلا تضمن تعليمات مفصلة للمزارعين حول كيفية استخدام أنواع مختلفة من المحاريث، كما وإنهم كانوا أول من أقام مصانع نسج الأقمشة والملابس على نطاق واسع، وبذا يمكننا أن نقول أن حضارة وادي الرافدين في بعض النواحي كانت مكافئة لما نطلق عليه في عصرنا وادي السليكون (Kiger, 2019).

المبحث الثاني: اثر اختراعات وابتكارات وعلوم ومعارف بلاد الرافدين في الحضارة الإنسانية

لقد أذهلت حضارات بلاد ما بين النهرين العالم المعاصر بعظمتها وجمالها وغناها، وكان لها الأثر الكبير على الثقافة العالمية اجمع إلى جانب الحضارات المصرية والهندية والصينية (ماتفيف، & سازونوف، 1991، ص 7)، إذ يقول الباحث بول كريواتشيك (Paul Kriwaczek) أن إسهامات حضارة بلاد الرافدين لها أهمية عظيمة لان معظم التكنولوجيا الأساسية التي دعمت الحياة البشرية حتى بدأ الإنتاج الصناعي في السيطرة على عالمنا المعاصر تم ابتكارها لأول مرة في ذاك الجزء

[17] الراوي، ف. ن. (1985). حضارة العراق، الجزء الثاني. بغداد، العراق: دار الحرية للطباعة. ص ص 339-352.

الفوادي، ث. ط. ف. (2020). الجذور التاريخية لدبلوماسية العلم والتكنولوجيا والابتكار في بلاد الرافدين وأثرها في الحضارة العالمية. الدراسات العربية الأوراسية، ١٠، ص ص ٦٦-١٠٥.

من العالم (Mark, 2019)، وأيضا يذكر صموئيل كريمر في كتابه "من ألواح سومر"، أن المدارس السومرية أصبحت مركزا للعلم والثقافة حيث كان الباحث يتزود بجميع فروع المعرفة في زمانه كاللاهوت والمعرفة الخاصة بالنبات والحيوان والمعادن والمعارف الجغرافية والرياضية والنحو واللغة[18] .

المطلب الأول: اثر اختراع الكتابة في بلاد الرافدين على الحضارة الإنسانية (3500 ق.م.)

أن الكتابة هي إحدى واهم المنجزات الجوهرية والثقافية للإنسان بالرغم من أنها تبدو للوهلة الأولى تلعب دورا تقنيا في تاريخ الثقافة فقط إلا انه بدونها لم يكن لتتوفر إمكانية ذلك التطور العظيم للإنسانية من العصر الحجري إلى العصر الذري الذي جعل العالم يبدو كما هو عليه ألان، ويتفق المختصون على أن سكان ما بين النهرين هم من كتب أقدم مدونة للكتابة المسمارية، وقد أسس السومريون المدارس وعلموا الطلاب الكتابة من خلال نصوص توضع أمامهم ويستعرض المعلم النص فينسخه الطالب على ألواح الطين (ماتفيف، & سازونوف، 1991، ص ص 16-19). وأن اختراع الكتابة المسمارية في حدود (3600 ق.م)، وإنشاء المدارس يعد ابرز ما أسهمت به الحضارة السومرية في تقدم الحضارة الإنسانية، وقد كشفت أول وثائق مكتوبة في مدينة اسمها "ارك" - وهي مدينة ورد اسمها في التوراة، وهي ألان قريبة من مدينة السماوة العراقية، باسم "الوركاء" واسمها السومري القديم "أوروك"- وتتألف هذه الوثائق من أكثر من ألف لوح صغير من الطين منقوش بالكتابة الصورية[19]، تحتوي على مذكرات اقتصادية وإدارية، وجداول دونت لغرض الدرس والتمرين، أي أن بعض الكتبة في زمن موغل في القدم كانوا يفكرون بعقلية وطرق التعليم والتدريس.

وقد شكلت اللغتان السومرية والاكدية (البابلية –الأشورية)، لغتا العراق القديم، وعاشتا جنبا إلى جنب طوال الألف الثالث قبل الميلاد، في التخاطب والتدوين، وقد ترك الاحتكاك بين اللغتين أثارا سومرية في اللغة الاكدية من حيث الجانب الصوتي واللغوي والقواعد، وفي أواسط الألف الثالث ق.م، بدأ تدوين اللغة الاكدية بالخط المسماري وأصبحت النصوص المسمارية أما سومرية أو أكدية أو مدونة بكلتا اللغتين، وبذاك أصبحت اللغة السومرية أقدم لغة بشرية مدونة معروفة حتى ألان في التاريخ البشري إذ أنها سبقت بمئات السنين تاريخ أقدم النصوص الهيروغليفية والكريتية والابلية والاوغاريتية وغيرها من اللغات[20].

ويؤكد علماء الآثار أن الكتابة المسمارية هي الأقدم من جميع الكتابات في العالم القديم وكان لها الفضل في تعلم الشعوب الأخرى الأبجدية السومرية لكونها شكلت الأساس الذي انطلقت منه الأبجديات الأخرى الأكادية والآشورية والفرعونية الهيروغليفية، والأوغاريتية والفنيقية والعربية واليونانية واللاتينية[21]. وأن الدوافع الاقتصادية والإدارية والتجارية دفعت السومريون إلى اختراع

---

[18] كريمر، ص.(د. ت.). من ألواح سومر(ترجمة طه باقر). بغداد، العراق: مكتبة المثنى. ص 45.

[19] كريمر، ص.(د. ت.). من ألواح سومر(ترجمة طه باقر). بغداد، العراق: مكتبة المثنى. ص 43.

[20] 27. سليمان، ع. (1985). موسوعة حضارة العراق (ج. 1). بغداد، العراق: دار الحرية للطباعة. ص ص3-7.

[21] المقدسي، ص. السومريون وانجازاتهم الحضارية والعلمية. مقتبس من http://www.ahewar.org/debat/show.art.asp?aid=366578&r=0

الكتابة في أواخر ألاف الرابع ق.م، وعلى ما يرجح إن السومريين وفقوا إلى فكرة الكتابة على ألواح الطين وكانت أولى محاولاتهم في الكتابة ساذجة فجة وبطريقة رسم الصور ولهذا لم يكن استعمالها إلا في ابسط أنواع التأشيرات الإدارية بيد إن الكتبة والمدرسين السومريين استطاعوا بالتدريج أن يطورا طريقة كتابتهم بحيث أصبح بالإمكان التعبير من خلالها عن اعقد الكتابات التاريخية والأدبية بلا صعوبة[22].

كما أنه مع اختراع السومريون للقلم والكتابة تطور الحساب ومعه الرياضيات ومن ثمّ ترتيب الرموز المعينة لتمثيل الأعداد ولتسهيل المعاملات التجارية الصعبة التي كانت ضرورية في مجال الزراعة والري، وبناء الدولة وتنظيم الموظفين والجيش، وتقسيم الأراضي، وتعداد السكان، والمعاملات التجارية الأخرى بين الناس. وأدى ذلك أيضا إلى تدوين السجلات الرسمية وأعمال الملوك والأمراء، وكذلك علاقتهم بغيرهم من الحكام، وإدارة شؤون الناس العامة كالأحوال الشخصية والمراسلات والآداب والأساطير فضلا عن الشؤون الدينية والطقسية والعبادات، فضلا أنهم كانوا أول من عرف تخطيط المدن مثل أريدو وأور والوركاء ونيبور ولارسا ولجش وكولاب وكيش وإيزين، وخططوا شوارعها وقنوات الصرف الصحي، وعرفوا السيطرة على الفيضانات وإنشاء السدود وحفر قنوات المياه فكان لتلك المعارف السومرية الأثر الايجابي في تطور شعوب وأمم كثيرة وتحولها إلى إمبراطوريات ضخمة كالأكاديين والآشوريين والبابليين والهنود والصينيين وغيرهم [23].

أن انتشار واستخدام الكتابات السومرية واللغة الاكدية خارج حدود حضارات بلاد الرافدين يعد دليلا واضحا على مدى تأثر الحضارات الأخرى بالحضارة العراقية القديمة، فقد عثر على نصوص مسمارية في سوسا عاصمة الإمبراطورية العيلامية (إيران)، أشارت إلى أن بلاد عيلام استخدمت اللغة الاكدية والخط المسماري منذ (3500 قبل الميلاد)، يضاف إليه العثور على مئات النصوص المسمارية في منطقة كبدوكيا في أسيا الصغرى (الأناضول)، في الألف الثاني قبل الميلاد، كما واستخدمت اللغة الاكدية في أبرام الاتفاقيات والمعاهدات بين المدن والممالك السورية القديمة والدولة الأشورية، وأيضا استخدمت في المكاتبات الرسمية مع فراعنة مصر وتعد الرسائل الملكية المكتشفة في تل العمارنة (عاصمة الملك المصري اخناتون) أروع الأمثلة على مدى أهمية وانتشار اللغة الاكدية وخطها المسماري في بلدان الشرق الأدنى القديم فقد كانت المراسلات والرسائل بين ملوك الممالك السورية والدولة الحيثية والدولة الكيشية مع فرعون مصر تكتب بالخط المسماري العراقي واللغة الاكدية مما يشكل دليلا قاطعا بأنها كانت لغة التخاطب والدبلوماسية بين ملوك وحكام الدول في سومر وأكد وبابل وأشور(العراق القديم) وعيلام (إيران)، والأناضول (تركيا)، وسوريا، ومصر[24].

---

[22] كريمر، ص.(د. ت.). من ألواح سومر(ترجمة طه باقر). بغداد، العراق: مكتبة المثنى. ص 23.

[23] المقدسي، ص. السومريون وانجازاتهم الحضارية والعلمية. مقتبس من http://www.ahewar.org/debat/show.art.asp?aid=366578&r=0

[24] سليمان، ع. (1985). موسوعة حضارة العراق (ج. 1). بغداد، العراق: دار الحرية للطباعة. ص ص 292-293.

وعليه ما كان للفكر والبشرية أن تتطور بدون الكتابة دالة السومريين على الإنسانية فبدونها ما كانت لتوجد المدارس والطب والعلوم والأدب والفنون والبنوك وما كان للإنسان أن يعرف الذرة ولا تفاحة نيوتن أو الكهرباء والليزر والراديو والتلفزيون والسينما والمسرح أو يصل إلى القمر وكل منجزات العلم الحديث وما كنا نستطيع أن نقرأ أدب وكتابات شكسبير وتولستوي ودستويفسكي واراغون وكافكا وبيرون وايلوار وجارودي ونيرودا ولوركا وطاغور وبرناردشو وسارتر وامرؤ القيس والمتنبي والجواهري والكتب المقدسة, ولا توجد حضارة أسهمت بتقديم هذا الكم الهائل من السجلات المكتوبة والوثائق التي تخصها وتخص شعوب أخرى سبقتها أو جاورتها وعاصرتها وأغنت العلوم والفكر البشري ومسيرته المستمرة بمقدار ما فعلت حضارة بلاد الرافدين[25].

المطلب الثاني: اثر تدوين وكتابة التاريخ في بلاد الرافدين على الحضارة الإنسانية (3000 ق.م)

التاريخ علم يبحث في الوقائع والحوادث الماضية، وان التاريخ معمل تجارب العلم كما يعبر عنه ابن خلدون في مقدمته، "أنه خبر عن الاجتماع الإنساني الذي هو عمران العالم، وما يعرض لطبيعة ذلك العمران من الأحوال، مثل التوحش والتآنس، والعصبيات، وأصناف التقلبات للبشر بعضهم على بعض، وما ينشأ عن ذلك من الملك والدول ومراتبها، وما ينتحله البشر بأعمالهم ومساعيهم من الكسب والمعاش والعلوم والصنائع، وسائر ما يحدث في ذلك العمران بطبيعته من الأحوال"[26]، وقد قسّم المؤرخون تاريخ الإنسان إلى عصور وادوار مختلفة، فمثلا عصر ما قبل التاريخ (pre-History) يقصد به لغويا واصطلاحا العصور التي سبقت التاريخ أي التي مرت في تاريخ الإنسان قبل أن يهتدي إلى اختراع الكتابة والتدوين، والمتعارف عليه أن أقدم حضارة ظهرت في بلاد الرافدين في مطلع الألف الثالث قبل الميلاد، بينما لا تتعدى العصور التاريخية في اليونان ابعد من القرن التاسع أو الثامن قبل الميلاد، وفي أوربا الشمالية القرن الأول ق.م، وفي شمال أفريقيا مطلع الألف الأول ق.م.[27]

وعندما يتم البحث في أراء الباحثين والمؤرخين عن موضوع من هو أول من كتب التاريخ (History)، يذهب الكثيرون إلى أن الإغريق ومؤرخهم هيرودوتس الذي يسمى" أب التاريخ"، في حدود منتصف القرن الخامس قبل الميلاد، هم أصحاب الفضل في كتابة التاريخ وهذا فيه إجحاف كبير بحق حضارة وادي الرافدين لان واحدة من أهم انجازاتها الإنسانية والفكرية كانت سرد الأحداث التاريخية وتدوين التاريخ، إذ أن المدونات والمكتشفات الأثرية لآلاف الرقم الطينية باللغات العراقية القديمة، السومرية والاكدية (البابلية-الاشورية)، عكست أصالة الحس التاريخي والأمانة بنقل الأحداث والوقائع وتوثيقها، وتدوين الكثير من الانجازات الملكية والوقائع السياسية والاجتماعية، كما اتسمت تلك الوثائق التاريخية والكتابات العراقية القديمة بالموضوعية والواقعية والتاريخية وتدور أحداثها ما بين البشر، وقد سبقت الكتابات اليونانية بما يقارب (1500) عام،

[25] الشمري، ح. (2013). سرقة حضارة الطين والحجر(ط.1). بغداد،العراق: دار ومكتبة عدنان للنشر. ص 28.
[26] ابن خلدون، العلامة ولي الدين عبد الرحمن بن محمد. (2004). مقدمة ابن خلدون (ط 1). دمشق، سوريا: دار يعرب. ص60.
[27] باقر، ط. (2009). مقدمة في تأريخ الحضارات القديمة (ج 1، ط1). بغداد، العراق الورّاق للنشر. ص 184.

بينما كانت الكتابات الأسطورية والتاريخية اليونانية القديمة محور أحداثها تدور بين الإلهة أو بين البشر والإلهة والغرض منها للتسلية والترفيه والحكمة ويصب المؤلف أو الراوي خياله وذاته عليها، ويمزج الإبطال وقواهم الخارقة بالإلهة كالليازة والاوديسة لهيوميروس (الشاعر اليوناني) والانيازة لفريجيل الشاعر الروماني[28].

وتجدر الإشارة إلى أن بعض الباحثين يشكك بهيرودوتس وإعماله التاريخية، وأعزين السبب إلى انه استند في أعماله إلى معلومات متداولة، أو فسر كتبا اختفت فيما بعد، كما وانه كان يرتجل أشياءً، وقد زار بلدانا وذكر عنها خرافات كثيرة، ولم يكن يعرف اللغات الشرقية، وانه عاش في نهاية التاريخ القديم للشرق وكانت تفصله عن المراحل الأولى لتاريخ بلاد ما بين النهرين تقريبا (2500 عام)، لذا أتت كتاباته بأخطاء جسيمة انعكست على أعمال ظهرت بداية القرن التاسع عشر، وعليه فان أعماله ممكن أن تشكل مصدرا لدراسة الحقبة الأخيرة من التاريخ القديم للشرق فقط وليس أكثر[29]، ويذهب البعض الأخر إلى انه لعل هيرودوتس لم يصل إلى علمه شئ عن السومريين، وإذا كان قد وصل إلى علمه شيئا عنهم فقد اغفل عنه[30]، في المقابل إذا ما تفحصنا كلمة تاريخ فسنجد أنها ذات أصول عراقية قديمة إذ من خلال التأصيل الصحيح لمادة "أرخ" "يؤرخ" بمعنى "عين الزمن وحدده" فإنها وردت في نصوص الكتابات الاكدية بصيغة "أرخو" (Arhu) والتي تعني تحديد الزمن أو الشهر ومنها التاريخ، وهي مفردة سبقت تاريخ هيرودوتس بأكثر من ألف عام[31]، وقد وُجد أن مقطع (iti) او (itu) يعد علامة دالة للتأرخة تسبق أسماء الأشهر في اللغة السومرية وهو كمرادف لصيغة أرخو الاكدية، كما وان هناك معاني لصيغة أرخو وجدت في القواميس الأشورية (اللغة الاكدية) تعني "قمر جديد (أول الشهر)"، و تعني أيضا "الشهر"، والغرض منها تحديد الفترة الزمنية لتأرخة الحدث بالشهر القمري في النصوص الإدارية والاقتصادية والتاريخية، وتأتي عبارة أرخو تليها اسم الشهر المراد التوثيق به ومن ثم السنة وحتى اليوم في بعض الأحيان، فعلى سبيل المثال، (ina_lime…ina_arhu simanu uma1)، بمعنى في اليوم الأول من شهر سيمانو من سنة لمو.... وهذه إحدى طرق التقويم والتأرخة المتبعة في ما يسمى باللمو، وهي من الصيغ التاريخية المهمة للتقويم في العصر الأشوري بتسمية السنين بأسماء موظفي الدولة البارزين، سنة لكل موظف، وذلك بتقليد الملك منصب موظف الحولية في سنة حكمه الأولى، وبعد ذلك على سبيل المثال قائد الجيش، بعدها الموظف المشرف على الإعمال الخاصة بالري والقنوات وهكذا، أما بالنسبة لشهر "سيمانو" فهو الشهر الثالث من الأشهر الاكدية الاثنا عشر ويصادف شهر آيار[32].

فضلا عن أن الكم الهائل من المدونات المسمارية ذات القيمة التاريخية المهمة لما تحتويه من وثائق ومعلومات كانت المحدد الرئيسي للمسار التاريخي ومعنى كلمة تاريخ فقد ساعدت علماء

---

[28] حسين، أ. ا. (2015). الموضوعية في كتابة التاريخ بأسلوب الشخص الثالث عند العراقيين القدماء. مجلة أبحاث ميسان، (11) 21، ص ص 176-188.
[29] دياكوف ف.، كوفاليف، س. (د. ت.). الحضارات القديمة. (ترجمة نسيم واكيم اليازجي). (ج. 1،ط. 1). دمشق، سوريا: دار علاء الدين للنشر. ص 69.
[30] ديورانت، و. وا. (د. ت.). قصة الحضارة الشرق الأدنى (ترجمة محمد بدران) (مج. 1، ج. 2). بيروت، لبنان: دار الجيل للنشر. ص 14.
[31] عبد الكريم، ق. م. (2014). شذرات من كنوز التراث العراقي القديم في جوانب من العلوم والمعارف الإنسانية. مجلة عصور الجديدة، (4)15 ، ص 11.
[32] حسين، أ. ا. (2015). الموضوعية في كتابة التاريخ بأسلوب الشخص الثالث عند العراقيين القدماء. مجلة أبحاث ميسان، (11) 21، ص 180.

الآثار والباحثين على تأرخة حضارة العراق القديم، استناداً إلى ما دوّنت من أخبار وانجازات سياسية واجتماعية وعمرانية وحربية وأحداث يعود قسم منها إلى الملوك والأمراء بصيغة كتابات ونصوص ملكية ومن أبرزها، الكتابات التذكارية، والرسائل، والمعاهدات، والحوليات الملكية، وثبوت الملوك السومرية والاكدية والبابلية والأشورية، ومسلات النصر(مسلة العقبان لأياناتم، ومسلة سرجون الاكدي، ومسلة النصر لنرام سين)[33].

فقد اشتهر ملوك حضارة بلاد الرافدين بحبهم وشغفهم في تدونين وتوثيق الأحداث التاريخية في ما يسمى بنصوص الحوليات الملكية (Annals) أي ذكر الحوادث، وكانت ابرز الشواهد على اضطلاع العراقيين بمعرفة التاريخ وتدوينه، ففي مدونات الملك السومري انتمينا يخبرنا عن المعارك التي دارت بين دولة لكش وأوما، ويروي أيضا إحداث سبقت عهده بما لا يقل عن أربعة أجيال، وتطور هذا الأسلوب التاريخي في عهد الملوك الأشوريين فقد تركوا نصوص مطولة عن انجازاتهم وأعمالهم العمرانية والحربية، كما توصلوا إلى ما يعرف بالتاريخ التعاصري (Synchronistic History) وهو عبارة عن سرد لتاريخ الأحداث التي تقع في دولة أشور وما يعاصرها من أحداث تقع في دولة بابل وتاريخ ملوك الدولتين[34].

أما بالنسبة لثبوت الملوك السومريين فتعد من الوثائق التاريخية الأولى من نوعها في العالم والخاصة بتدوين التاريخ، كتبت من اجل تأرخة التعاقب التاريخي لحكم الملوك من بداية النظام السياسي في بلاد سومر حتى أخر ملوك سلالة أيسن ضمن بدايات العصر البابلي القديم (2017-1794 ق م) ، ونسخ منها دونت باحتمال كبير في زمن سلالة أور الثالثة، لكن فترة تدوينها تعود إلى العصر البابلي القديم[35].

وكذلك مسلات النصر تعد من أقدم الوثائق التاريخية والمسلة عبارة عن كتلة حجرية يتفاوت ارتفاعها ما بين (50سم و3 م)، يتم نحتها من جانب أو جانبين أو أربع جوانب بنقوش صورية بارزة ترافقها في معظم الأحيان نصوص مسمارية لتخليد الملوك من خلال توثيق انجازاتهم وحملاتهم العسكرية وأعمالهم الدينية مفتخرين بتلك الأعمال ولتذكير الأجيال بتلك الانجازات، واهم تلك المسلات هي مسلة العقبان أو النسور، وتعود إلى الملك أي-اناتوم حاكم سلالة لكش الأولى 2470ق.م، للتذكير بانتصاراته على مملكة أوما، وقد اكتشفها عالم الآثار (دي سارزك) وهي محفوظة في متحف اللوفر في باريس[36].

أدرك البابليون أهمية تخليد المآثر والبقاء في ذاكرة الزمن، فاستعملوا لفظ " دارو" (Daru)، في اللغة البابلية ويقابلها كلمة "دهر" بالعربية بمعنى الأبد أو الزمن، وقد حرص البطل كلكامش، ملك الوركاء، على البقاء خالدا في ذاكرة الزمن وذاكرة التاريخ فنقرأ في ملحمته:

---

[33] حسين، أ. ا. (2015). الموضوعية في كتابة التاريخ بأسلوب الشخص الثالث عند العراقيين القدماء. مجلة أبحاث ميسان، (11) 21، ص ص 181-182.

[34] الراوي، ف. ن. (1985). حضارة العراق، الجزء الثاني. بغداد، العراق: دار الحرية للطباعة.

[35] باقر، ط. (2009). مقدمة في تأريخ الحضارات القديمة (ج 1، ط1). بغداد، العراق الورّاق للنشر. ص 166.

[36] الشمري، ط. م. ح.، حاجم، ع. ا. ح. (2017). المعتقدات والأفكار الدينية في بلاد الرافدين من خلال المسلات الملكية. مجلة كلية التربية، (1) 29، ص 149.

"هو الذي رأى كل شئ فغني بذكره يا بلادي،
وهو الذي عرف جميع الأشياء وافد من عبرها،
وهو الحكيم العارف بكل شئ،
لقد أبصر الإسرار وكشف عن الخفايا،
وجاء بإنباء ما قبل الطوفان،
لقد سلك آسفارا بعيدة متقلبا ما بين التعب والراحة،
فنقش في نصب من الحجر كل ما عاناه وخبره،...
أريد إنا كلكامش أن أرى من يتحدثون عنه،
ذلك الذي ملأ اسمه البلدان بالرعب،
عزمت على أن اغلبه في غابة الأرز،
وسأسمع البلاد بأنباء ابن "اوروك"،
فتقول عني: ما أشجع سليل الوركاء وما أقواه،
سأمد يدي وأقص الأرز، فأسجل لنفسي اسما خالدا[37].

المطلب الثالث: اثر علوم ومعارف بلاد الرافدين على الحضارة الإنسانية (4000 ق.م)

تمتد جذور العلوم والمعارف (الجغرافية، والرياضيات، والطب، والكيمياء، والبناء، والأدب والفنون، وغيرها)، في بلاد الرافدين إلى منتصف وأواخر الألف الرابع قبل الميلاد فترة سبقت ظهور الكتابة، ومع اختراع الكتابة المسمارية وتدوين اللغة تمكن الإنسان من نقل خبراته وأحداثه ومعارفه وعلومه إلى الأجيال اللاحقة. وقد برع سكان وادي الرافدين في مجالات العلوم المختلفة، ففي **علم الجغرافية**، وضعوا الأسس الأولى لما يعرف اليوم بعلم الجغرافية من تسمية الممرات المائية والبرية مرورا بتسمية البحار والأنهار والمدن الواقعة على تلك الممرات والجزر، وقد تصورا كروية الأرض ورسموا خارطة للكرة الأرضية وثبتوا عليها بالكتابة المسمارية أسماء البلدان والمدن والجبال والمياه وتخيلوا أن بابل تقع في وسط العالم[38].

[37] عبد الكريم، ق. م. (2014). شذرات من كنوز التراث العراقي القديم في جوانب من العلوم والمعارف الإنسانية. مجلة عصور الجديدة، 15(4) ، ص 11.
[38] عبد الكريم، ق. م. (2014). شذرات من كنوز التراث العراقي القديم في جوانب من العلوم والمعارف الإنسانية. مجلة عصور الجديدة، 15(4) ، ص ص 11-14.

صورة رقم (١). القسم الأمامي والخلفي والشكل الطبيعي للخارطة التي تعود إلى الألف الثاني قبل الميلاد، مدون عليها المعلومات

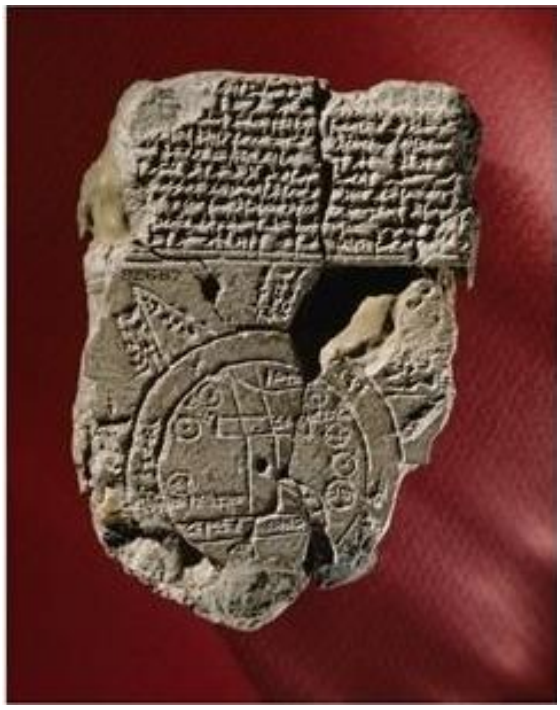

صورة رقم (٢). الجغرافية بأول وأقدم خط كتابي في العالم هو الخط المسماري العراقي القديم[39]

[39] عبد الكريم، ق. م. (2014). شذرات من كنوز التراث العراقي القديم في جوانب من العلوم والمعارف الإنسانية. مجلة عصور الجديدة، (4)15 ، ص 14.

الفوادي، ث. ط. ف. (2020). الجذور التاريخية لدبلوماسية العلم والتكنولوجيا والابتكار في بلاد الرافدين وأثرها في الحضارة العالمية. الدراسات العربية الأوراسية، ١٠، ص ص ٦٦-١٠٥.

أما في **مجال الرياضيات** فأن الانجازات الفكرية التي حققتها حضارة بلاد الرافدين في علوم الرياضيات فاقت العناصر الحضارية الأخرى لأنها أعطت صفة الفكر العلمي للحضارة العراقية القديمة ونفت عنها صفة الفكر المثالي والأسطوري، إذ اتسمت علوم الرياضيات بالازدهار والرقي، ويعود الفضل في إشاعة دراسة النصوص الرياضية إلى معهد الرياضيات في السويد وبخاصة إلى الأستاذ فرايبرك سنة 1979، الذي كتب الكثير من الأبحاث الموسومة «الجذور الأولى للرياضيات البابلية»، "The Early Roots of Babylonian Mathematics"، إذ توّصل إلى أن تاريخ معرفة العراقيين القدامى في مجال الرياضيات يمتد إلى بداية نضح الحضارة العراقية في حدود (3000 ق.م). وأنهم عرفوا العمليات الحسابية الجمع والطرح والقسمة والضرب، والجذور التربيعية والتكعيبية وجداول فسرت على أنها لوغاريتمات[40]، وفي مجال الهندسة كانوا على معرفة بكيفية أيجاد مساحة المربعات والمستطيلات وشبه المنحرف والمثلثات القائمة الزوايا والمتساوية الساقين.

في السياق ذاته، فيما يخص نظرية تشابه المثلثات فإن البابليين عرفوا النظرية قبل فيثاغورس اليوناني بحوالي (15 قرن)، ويبقى اللوح الرياضي الهندسي الذي عثر عليه عالم الآثار العراقي طه باقر عام 1949، في موقع تل حرمل (قرب مدينة بغداد الحالية)، والموقع كان يسمى "شادوبوم" وكان مركزاً إدارياً ومالياً تابعاً لمملكة اشنونا إحدى الممالك السومرية (2028 ق.م)، ويتضمن اللوح الطيني نماذج رياضية ومعادلات تخص حالة من نظريات تشابه المثلثات والتي نسبت حديثا إلى عالم الرياضيات اليوناني "إقليدس" في القرن الثالث ق.م، في حين أن رياضي العراق القديم قد سبقوا إقليدس بنحو (1700 عام)[41].

في مجال **الطب**، حاول المؤرخون اليونان تشويه حقيقة المستوى العلمي الذي وصلت إليه حضارة وادي الرافدين في مجال العلوم الطبية، بهدف تضليل الأجيال أللاحقة عن حقيقة مكانة العلوم والمعارف الطبية العراقية القديمة، إذ اختلقوا قصصا غريبة بهذا الخصوص وردت على لسان كبيرهم هيرودوتس حين قال « أن العراقيين يخرجون مرضاهم الى الشوارع لأنهم لا يمتلكون أطباء، فالناس الذين يمرون بالمرضى يقدمون النصائح، أما من خلال تجربتهم لدواء قد شفاهم، أو من خلال معرفتهم بأحد ما قد تعافى لتناوله دواء معين، وكل المارة يسألون دون استثناء»، ويأتي هذا التشويه والتضليل لكون اليونان لم تستطع الوصول إلى هذه المكانة الطبية المتقدمة إلا بعد عشرات القرون. وبفضل علماء الآثار والرقم الطينية تم كشف ذاك الزيف اليوناني ودونت لنا تلك المعارف والعلوم الطبية، حيث وجدت في مكتبة أشور بانيبال المئات من النصوص الخاصة بوصفات طبية، ومنها أقدم وصفة طبية يعود تاريخها إلى نهاية الألف الثالث ق.م.[42] ، وقد مارست بلاد الرافدين مهنة الطب بصورة متشابكة بين العلم والدين والسحر، وتم العثور على مصنع الخشخاش يعود إلى (4000 سنة ق.م.)، كما وكشف الأدلة الأثرية أن مسلة حمورابي ملك بابل

[40] الراوي، ف. ن. (1985). حضارة العراق، الجزء الثاني. بغداد، العراق: دار الحرية للطباعة. ص ص 294-314.
[41] باقر، ط. (1980). لمحات من تأثير حضارة وادي الرافدين في الحضارة اليونانية. مجلة بين النهرين، 29، ص ص 7-23.
[42] الراوي، ف. ن. (1985). حضارة العراق، الجزء الثاني. بغداد، العراق: دار الحرية للطباعة. ص 324.

التي تضمنت (282) قانونا منها سبعة عشر قانونا تتعلق بالطب بين مكافأة أو معاقبة الأطباء بالاعتماد على نتائج علاجاتهم (Pouyan, 2016, p. 192-194). كما كشفت الوصفات الطبية والمدونات السومرية أن الطبيب مارس الطب في مدينة أور، في حدود (3000 ق.م)، دون الاستعانة بالسحر والشعوذة بل باستخدام الأعشاب والمعادن والمنتجات الحيوانية والأدوية، وترك الطبيب السومري وثيقة طبية من اثنتي عشرة صفحة منقوشة على لوح طيني وتم تفسيرها من قبل مارتن لويس (Martin Louis)، وسومرست موم (Somerset Moham) في عام 1953. حيث كشفا أن الأطباء السومريين صنفوا الأدوية إلى ثلاث فئات تشمل المنتجات العشبية والمعدنية والحيوانية (Pouyan, 2016, p. 203).

وفي مجال **الكيمياء**، كشفت آلاف المخطوطات والرقم الطينية أن السومريين تمكنوا في الألف الرابع ق.م، من الوصول إلى مكانة متطورة في تكنولوجيا الكيمياء فقد كانوا علميين ولديهم أفكار علمية وحققوا انجازات في الصناعات المعدنية، فقد عثر على نماذج نحاسية في العراق تعود إلى (3500 ق.م)، تعكس التكنولوجيا الكيميائية المتطورة في صناعة النحاس واختزاله من خاماته وصهره ثم صبه قبل أو بعد تحويله إلى سبائك، وعثر على ما يشير إلى وجود أجهزة وافران كيميائية للتقطير والتسخين والتبخير وصبغ الأصواف وصهر المعادن، كما ابرعوا في صناعة الزيوت والمنظفات، والإصباغ، والدباغة، وتكنولوجيا الأغذية (حفظ وصناعة)، وصناعة الزجاج وتلوينه، والدوارق للسوائل[43].

وفي مجال **البناء** وتخطيط المدن، فقد مثّل فن العمارة في حضارة بلاد الرافدين شكلا من أشكال الفنون التي عكست مراحل التطور في البناء، حيث ارتبطت العمارة بالعلوم الميكانيكية وبعلم طبقات الأرض والجغرافية والعلوم الخاصة بدراسة المناخ والطقس وبجانب كبير من علوم التقنية، ففي مرحلة ما قبل الاستقرار السكاني في القرى في حدود الألف العاشر قبل الميلاد أنشأت المستوطنات او معسكرات الصيد، فيما بعد في الألف السابع والسادس قبل الميلاد، سكنت المجتمعات في وحدات سكنية على شكل دائري ومربع ومستطيل، واستخدمت مختلف مواد البناء من الطين واللبن (الطابوق)، والملاط (المونة) لتماسك البناء، واستخدمت أساليب لتشييد البناء كالسقوف والشبابيك يضاف إليه هياكل البناء ومداخل البيوت، وبناء المعابد السومرية (الزقورات)، أشهرها برج بابل الشهير (اتمناكي)، إي معبد أساس الأرض والسماء[44]، تفاصيل عكست مدى فن العمارة، والسبق لحضارة بلاد الرافدين إذ عثر على خرائط تعود للعهد البابلي القديم لمدينتي نفر وسبار، وتظهر الخرائط اسم المدن واسم نهر الفرات وأسماء القنوات والجداول التي تمر بها وأسماء المعالم الأخرى مثل المعابد والمخازن والخنادق والبوابات[45].

وفي مجال **الأدب والفنون**، فتعد المكتبة من أقدم خزائن الكتب في العراق، إذ كانت الوثائق تحفظ في جرار من الفخار وسلال من القصب، وتعرف طريقة الحفظ في اللغة السومرية باسم بيسان –

---

[43] حبة، ف. (1969). الكيمياء وتكنولوجيتها في العراق القديم. مجلة سومر، 25، ص ص 91 -113.

[44] عبد الرزاق، ن.ك. (2012). الخصائص التخطيطية والتصميمية للمباني والمستوطنات الطينية في العراق. مجلة المخطط والتنمية، 25، ص ص 96-99.

[45] الراوي، ف. ن. (1985). حضارة العراق، الجزء الثاني. بغداد، العراق: دار الحرية للطباعة. ص 284.

دب (pisan- dub)، وفي اللغة الاكدية كركناكو (girginakku)، وقد عثر على رقم طينية في تل قوينيجق (الموصل)، وتل حرمل (بغداد)، تضمنت بطاقات تعريفية لتصنيف الوثائق والكتب حسب مضامينها كالنصوص الدينية والنحوية واللغوية. وقد أنشئت حضارات سومر واكد وبابل وأشور العديد من المكتبات، وأن نظام الاستعارة للكتب كان مألوفا إذ يتم تسجيل اسم النص المعار واسم الشخص الذي استعاره على رقم طيني صغير، وكانت المكتبات تتضمن فهارس وتواقيع على ألواحها وختم المكتبة واسم صاحبها وغيرها من الملاحظات، وان أشهر المكتبات تلك التي أسسها الملك الأشوري اشو بانيبال، وهو ملك آشوري لقب بملك العالم (669 - 640 ق. م)، وسيطرت الإمبراطورية الأشورية في عهده على البلدان فارس، وبابل، وسوريا، ومصر. وأُكتشفت مكتبة أشور بانيبال في مدينة الموصل الحالية، في عام 1842م، واحتوت على أكثر من (28000) ألف رقم طيني، تضمنت مواضيع مختلفة ما بين دينية وعلمية وأدبية، كالمعاجم اللغوية، والنصوص الطبية، والفلكية، والترانيم الدينية، ووثائق إدارية، ومصنفات التاريخ، والجغرافية، والأخبار، والرسائل، والنحو والأدب، ومؤلفات أدبية منسوخة مثل قصة الخليقة والطوفان وقصة كلكامش، وبذا كانت اول مكتبة منظمة وجدت في آسيا التي بالإمكان أن يطلق عليها بحق دائرة معارف متكاملة، والتي أصبحت فيما بعد مفتاحاً لكل عالم المعرفة القديمة وحجز الزاوية لعمل الأشوريات، وجميع تلك الرقم الطينية محفوظة في المتحف البريطاني ومتحف اللوفر[46].

وقد تركت قصص الخليقة والطوفان، وكلكامش، وغيرها في الأدب العالمي أثرا عميقاً، ويمكن تقصي ذلك من خلال تتبع قصيدة هوميروس "الاوديسا" حيث يتفق كثير من مقاطعها مع كلكامش (ماتفيف، & سازونوف، 1991، ص 209). كما أن إحدى القصص الأشورية القديمة "قصة اخيقار الحكيم" وصلت إلى روسيا واستمرت في الحياة كحكاية روسية، لكن الأبحاث والنقاشات العلمية توصلت إلى استنتاج مفاده أن موطن هذه الحكاية هو بلاد أشور وإنها قد ولدت في فترة الملك الأشوري سنحاريب (705 -681 ق م)، أو في فترة حكم ابنه اسرخدون، وان دروس هذه القصة أغنت علماء كثيرون من دول مختلفة من العالم مثل فرنسا وألمانيا وايطاليا وانكلترا والولايات المتحدة ورومانيا ويوغسلافيا وغيرها (ماتفيف، & سازونوف، 1991، ص 24)، لذا شكلت بلاد الرافدين مركزا للثقافات العظيمة في تاريخ الإنسانية، وبقيت إسهاماتها سارية حتى القرن الواحد والعشرون، حيث أن الثقافات الرئيسية التي تشكلت في المنطقة، سومر وأكد وأشور وبابل والساميين والآراميين والاموريين وفي مرحلة لاحقة الحيثيين شهدت فيما بينها تبادلاً ثقافياً دام لأكثر من (2500 عام)، فضلا عن أن جميع الثقافات الغربية ومعظم الثقافات الشرقية تأثرت بحضارات بلاد الرافدين ومصر (Comité Español del ACNUR, 2016).

[46] الدوري، ر. عبد الرحمن. (1988). أشوربانيبال مكتبته وثقافته. مجلة سومر، 45، ص ص 236-241.

الفوادي، ث. ط. ف. (2020). الجذور التاريخية لدبلوماسية العلم والتكنولوجيا والابتكار في بلاد الرافدين وأثرها في الحضارة العالمية. الدراسات العربية الأوراسية، ١٠، ص ص ٦٦-١٠٥.

المبحث الثالث: دبلوماسية العلم والتكنولوجيا والابتكار في بلاد الرافدين وأثرها في الحضارة العالمية

من حسن الحظ أن سكان ما بين النهرين لم يكتبوا بالمداد السريع الزوال أو على الورق السريع العطب القصير الأجل, بل كتبوا على الطين الطري ونقشوا عليه ما يريدون نقشه، فكانت الكتابة المسمارية وتطورها أعظم فضل للسومريين على الحضارة العالمية[47], فقد وضعوا أول معجم لغوي في اللغتين السومرية والأكدية شرحوا فيه معاني الكلمات بكل لغة وما يقابله في اللغات الأخرى[48]، وقد قامت على أرض العراق ست حضارات وإمبراطوريات هي (السومرية, والأكادية, والبابلية، والأمورية, والآشورية, والعربية العباسية)، وان هذا التواصل الحضاري والتبادل العلمي والثقافي بين تلك الحضارات، والذي يعد مصداق ودليل على دبلوماسية العلم والتكنولوجيا والابتكار في بلاد الرافدين، قد شكل نسيجا فكل خيط فيه يكمل الخيط الأخر ويسنده ويلتحم معه ليكون لونا أخر، وهذا التناغم الحضاري له الدور الكبير في تأثير كل حضارة على ما جاورها وعاصرها أو تلاها[49]. وقد انتقلت وانتشرت الكتابة والعلوم والمعارف والتكنولوجيا في الحضارات الأخرى من خلال التجارة، إذ أقامت بلاد الرافدين شبكة مواصلات تجارية تربطها بالدول المجاورة، ومصر، واليونان[50]، وقد أشار إليه الكثير من الكتّاب الإغريق والرومان وتحدثوا عن النظم والمعاملات التجارية التي كانت سائدة في العراق القديم، وكيف صنعت وسائل تكفل تنشيط التجارة كالعجلة والسفينة، واستخدمت نظم دقيقة للموازين والمكاييل، واستعملت المعادن كوسيلة لتقييم أثمان السلع والأجور، فضلا عن وضع النظم والتعريفات وتشريع القوانين لتنظيم المعاملات التجارية أمور غدت فيما بعد تشكل النظام الأساس الذي قامت عليه التجارة واقتبسته الأقوام الأخرى ومن بينهم الإغريق والرومان[51]. لذا لو تأملنا جيدا سنجد أن وحدة الحضارات القديمة العظمى الثلاث في العالم السومرية أو" البابلية"، والمصرية والهندية ناهيك عن الكريتية تدل على الوحدة الأساسية لحضارة العالم التي انتشرت من منبع أصلي واحد[52]، في إشارة إلى بلاد الرافدين.

المطلب الأول: دبلوماسية العلم والتكنولوجيا والابتكار في بلاد الرافدين وأثرها في الحضارة المصرية

نشأت وازدهرت في بلاد الشرق حضارات ومدنيات، اتصلت وأخذت وأعطت وتأثرت فيما بينها، وكانت حضارتا وادي الرافدين ومصر أهم تلك الحضارات، إذ نشأ في كل منهما حضارة أصبحت منارا ومعينا لما جاورها من البلدان، وقد ثبت ثبوتا قاطعا بان هناك صلة بين حضارات وادي الرافدين والحضارة المصرية القديمة، فقد عثر على رسومات في الآثار المصرية تشير إلى سفن

---

[47] ديورانت، و. وا. (د. ت.). قصة الحضارة الشرق الأدنى (ترجمة محمد بدران) (مج. 1، ج. 2). بيروت، لبنان: دار الجيل للنشر. ص 34.
[48] قاشا، س. (2010). عراق الأوائل حضارة وادي الرافدين من 5000 -500 ق.م. (ط. 1). بيروت، لبنان: العارف للمطبوعات. ص 97.
[49] الشمري، ح. (2013). سرقة حضارة الطين والحجر(ط.1). بغداد،العراق: دار ومكتبة عدنان للنشر. ص 12.
[50] روثن، م. (1980). علوم البابليين، تعريب وإيضاحات يوسف حبي. بغداد، العراق: دار الطليعة للطباعة والنشر. ص 16.
[51] رضا، ح. ر. (2015). بلاد النهرين في العصر الهيللنستي (331-126 ق.م)، أطروحة دكتوراه في الآداب في التاريخ القديم اليوناني والروماني.
[52] وادل، أ. (1999). الأصول السومرية للحضارة المصرية (ط 1). (ترجمة زهير رمضان). عمان/ الأردن: الأهلية للنشر. ص ص264 -284.

عراقية صنعتها حضارة بلاد الرافدين تميزت بالشكل العمودي إي تكون مرتفعة المقدمة والمؤخرة، لكن سرعان ما اختفت أكثر تلك الرسومات في مصر، كما أن كثير من المصنوعات والفنون العراقية القديمة وصلت إلى مصر ووجدت إقبالا كبيراً عليها، واقتبس منها المصريون وتعلموها، وبالمقابل وجدت بعض السلع المصرية والفنون طريقها إلى العراق[53]. كما يقول برتران جيل في كتابه موسوعة تاريخ التكنولوجيا، انه في نهاية الإلف الرابع وبداية الإلف الثالث ق.م، ظهر نظام تقني متكامل ومترابط ونشاطات متنوعة في بلاد ما بين النهرين مشابه لما عرفته مصر في السلالات الطينية، فقد كانت سبل التطور والنمو نفسها رغم وجود مفارقات ملحوظة فسفينة أوروك شبيهة بالسفن الجرزية " الاجنبية"، كما أن تشابه إلى درجة الالتباس في نوع جِرار أوروك (سومر)، معقوفة العنق وبين ما نراه على لوحة (مينيس) في مصر، إلا أن بعض الملامح تجعلنا نعطي الأفضلية لبلاد سومر[54].

كانت الكتابة إحدى الوسائل التي من خلالها أثرت حضارة وادي الرافدين على الحضارة المصرية، فقد توصل الإنسان الرافديني إلى اختراع الكتابة في حدود (3500-3600 ق.م)، بينما توصل إليها الإنسان المصري في حدود (3100 -3200 ق.م)، ولا شك أن ما يقف خلف هذا الحافز في الاختراع كان تأثير حضارة بلاد الرافدين بحكم السبق الزمني وبحكم الصلات الحضارية بين الحضارتين[55]، فقد عثر في تل العمارنة (el-Amarna)، حوالي (190) ميل جنوب القاهرة، وعرفت العمارنة سابقاً باسم (آخت–آتون)، العاصمة القديمة لمصر، أسسها امنوفس الرابع (اخناتون)، أشهر ملوك مصر قاطبة، على ألواح بلغ عدد (382)، تضمنت رسائل بين ملوك وحكام المنطقة (مصر، أشور، بابل، ميتاني، حاتتي)، محفوظة في موقع يسمى (مكان رسائل فرعون) وهي بمثابة خزانة مراسلات وزارة الخارجية المصرية آنذاك، المهم في الموضوع أن الذي أثار دهشة الأوساط العلمية أن الألواح نقشت بالمسمارية وباللغة البابلية[56] ، مع الجدير بالذكر أن الألواح كانت رقم طينية ولم تكن من أوراق البردي المتعارف عليها في مصر، ومكتوبة بلغة بابلية، وهذا يمثل دليلاً على أنها مأخوذة من الثقافة العراقية القديمة في استخدام الطين تلك المادة الوحيدة المتوفرة في بلاد الرافدين[57]. الأمر الذي يعكس مدى نجاح دبلوماسية العلم والمعرفة في بلاد الرافدين في فرض مادة الكتابة (الرقم الطينية) ونوع الكتابة (المسمارية واللغة البابلية) في التعاملات السياسية والتجارية والدبلوماسية بين دول المنطقة ومنها الحضارة المصرية.

وفي السياق ذاته، فان العثور على عناصر فنية وأختام مسطحة واسطوانية تعود لحضارة بلاد الرافدين في مصر يشكل مظهرا أخر من مظاهر دبلوماسية العلم والابتكارات لبلاد الرافدين

---

[53] كريمر، ص.(د. ت.). من ألواح سومر(ترجمة طه باقر). بغداد، العراق: مكتبة المثنى.ص 39.

[54] جيل، ب. (1996). موسوعة تاريخ التكنولوجيا (ط.1) (ترجمة هيثم اللمُع). بيروت، لبنان: المؤسسة الجامعية للنشر. ص 208.

[55] الطائي، ا. ع. (2006). ملامح من اصالة واثر التراث اللغوي والكتابي الرافديني في الحضارات الاخرى. مجلة التربية والعلم، (13) 12 ، ص 14.

[56] الصالحي، ص. ر. (2009). الدبلوماسية البابلية في عصر العمارنة- دراسة في رسائل العمارنة. مجلة جامعة تكريت للعلوم الإنسانية، 16(6)، ص ص 362-364.

[57] كيبرا، ا. (1964). كتبوا على الطين (ترجمة محمود حسين الامين). بغداد، العراق: مكتبة دار المثنى. ص 29.

وتأثيرها على الحضارات الأخرى، فقد عثر علماء الآثار على عناصر حضارية ومواد منقولة إلى مصر ذات مصدر سومري، إذ وجد في معبد تود جنوب الأقصر في مصر مجموعة من اللقى تضم عناصر فنية من حضارة وادي الرافدين تعود إلى فترة فجر السلالات، يضاف إليه أختام اسطوانية من العصر الاكدي والعصر البابلي القديم، فقد وجدت أربعة أختام اسطوانية في احد القبور في مصر تعود إلى الفترة التي بدأت فيها أولى محاولات الكتابة في بلاد الرافدين، وهي الفترة التي شهدت بداية اختراع السومريون للأختام الاسطوانية ولأول مرة يرى التاريخ مثل هذا الاختراع. كما أن كثير من الشواهد تؤكد تبني الفنان المصري للعناصر الفنية ولمواضيع ألأختام الاسطوانية وفنون حضارة بلاد الرافدين، منها التشكيلة المكونة من حيتين مضفورتين على بعضهما، كذلك مشهد البطل السومري بلباس الرأس التقليدي والبدلة الطويلة ماسكا على أسدين في حالة هجوم من الجانبين وهي من المشاهد المألوفة في أختام أوروك (سومر)، وكذلك لوحات الأثاث، وجدت جميعها في مصر وهي من أصل سومري[58].

وقد عُثر على رسائل عديدة من ملوك وحكام الدول الأخرى يطلبون من شعوب وادي الرافدين الاستفادة من خبراته الطبية لمعالجة حاشيتهم الملكية، فعلى سبيل المثال لا الحصر، عثر على رسائل من القرن الرابع عشر ق.م، موجه من مملكة ماري (سوريا)، إلى مملكة أشور تطلب خدمات طبية، كما وجدت نصوص مسمارية في الدولة الحيثية (الأناضول)، دلت على وجود أطباء عراقيين في البلاط الحيثي في حدود القرن الثالث عشر ق.م، وأيضا عُثر على رسائل في تل العمارنة في مصر تتكلم عن تواجد أطباء عراقيين قدماء في البلاط المصري. وكذلك وجدت مراكز أو ما يمكن تسميتها بالمستشفيات لعلاج مغنين ومغنيات احد المعابد في مدينة نفر خلال الحكم الكشي. وقد أسست الحضارة الأشورية مجلس للأطباء، ووجدت كليات للطب في مدن الوركاء وبورسبا [59]، وذاك دليلا وشاهدا على دبلوماسية العلوم والمعارف لحضارة وادي الرافدين مع الحضارة الأخرى.

اجتهد العراقيون القدماء وبشكل مستمر في سبيل الحصول على الذهب والفضة سواء عن طريق المقايضة أو بطرق أخرى مثل الجزية، وأطلق السومريون على الذهب لفظ "كوشكين"، وعرفه الأكديون بلفظ "خراصو". ويقال في العربية "خرص" التي من معانيها حلقة من الذهب أو الفضة، كذلك سمى الكنعانيون الذهب "خرص". وعمل والأكاديون والآشوريون على استيراد الذهب والفضة من بلاد الأناضول وبشكل منتظم وذلك مقابل منتجات أكدية وبابلية وآشورية، كما استوردوا الذهب من مصر وعلى شكل مقايضة أو على شكل هدايا ولفترات طويلة[60]، لذا فان التبادل التجاري والاتصال بين مصر وبلاد الرافدين كان الوسيلة والطريقة التي من خلالها انتقلت العناصر الثقافية والفنية من بلاد سومر وبابل إلى مصر، ابتداءً من الكتابة المصرية الهيروغليفية والذي مصدره بلاد سومر، وصولا إلى عجلة الفخار التي جاءت من سومر مع العربات، ورؤوس

[58] ناجي، ع.(1985). حضارة العراق (ج. 4). بغداد، العراق: دار الحرية للطباعة. ص ص 288-289.
[59] الراوي، ف. ن. (1985). حضارة العراق، الجزء الثاني. بغداد، العراق: دار الحرية للطباعة. ص ص 336-337.
[60] الجادر، و. (1985). حضارة العراق (ج. 2). بغداد، العراق: دار الحرية للطباعة. ص ص 250-251.

الصولجان المصرية التي لا تفترق شيئا عن البابلية، حتى وجدت تماثيل صغيرة لآلهة بين الآثار المصرية عليها نقوش وطراز فني يعود إلى الفنانين في أور (سومر)، فلا غضاضة على مصر أن تعترف بالسبق لبلاد سومر لان الأصول التي استمدتها من ارض دجلة والفرات نمت وأينعت وأثمرت حضارة مصرية خالصة فذة هي لا ريب من أغنى الثقافات المعروفة في التاريخ وأعلاها شأنا وأعظمها قوة[61].

المطلب الثاني: دبلوماسية العلم والتكنولوجيا والابتكار في بلاد الرافدين وأثرها في الحضارة الإغريقية

يكشف لنا عالم السومريات صموئيل نوح كرايمر في عمله الايقوني في عام 1959، "التاريخ يبدأ في سومر"، تسعة وثلاثون جانباً من جوانب الحضارة - نُسب الكثير منها لاحقاً إلى المخترعين اليونانيين - "39 أولاً" ظهرت لأول مرة في الحضارة السومرية خلال فترة أوروك (4000 ق.م)، وان تلك التطورات في مجالات الثقافة والعلوم والتكنولوجيا لا زالت ترفد عالم اليوم (Mark, 2019)، ومن خلال التبادل التجاري، والزيارات التي قام بها بعض علماء ومؤرخي الحضارات الأخرى لحضارات بلاد الرافدين، أو الغزوات التي تعرضت لها حضارتي بابل وأشور، انتقلت العلوم والمعارف من حضارة بلاد الرافدين إلى حضارات أخرى، ومنها الحضارة الإغريقية، بدءً من انتشار الكتابة المسمارية السومرية، مرورا بعلوم الفلك والكيمياء والجغرافية والمناخ والرياضيات وغيرها، وصولاً إلى اختراع الجهاز المعروف باسم برغي أرخميدس "The Archimedes' Screw "، في فترة طويلة قبل الإغريق، وهو جهاز يقوم لسحب المياه من الأدنى إلى الأعلى وتحويلها إلى قنوات الري (Ken, 2019).

وقد دونت الحضارة المينوية (Minoan)، أو الكريتية وثائق قصورهم والوثائق الإدارية على ألواح طينية لغرض حفظها، والكتابة على الرقم الطينية تكنولوجيا وابتكار سومري، كما استخدمت قبرص اللغة الاكدية (البابلية)، بخطها المسماري في المراسلات الملكية (رسائل تل العمارنة)، مع فرعون مصر[62]، أيضا عُثر على رقم طينية أشارت إلى أن الإغريق في القرن الثاني قبل الميلاد بعد أن سكنوا في بابل أرسلوا أولادهم إلى المدارس البابلية لتعلم الكتابة واللغة وتدربوا على استنساخ النصوص المدونة باللغة السومرية، إذ تضمنت الرقم الطينية نصوصا تعليمية وتمارين بالخط السومري والاكدي وعلى الوجه الأخر من الرقيم ما يقابلها بالخط الإغريقي[63].

وفيما يخص الأدب العراقي القديم فكان منارة وينبوعا للثقافات الأخرى تستمد منه عناصرها الثقافية لذا ليس من العدل القول بان الثقافة والأدب العالميين يُدينان للتراث اليوناني وحده دون سواه، لان الأدب اليوناني قد تأثر بالأدب التراث العراقي القديم وملاحمه وأساطيره، إذ وجد الباحثون بعد دراسة النصوص المسمارية حالات تشابه أكثر فأكثر بين الأدب الملحمي لبلاد الرافدين والإغريق خصوصا بين ملحمة كلكامش في الألف الثاني ق.م، وبين الإلياذة والأوديسة

---

61 ديورانت، و. وا. (د. ت.). قصة الحضارة الشرق الأدنى (ترجمة محمد بدران) (مج. 1، ج. 2). بيروت، لبنان: دار الجيل للنشر. ص ص43-45.

62 الطائي، ا. ع. (2006). ملامح من اصالة واثر التراث اللغوي والكتابي الرافديني في الحضارات الاخرى. مجلة التربية والعلم، (13) 12 ، ص 29.

63 إسماعيل، ب. خ. (1985). حضارة العراق، (ج. 1). بغداد، العراق: دار الحرية للطباعة. ص 240.

الإغريقيتين في القرن الثامن أو التاسع قبل الميلاد، فقد اقتبس هوميروس بعضا من ملحمة كلكامش، فالبطل السومري كلكامش يقابله أخيل البطل الإغريقي ويتجسد في كليهما العنصر الإلهي من حيث الأم، فأم الأول الإلهة (ننسون)، والثاني الإلهة (ثيتس)، وكلاهما لديه صديق وخليل يموت ويحزن عليه، انكيدو صديق كلكامش، وبروتوكلس (protpclus) صديق أخيل.

وفي الإلياذة يوجد أيضا تشابه بين قصة هرقل وكلكامش، فكلاهما قتل الأسود وارتدى جلودها، وتغلب على الثيران السماوية المقدسة، وكما وان سبب كارثتيهما امرأة، الإلهة هيرا بالنسبة للأول، والإلهة عشتار للثاني، وينطبق الأمر ذاته على الأساطير الرافدينية التي تبحث في الظواهر الكونية مثل خلق الحياة والموت و الطوفان، وقصة خلق الإنسان من ماء وطين وروح ألاهية، وأسطورة تموز وعشتار، وما يماثلها في أسطورة افروديتي الإغريقية، وكثير من التفاصيل الأخرى التي لسنا بصدد تناولها في بحثنا، المهم إننا نستنتج مما تقدم أن النتاج الفكري الإغريقي اقتبس الكثير من النتاج الأدبي والثقافي السومري والبابلي والأشوري[64].

وفي مجال الموسيقى والألحان، فقد غنت المطربة "اور نانشه" التي كانت من أشهر النساء الموسيقيات السومريات في منتصف الألف الثالث قبل الميلاد، ورقصت على أوتار القيثارة السومرية، إذ عثر لوح طيني في منطقة " نيبور" في جنوب العراق، مكتوب في اللغة السومرية وبالخط المسماري يتضمن أقدم أغنية عاطفية في التاريخ رددها العراقيون منذ ما يقارب (5000) عام، لذا فان أول الأغاني انطلقت من سومر وكتبت أولى النوتات السومرية هناك، وان أول أغنية حب في التاريخ ظهرت في بلاد الرافدين في عام (2500 ق.م) بين انانا أو عشتار"آلهة الحب" وديموزي أو تموز"إله الخصب". كما وعثر علماء الآثار على عدد من اللوحات الطينية التي تعود إلى القرن الرابع عشر قبل الميلاد في المدينة السورية القديمة"اوغاريت" التي كانت تحت سلطة مملكة أور (سومر)، واحتوت هذه اللوحات علامات مسمارية الشكل باللغة الحورية «وهي امتداد للغة البابلية»، وتبين بعدئذ أنها أقدم مقطوعة موسيقية تم اكتشافها وهي بمثابة نشيد عمره(3400)عاما[65]، وقد تأثر الإغريق بالموسيقى البابلية والأشورية إذ أن المدرج السباعي الذي كان يُعتقد أن الإغريق قد وضعوه سنة (400 ق.م)، تبين انه ذات أصول بابلية وأشورية، حيث استطاع أساتذة في جامعة كاليفورنيا عام 1975، إعادة الحياة إلى لوح رومانسي أشوري مكتوب على لوح حجري يعود إلى (3400 ق.م)، كما وإنهم أعادوا صنع صنعوا القيثارة الأشورية – البابلية لكي يتم أداء هذا الرومانس عليها، وتم البرهان على أن الموسيقيين الأشوريين – البابليين استخدموا المدرج الموسيقي السباعي الغربي قبل الإغريق (ماتفيف، & سازونوف، 1991، ص 207).

وتعد بابل أول من عرف النظام البريدي الذي يعد قاعدة أساسية في العلاقات الدبلوماسية، إذ بموجب هذا البريد يستطيع رئيس الدولة الإطلاع على كل أحوال دولته, والمدن الخاضعة له،

---

[64] توكلنا، إ.، ضيف، ك. (2019). المعتقدات الدينية في بلاد الرافدين وتأثيرها في المعتقدات اليونانية. مجلة جامعة تشرين للبحوث والدراسات العلمية، 41 (1)، ص ص 99-100.

[65] المحمداوي، ي. (مايو 24، 2016). الأغنية السومرية موسيقى والحان أذهلت العالم. مقتبس من https://magazine.imn.iq/.

الفوادي، ث. ط. ف. (2020). الجذور التاريخية لدبلوماسية العلم والتكنولوجيا والابتكار في بلاد الرافدين وأثرها في الحضارة العالمية. الدراسات العربية الأوراسية، ١٠، ص ص ٦٦-١٠٥.

وعلى أخبار الدول الأخرى وما يحصل فيها من تطورات، وقد أقتبس اليونان والفرس نظام البريد من بابل[66].

وكان السومريون أوائل علماء الفلك، حيث قاموا بتخطيط النجوم في مجموعات من الأبراج، وقد اعترف الإغريق القدماء بهذا السبق لحضارة بلاد الرافدين، واعتمدوا زودياك (دائرة أبراج فلكية) سومر في وقت لاحق، وكانوا أيضا على بيّنة في مجال الكواكب المرئية بالعين المجردة، وقد طور علماء الفلك السومريين وظائف رياضية متطورة سمحت لهم بالتخطيط والتنبؤ بدقة، لعدة مئات من السنين، بحركات الكواكب، وكانوا يستخدمون خريطة البروج للأغراض الرياضية والمراقبة العملية (Ann Wendy Blog, 2013). كما وان تصوير خارطة النجوم التي ترسم دون استخدام التيسلكوب وضعت من قبل بابل وعبر الحيثيين وصلت إلى البحر الأبيض المتوسط، وكان لعلم الفلك في بابل تأثير كبير على المعارف الفلكية في بلاد الإغريق فيما بعد (ماتفيف، & سازونوف، 1991، ص 210)، إذ كان اليونان على اتصال دائم بالمعارف البابلية بعلم الفلك، حيث يقول سترابو "كان اليونان يجهلون احتساب مدة السنة الحقيقية وأمورا كثيرة مشابهة، حتى انتشرت لديهم ترجمات يونانية عن الفلك البابلي فاخذ الفلكيون المعاصرون ينهلون معلوماتهم وما زالوا يستقون من هذه المعلومات حتى اليوم".

وقد زار الكثير من الرياضيين والفلكيين والفلاسفة اليونانيين العراق القديم لينهلوا من ينابيع المعرفة، وهكذا انتقلت علوم الرياضيات إلى اليونان، إذ أن البابليين والأشوريين وضعوا أسس القوانين الرياضية في الإلف الثاني قبل الميلاد وقد سبقوا فيثاغورس وإقليدس بعشرات القرون، وان ما قام به علماء الإغريق هو إعادة اكتشاف تلك العلوم والمعارف بعد (15) قرناً[67] .

وان الاختراع الذي لا زال يستعمل على نطاق واسع في عالمنا المعاصر هو الساعات الشمسية والمائية التي شاهدها حتى هيرودتس، فقد عثر على نص مكتوب على لوح يرجع الى عام 700 ق.م، في بلاد الرافدين تضمن إرشادات حول طريقة استخدام الساعة الشمسية (غنومونا)، وقد اثبت العالم البلجيكي السير يولوج ف. كيومون أن الإغريق اقتبسوا الغنومونا من خلال علاقاتهم التجارية مع الشرق الأسيوي (ماتفيف، & سازونوف، 1991، ص 207). كما يذكر الباحث ول وايريل ديورانت في كتابه قصة الحضارة، أن حضارة بابل كادت تكون هي الخالقة لعلم الفلك، وكان لها الفضل الكبير في تقدم الطب، وأنشأت علم اللغة، واعدت أول كتب القانون الكبرى، وعلّمت اليونان مبادئ الحساب، وعلم الطبيعة والفلسفة، وانتقلت تلك العلوم والمعارف إلى العرب والتي أيقظوا بها روح أوربا من سباتها في العصر الوسيط[68].

المطلب الثالث: دبلوماسية العلم والتكنولوجيا والابتكار في وادي الرافدين وأثرها في الحضارة الرومانية

---

[66] خليفة، س. م.(مارس 30، 2017) الجذور الأولى للعلاقات الدبلوماسية وتطورها في حضارة وادي الرافدين. مقتبس من www.altaakhipress.com/viewart.php?art=99806

[67] إسماعيل، ب. خ. (1985). حضارة العراق، (ج. 1). بغداد، العراق: دار الحرية للطباعة.

[68] ديورانت، و. وأ. (د. ت.). قصة الحضارة الشرق الأدنى (ترجمة محمد بدران) (مج. 1، ج. 2). بيروت، لبنان: دار الجيل للنشر. ص 187.

اتفق الباحثون على جعل الكتابة الحد الفاصل بين عصور ما قبل التاريخ والعصور التاريخية لأنها أثرت في حياة الإنسان والحضارة، وبما أن السبق في الكتابة يعود لحضارة بلاد الرافدين فان ظهور الكتابة لدى الإغريق والرومان كان متأخرا بحدود القرن الثامن أو السابع قبل الميلاد، لذا وقعت الحضارات الأخرى ومنها اليونانية والرومانية تحت تأثير حضارة بلاد الرافدين في استخدام اللغة والكتابة[69]، فضلا عن العلوم والمعارف الأخرى، فقد أبدع سكان بلاد الرافدين بعلومهم في الجغرافية المناخية، إذ أشارت المدونات المسمارية إلى ما يعرف بكتاب الفلاحة، ومواعيد الزرع، والحصاد، والانقلاب الشتوي والصيفي الخاص بالمناخ الملائم للزراعة، وقد اخذ اليونان والرومان وغيرهم من الأقوام الشئ الكثير من علوم الجغرافية تلك[70].

كما وأن ما اقتبسته الحضارة الرومانية من الحضارة اليونانية وطبقته إلى حد كبير، من علوم ومعرفة وأدب وفن وهندسة معمارية يعود الفضل فيه إلى اثر حضارة بلاد الرافدين في الحضارة اليونانية كما اشرنا إليه سابقاً، وهكذا فقد تلقى الإغريق القدامى ومن بعدهم الرومان تأثيرا كبيرا من الحضارة الأشورية والبابلية في مجالات عدة منها العلوم والتاريخ والميثولوجية والأدب والعمل العسكري والطب والزراعة والرياضيات وغيرها، ففي الأدب اعتمد الشاعر فيرجيل في أعماله الأدبية على الأدب اليوناني، فكانت "الانياذة" مستوحاة بشكل كبير من ملاحم هوميروس، وجاءت كعمل يهدف إلى منافسة هوميروس، وفي فن العمارة، جاءت المنازل والأواني والمباني الرومانية تطابق الأنماط اليونانية مثل الأعمدة والتصاميم المستطيلة، وخير مثال على ذلك (معبد ميزون كاري)، وبسبب التدفق الكبير للفن اليوناني فقد خضع الرومان لعملية هلينية دراماتيكية داخل مجتمعهم، ويمكن أن نستنتج أن روما كإمبراطورية نجحت بسبب تأثيرات الحضارات اليونانية القديمة، إذ لولا اليونان لما كانت روما لتنجح، ولكان العالم مختلفا تماما عما نعرفه اليوم (Slawson, 2020). وفي مجال فن العمارة، فقد تأثر الإغريق ومن بعدهم الرومان بتخطيط المدن وفن العمارة التي بدأت بوادرها في بلاد سومر منذ حوالي (4000 ق.م)، فقد ظهر في الإغريق في القرن الخامس قبل الميلاد شخصا يدعى هيبوداموس (Hippodamus) أرسى الأسس الفلسفية الأولى في التخطيط العمراني للمدن، وهو مخطط أثينا، وقد استوحى هيبوداموس أفكاره من المدن التي شيدها السومريون[71]، ومن جملة أفكاره في هذا المجال إتباع نظام الشوارع المتعامدة " المخطط الشبكي"، لتتخذ ذات الشكل الشطرنجي للمدن البابلي، إذ عُثر على مخطوطات مسمارية في تل قوينجق في نينوى، تضم ما يقارب (30) لوحاً مسمارياً مهماً عن مخطط مدينة بابل وشوارعها، والذي يعطيها شكلاً يسمى برقعة الشطرنج ، ويذكر نص مسماري أن الملك نابو-كوردي-اوصر(الثاني)، قام باستخدام القير والآجر لتعلية الشوارع والأبنية وتبليط الأراضي وقام ببناء جسر بسبع دعامات ليمر عليه موكب الإله مردوك[72]، وبعد أن حلت روما

---

69 الطائي، ا. ع. (2006). ملامح من اصالة واثر التراث اللغوي والكتابي الرافديني في الحضارات الاخرى. مجلة التربية والعلم، (13) 12 ، ص 14.

70 عبد الكريم، ق. م. (2014). شذرات من كنوز التراث العراقي القديم في جوانب من العلوم والمعارف الإنسانية. مجلة عصور الجديدة، (4)15، ص 15.

71 كمونة، ح. عبد الرزاق. (2004). تباين أسس تخطيط المدن عبر التاريخ. مجلة المورد، 31 (2)، ص ص 3-31.

72 محمد، ع. غ. (2009). مسميات شوارع مدينة بابل في العصر البابلي الحديث (626-539 ق.م.). مجلة التربية والعلم، (16) 36، ص ص 48 -58.

محل أثينا كمركزا للعلم خلال التاريخ (27 ق.م – 324م)، برز في القرن الثالث قبل الميلاد المهندس والمعماري الروماني فيتروفيوس (Vitruvius) الذي وضع الأسس النظرية للأفكار التصميمية والمعمارية، وقد برعوا بكافة فروع الهندسة الإنشائية من تشييد المدن والطرقات والأقواس والقباب وأنظمة تصريف المجاري والمياه، والتي نشأت أصلا في حضارة وادي الرافدين[73] ، فقد ثبت في الهندسة المعمارية أن السومريين أول من انشأ الاقوس في البناء، وقد اخترعوه في الألفية الرابعة قبل الميلاد، ويصنع من الطوب (الطين)، والحجر لتدعيم البناء، ومن خلال بناء سلسلة متتالية من هذه الأقواس تمكن المهندسون من بناء أقبية كانت بمثابة أنفاق، فضلا عن أنها شكلت ممرات (Mark, 2019)، ويُظهر جلياً أن سكان حضارة بلاد الرافدين كانوا أول من شق الطرقات واستخدم القار في تبليط الشوارع، وبنا الأقواس والقباب وبذلك يكونوا قد سبقوا الرومان الذين تميزوا بإنشاء الطرق والشوارع والجسور والأقواس بقرون عديدة. وقد برع سكان بلاد الرافدين في النحت النافر على جدران القصور والمعابد، مثل نحت تماثيل الثيران المجنحة، وبوابة عشتار وتزيينها بالألوان، ونحت اللوحات التي تخلد مآثر الملوك من حروب وصيد واحتفالات دينية، وقاموا باستعمال الألواح كأرضية للنقوش البارزة التـي تمثل أوجه الحياة في البلاط الملكي، واستخدموا الأحجار في تبليط الساحات والشوارع مثل المنطقـة المقابلة لبوابة "نركال" في نينوى، وقد اقتبسها اليونان والرومان فيما بعد.

في السياق ذاته، فقد بلغت صناعات الغزل والنسيج والصباغة لدى البابليين والأشوريين تطورا كبيرا ودرجة متقدمة تكنولوجياً، وخاصة الصناعات الصوفية وصباغة التلوين فقد استخدموا أنواع متعددة من الألوان من بعضها من أصل نباتي وبعضها معدني، وكان السجاد عنصرا تجميليا لمظهر الترف وتكميليا للأبنية والقصور والمعابد، وللظهور بالمنظر اللائق بالمكانة السياسية والحضارية للبابليين والأشوريين بين الأمم الأخرى، وتعود صناعة السجاد اليدوي إلى حدود الألف الأول ق.م، وأشاد الإغريق والرومان بصناعة السجاد الآشوري والبابلي وذكروه في كتاباتهم "بالسجاجيد البابليـة"[74].

هناك جدل بين الباحثين حول تحديد أول من صنع السفن وتاريخ صنعها، فيشير البعض إلى أن المصريين القدماء كانوا رواد صناعة السفن، إذ صنعوا زوارق من القصب للنقل والتجارة في نهر النيل، وان مصر تمكنت في نهاية (الألف الثاني قبل الميلاد)، من صناعة السفن الحربية، كما وان الإغريق تعلموا بناء السفن الفينيقية وطوروها سنة (500 ق.م)، وفيما بعد جاء الرومان وشيدوا أسطولا بحريا وسيطروا على إقليم البحر الأبيض المتوسط[75]، لكن المدونات المسمارية والآثار بينت أن صناعة قوارب القصب ظهرت في بلاد الرافدين منذ حوالي (5500 ق.م) (Hirst, 2019)، ويُعتقد أن القوارب الصغيرة سهلت التجارة البسيطة والمهمة لمسافات طويلة في نهري

---

[73] كمونة، ح. عبد الرزاق. (2004). تباين أسس تخطيط المدن عبر التاريخ. مجلة المورد، 31 (2)، ص ص 3-31.

[74] كجه جي، ص. ا. (2002). الصناعة في تاريخ وادي الرافدين. بغداد، العراق: مطبعة الأديب.

[75] محمود، ش. عبد الباقي. (2012). صناعة السفن الحربية في البحر الابيض المتوسط وكيفية تطورها عند المسلمين خلال القرن الأول الهجري/ السابع ميلادي. مجلة جامعة كركوك للدراسات الإنسانية،العراق 7 (3)، ص ص 683-699.

دجلة والفرات إلى الخليج العربي، كما كشفت النصوص المسمارية أن السفينة الشراعية ظهرت لدى السومريين منذ حوالي (4000 سنة ق.م)، فقد تناولت معلومات مفصلة عن أكبر السفن المستخدمة لنقل المواد والبضائع التجارية التي بلغت (120 كوراً)، أي حوالي (12) طناً بمقاييسنا الحالية، وكانت أكثر السفن استخداماً ذات السعة (60 كوراً) أي (6) طن[76]، ولاشك بان ظهورها أحدث انقلاباً كبيراً في طبيعة العلاقات التجارية للعراق القديم، لقدرتها على الوصول إلى مسافات بعيدة حيث وصلت إلى موانئ (دلمون/ البحرين)، و (مجان/ عُمان)، و(ميلوخا/ وادي السند)[77]، وقد نشطت التجارة الخارجية في بلاد الرافدين للبحث عما افتقرت إليه من مواد أولية (الأخشاب، والأحجار، والمعادن)، ولقد نمت تجارتها في (الإلف الثالث والثاني قبل الميلاد)، مع ازدياد احتياجات الدولة والمجتمع، وقد استوردت بلاد الرافدين النحاس الخام من مجان (عُمان) وبلاد الأناضول وبلاد فارس ومصر[78]، وصدرت البرونز عن طريق البحر الأبيض المتوسط إلى مناطق بحر ايجة وأوروبا، فقد برع الاكديون في التعدين، ففي نص مسماري من (آيسن – لارسة) يتضمن مقادير (أربعة أعمدة من البرونز مزج بها سدس وزنها من القصدير). ويستدل من النص السومري بأن معادلة المزج كانت كما يلي: (6.5) وحدة من النحاس و (1) وحدة من القصدير و (0.5) وحدة من الفحم النباتي وأقل من (0.5) وحدة من مادة أخرى غير معروفة [79]، لذا يتضح أن السومريين كانوا الأوائل في صناعة السفن والتجارة والابحار، وأن تعدد مسارات الطرق ومواصلات التجارة مع البلدان الأخرى شكلت وسيلة لانتقال علوم صناعة السفن والعناصر الحضارية الرافدينية للحضارات الأخرى ومنها الإغريقية ثم الرومانية.

ومن خلال دبلوماسية العلم والتكنولوجيا والابتكار الرافدينية تغلغلت العناصر الثقافية وعلوم ومعارف حضارة بلاد الرافدين في الحياة اليومية لشعوب العالم، وقد تفاعلت وصارت جزءا من عالمنا المعاصر (ماتفيف، & سازونوف، 1991، ص 204)، فعلى سبيل المثال، خصص السومريون اله للطب، وكان يرمز له عبارة عن حيوانين خرافيين متقابلين يمسك كل واحد منهما بكلتا يديه سيفا تتوسطهما عصا تلتف حولها حيّتان من الأسفل إلى الأعلى، وقد اقتبس اليونان والرومان هذا الرمز من حضارة بلاد الرافدين وعرف عندهم الاله " أبولو " ثم الاله "اسكليبيوس" والذي كثيرا ما نشاهد تماثيله المصحوبة بالرمز نفسه المتمثل بالعصا التي تلتف حولها الأفعى[80]، وأصبح شعار السومريون في عصرنا شعار الصيدلة والدواء العالمي.

---

[76] كجه جي، ص. ا. (2002). الصناعة في تاريخ وادي الرافدين. بغداد، العراق: مطبعة الأديب.

[77] بوتس، د. ت. (2006). حضارة وادي الرافدين:الاسس المادية (ترجمة كاظم سعد الدين). بغداد، العراق: الهيئة العامة للاثار و التراث.

[78] الجبوري، ا.م.ح. (2017). عُمان في المصادر السومرية. مجلة كلية التربية الأساسية للعلوم التربوية والإنسانية، 32، ص 578 -591.

[79] كجه جي، ص. ا. (2002). الصناعة في تاريخ وادي الرافدين. بغداد، العراق: مطبعة الأديب.

[80] عبد الكريم، ق. م. (2014). شذرات من كنوز التراث العراقي القديم في جوانب من العلوم والمعارف الإنسانية. مجلة عصور الجديدة، (4)15، ص 19.

الفوادي، ث. ط. ف. (2020). الجذور التاريخية لدبلوماسية العلم والتكنولوجيا والابتكار في بلاد الرافدين وأثرها في الحضارة العالمية. الدراسات العربية الأوراسية، ١٠، ص ص ٦٦-١٠٥.

صورة رقم (٣). رمز أله الطب السومري المتمثل بالعصا التي يلتف حولها الثعبان

صورة رقم (٤). تمثال أله الطب عند اليونان يلتف حول العصا

صورة رقم (٥). رمز الصيدلة والدواء في العالم الحديث[81]

كما قام عالم الآثار العراقي طه باقر، بإعداد الكثير من الكلمات والمفردات التي استعارتها الحضارة اليونانية من التراث العراقي القديم، وانتقلت من خلال اليونانية إلى اللغة الانكليزية، منها أسماء المعادن والأبراج والنجوم والموازين والمقاييس وأسماء الكثير من الإعشاب والنباتات[82]، منها على سبيل المثال:

العربي	الانكليزي	الإغريقي	الاكدي
ذهب ، خرص	Khurasa	Chrusos	Vurasu
حشيشة للزوخا	Hyssop	Hussopos	Zupa
علكة، صمغ لاذن	Ladanum	ledanon	ladanu
نفط	Naphtha	naphtaos	Naptu
خرنوب، خروب	Carob	Charrouba	Varuba

[81] عبد الكريم، ق. م. (2014). شذرات من كنوز التراث العراقي القديم في جوانب من العلوم والمعارف الإنسانية. مجلة عصور الجديدة، 15(4)، ص ص 11-24.

[82] الطائي، ا. ع. (2006). ملامح من اصالة واثر التراث اللغوي والكتابي الرافديني في الحضارات الاخرى. مجلة التربية والعلم، (13) 12 ، ص 32.

الفوادي، ث. ط. ف. (2020). الجذور التاريخية لدبلوماسية العلم والتكنولوجيا والابتكار في بلاد الرافدين وأثرها في الحضارة العالمية. الدراسات العربية الأوراسية، ١٠، ص ص ٦٦-١٠٥.

كركم	Crocus	Krokos	Kurkanu
جص، جبس	Gypsum	Gypsas	Gassa
مر	Myrrh	Murra	Murru
قرن	Horn	Keras	Karnu
قياس وزن "منا"	Mina	Mina	Mina
قانون	Canor, cane	Kanna	Ganu
كرز	Cherry	Kerasos	Karshu
كمون	Cammin	Kuminon	Kamanu

وكذلك ينطبق الحال على أيام الأسبوع في عصرنا فهي ذات أصول أشورية وبابلية كونها تعود إلى آلهة الفلك السبعة لديهم: شمس (الشمس)، سين (القمر)، مردوخ (المشتري)، نيرغال (المريخ)، عشتار (الزهرة)، نابو (عطارد)، نينورتا (زحل)، وكذلك الأمر مع عدد شهور السنة، والـ 60 دقيقة في الساعة، والـ 60 ثانية في الدقيقة، وعدد ساعات النهار (24)، كلها انجازات أصيلة نابعة من حضارات بلاد الرافدين، وقد صار التخلي عن هذه الانجازات والتقسيمات صعب لأنها تقسيمات أساسية قد دخلت في لحمنا ودمنا (ماتفيف، & سازونوف، 1991، ص ص 205-208).

الخاتمة

نعم كل شئ بدأ في حضارة بلاد الرافدين قبل (6000 سنة قبل الميلاد)، فهم أول من أسس الحضارة، واخترع الكتابة، ودوّن التاريخ، ومارس الدبلوماسية، وعرف العلوم والمعارف والتكنولوجيا والابتكار، فان تسعة وثلاثون جانباً من جوانب الحضارة - نُسب الكثير منها لاحقاً إلى المخترعين اليونانيين - "39 أولاً"- ظهرت لأول مرة في حضارة بلاد الرافدين، وقد انتقلت تلك العلوم والمعارف والتكنولوجيا والابتكارات إلى الحضارات الأخرى، ومنها المصرية، واليونانية، والرومانية، وعليه يمكن أن نستنتج التالي:

1- أن مصطلح "دبلوماسية العلم والتكنولوجيا والابتكار" ظهر في القرن الحادي والعشرين وتحديدا في عام 2009، لكنها من حيث المفهوم والممارسة تعود بداياتها وجذورها التاريخية إلى حضارة بلاد الرافدين أي منذ (3500 سنة قبل الميلاد)، فقد عُثر على رسائل عديدة من ملوك وحكام الدول الأخرى يستعينون بالخبرات الطبية لبلاد الرافدين لمعالجة حاشيتهم الملكية، فقد استعانت مملكة ماري بمملكة أشور، ودلت نصوص مسمارية على وجود أطباء عراقيين في الدولة الحيثية (الأناضول)، وأيضا عُثر على رسائل في تل العمارنة في مصر تتكلم عن تواجد

أطباء عراقيين قدماء في مصر، وهذه أدلة وقرائن على تطبيقات وممارسات دبلوماسية العلوم والمعارف لحضارة وادي الرافدين مع الحضارة الأخرى.

2- شُيّدت على أرض العراق ست حضارات وإمبراطوريات هي (السومرية, والأكادية, والبابلية، والأمورية, والآشورية, والعربية العباسية)، وبفعل دبلوماسية العلم والتكنولوجيا والابتكار في بلاد الرافدين استمر هذا التواصل الحضاري والتبادل العلمي والثقافي بين تلك الحضارات، وشّكل نسيجا مترابطا فكل خيط فيه يكمل الخيط الأخر ويسنده ويلتحم معه ليُكون لونا أخر، وهكذا أثرت وتأثرت تلك الحضارات بما جاورها وعاصرها أو تلاها من حضارات.

3- أن أولى الحضارات التقنية الكبيرة ظهرت في بلاد الرافدين، إذ أن السومريون أول من وضع اللبنة الأولى للتقدم العلمي والتكنولوجي في المنطقة، وتطورت العلوم والتكنولوجيا خلال فترة أوروك (4100-2900 قبل الميلاد)، ومن خلال دبلوماسية العلم والتكنولوجيا والابتكار اخذ الانتقال التكنولوجي والتطور يطال المناطق المجاورة رويدا رويدا، وكان اختلاط الشعوب يسهل عملية انتقال تلك التقنيات، وقد استفادت كل المناطق من الحضارة التقنية الفريدة لبلاد الرافدين.

4- نجحت حضارة بلاد الرافدين في الترويج لعلومها، ومعارفها، وتكنولوجيتها، ولغاتها السومرية والبابلية، فقد استعملت الحضارات، المينوية (الكريتية)، والمصرية، الألواح الطينية للكتابة والتوثيق، وكذلك أُستخدمت اللغة البابلية في المراسلات والمخاطبات بين حكام وملوك المنطقة، الأمر الذي يعكس مدى نجاح دبلوماسية العلم والتكنولوجيا في بلاد الرافدين في فرض الابتكارات ذات المنشأ العراقي من مادة الكتابة (الرقم الطينية)، ونوع الكتابة (المسمارية)، واللغة البابلية (لغة العصر الدبلوماسية) في التعاملات السياسية والتجارية والدبلوماسية بين حضارات المنطقة.

5- ان الكتابة المسمارية وتطورها أعظم فضل للسومريين على الحضارة العالمية، إذ بفضلها شهدت الحضارة الإنسانية تطورا عظيما وانتقلت من العصر الحجري إلى العصر الذري، فلولا الكتابة لما تعلمت الشعوب الأبجديات الأخرى الأكادية، والآشورية، والفرعونية الهيروغليفية، والأوغاريتية، والفنيقية، والعربية، واليونانية، واللاتينية، ولما استطاع الإنسان نقل خبراته وأحداثه ومعارفه وعلومه إلى الأجيال اللاحقة، ولما وُجدت المدارس، والعلوم، والطب، والأدب، والفنون، وما كان للإنسان أن يعرف كل منجزات العلم الحديث.

6- أن تدوين التاريخ في منتصف الإلف الرابع قبل الميلاد يعد من أهم الانجازات الإنسانية والفكرية لحضارة بلاد الرافدين، من خلال توثيق مسلات النصر، وثبوت الملوك، وكتابة قصص الطوفان والخلق وكلكامش، وقد سبقت كتاباتهم الكتابات اليونانية بما يقارب (1500 سنة) بينما الحضارة اليونانية قد بدأت الكتابة في القرن التاسع والثامن قبل الميلاد، وان هيرودوتس "آب التاريخ"، ولد في القرن الخامس قبل الميلاد.

7- أن اثر دبلوماسية العلم والابتكارات لبلاد الرافدين واضحا على الحضارة المصرية، فمن خلال اللقى، والآثار، والأختام الاسطوانية والمنبسطة، والعناصر الفنية، بدءً من الكتابة

الهيروغليفية، وعجلة الفخار، و ورؤوس الصولجان المصرية التي لا تفترق شيئا عن البابلية، وتماثيل الإلهة التي وجدت في القبور المصرية، جميعها عناصر ثقافية ذات أصل سومري وبابلي.

8- أن اثر دبلوماسية العلم والتكنولوجيا والابتكار لبلاد الرافدين واضحا على الحضارة اليونانية، إذ دونت الحضارة المينوية (الكريتية)، الوثائق على ألواح طينية وهي تكنولوجيا سومرية، كما استخدموا اللغة الاكدية (البابلية)، في المراسلات، كما أن الإغريق في القرن الثاني قبل الميلاد بعد أن سكنوا في بابل أرسلوا أولادهم إلى المدارس البابلية لتعلم الكتابة واللغة والتدرّب على استنساخ النصوص المدونة باللغة السومرية. كما وان البابليين والأشوريين وضعوا أسس القوانين الرياضية في الإلف الثاني قبل الميلاد، وبذلك يكونوا قد سبقوا فيثاغورس وإقليدس بـ(1500) عام، وان ما قام به علماء الإغريق هو إعادة اكتشاف تلك العلوم والمعارف بعد (15) قرناً.

9- فضلا عن أن ما اقتبسته الحضارة الرومانية من الحضارة اليونانية وطبقته إلى حد كبير، من علوم، وتكنولوجيا، ومعرفة، وأدب، وفن، وهندسة معمارية، يعود في النهاية إلى فضل حضارة بلاد الرافدين على اليونان نفسها، إذ أن بلاد الرافدين كانوا أول من شق الطرقات واستخدم القار في تبليط الشوارع، وشيدوا الأقواس والقباب، وخططوا المدن، ونحتوا التماثيل، وصنعوا السفن ، وغيرها من العلوم والمعارف والتكنولوجيا وقد تم اقتباس واخذ الكثير منها من قبل الرومان.

10- أن إسهامات حضارة بلاد الرافدين في الحضارة العالمية عظيمة جدا لان معظم التكنولوجيا الأساسية التي دعمت الحياة البشرية كي يبدأ الإنتاج الصناعي في السيطرة على عالمنا المعاصر تم ابتكارها لأول مرة في ذاك الجزء من العالم، كما وان العلوم والإحداث والمعارف والابتكارات التي وثقتها المدونات والألواح الطينية السومرية شكلت مصدرا حضاريا وثقافيا وعلميا وروحيا واجتماعيا للحضارات الأخرى، الأكادية والآشورية والبابلية والمصرية واليونانية والهندية ولأجيال وأجيال من بعدهم. حتى أن سكان بلاد الرافدين صمموا مفهوم الوقت نفسه، وابتكروا نظام الستين، والـ 60 دقيقة، والـ 60 ثانية، وعدد ساعات اليوم (24)، وعدد أيام الأسبوع، وعدد أشهر السنة، وهي انجازات من الإرث السومري والبابلي والأشوري، وقد تغلغلت تلك العناصر الثقافية وانتقلت وتفاعلت مع عالم اليوم وصارت جزءا منه بفعل دبلوماسية العلم والتكنولوجيا والابتكار لحضارة بلاد الرافدين.

المصادر والمراجع

1. Berkman, P.A. (2018, June 12). Could science diplomacy be the key to stabilizing international relations? Retrieved from https://theconversation.com/could-science-diplomacy-be-the-key-to-stabilizing-international-relations-87836.
2. Koppelman, B., Day, N., Davison, N., Elliott, T., & Wilsdon, J. (2010). New frontiers in science diplomacy: navigating the changing balance of power. Retrieved from https://royalsociety.org/~/media/Royal_Society_

Content/policy/publications/2010/4294969468.pdf.

3. Nieto, G.G. (2018). La diplomacia científica: el momento de México. *Asociación De Escritores Diplomáticos*, 66 (Abril-Junio).
4. Turekian, V. (2018). *The Evolution of Science Diplomacy*. Glob Policy, 9, 5-7. doi:10.1111/1758-5899.12622.
5. Lorenci, M. (2013). *La madre de todas las civilizaciones*. Diario EL CORREO. Retrieved from https://www.elcorreo.com/vizcaya/v/20130 327/cultura/madre-todas-civilizaciones-20130327.html
6. La Diplomacia Babilónica. (2017). Retrieved from https://hinocinte.blogspot.com/2017/11/la-diplomacia-babilonica.html
7. Mark, J. (2019, October 11). Mesopotamian Science and Technology. Retrieved from https://www.ancient.eu/Mesopotamian_Science
8. Ann Wendy Blog. (2013, February 2). Sumerian: Science & Technology. Retrieved from http://www.fathis.com/wendy-ann-blog/sumerian-science-technology
9. Ancient Mesopotamia: Science, Inventions, and Technology (n.d.). Retrieved from http://www.ducksters.com/history/mesopotamia/ science_and_technology.php
10. Kiger, P.J. (2019, August 01). 9 Ancient Sumerian Inventions That Changed the World. Retrieved from https://www.history.com/news/sumerians-inventions-mesopotamia

11. ماتفيف، ك.، سازونوف، أ. (1991). حضارة ما بين النهرين العريقة (ترجمة الدكتور حنا آدم). دمشق، سوريا: مطبعة دار المجد.

12. ديورانت، و. وا. (د. ت.). قصة الحضارة الشرق الأدنى (ترجمة محمد بدران) (مج. 1، ج. 2). بيروت، لبنان: دار الجيل للنشر .

13. Pouyan, N. (2016). Mesopotamia, the Cradle of Civilization and Medicine. *World Journal of Pharmaceutical Research*, 5. pp. 192-225.
14. Comité Español del ACNUR. (2016, April). Principales aportaciones de Mesopotamia y Egipto al mundo contemporáneo. Retrieved from https://eacnur.org/blog/principales-aportaciones-mesopotamia-egipto-al-mundo-contemporaneo/
15. Slawson, L. (2020, January 27). Greek Influence on the Roman Empire. Retrieved from https://owlcation.com/humanities/Greek-Influence-on-Rome

16. Hirst, K. (2019, November 12). Mesopotamian Reed Boats Changed the Stone Age. Retrieved from https://www.thoughtco.com/mesopotamian-reed-boats-17167

BIBLIOGRAPHIC REFERENCES

1. Berkman, P.A. (2018, June 12). Could science diplomacy be the key to stabilizing international relations? Retrieved from https://theconversation.com/could-science-diplomacy-be-the-key-to-stabilizing-international-relations-87836.
2. Koppelman, B., Day, N., Davison, N., Elliott, T., & Wilsdon, J. (2010). *New frontiers in science diplomacy: navigating the changing balance of power*. Retrieved from https://royalsociety.org/~/media/Royal_Society_ Content/policy/publications/2010/4294969468.pdf.
3. Nieto, G.G. (2018). La diplomacia científica: el momento de México [Scientific diplomacy:the case of Mexico]. *Asociación De Escritores Diplomáticos*, 66 (Abril-Junio). (In Spanish)
4. Turekian, V. (2018). *The Evolution of Science Diplomacy*. Glob Policy, 9, 5-7. doi:10.1111/1758-5899.12622.
5. Lorenci, M. (2013). *La madre de todas las civilizaciones* [The mother of all civilizations]. Diario EL CORREO. Retrieved from https://www.elcorreo.com/vizcaya/v/20130327/cultura/madre-todas-civilizaciones-20130327.html (In Spanish)
6. La Diplomacia Babilónica [Babylonian Diplomacy]. (2017). Retrieved from https://hinocinte.blogspot.com/2017/11/la-diplomacia-babil onica.html (In Spanish)
7. Mark, J. (2019, October 11). Mesopotamian Science and Technology. Retrieved from https://www.ancient.eu/Mesopotamian_Science
8. Ann Wendy Blog. (2013, February 2). Sumerian: Science & Technology. Retrieved from http://www.fathis.com/wendy-ann-blog/sumerian-science-technology
9. Ancient Mesopotamia: Science, Inventions, and Technology (n.d.). Retrieved from http://www.ducksters.com/history/mesopotamia/science_ and_technology.php
10. Kiger, P.J. (2019, August 01). 9 Ancient Sumerian Inventions That Changed the World. Retrieved from https://www.history.com/ news/

sumerians-inventions-mesopotamia
11. Matveyev, K. & Sazonov, A. (1991). Ancient Mesopotamia. Damascus, Syria: Dar Al-Majd press.
12. Durant, W. Wh. (n.d.). The story of the Near East civilization (Mohammed Badran Trans.). Beirut, Lebanon: generation publishing house.
13. Pouyan, N. (2016). Mesopotamia, the Cradle of Civilization and Medicine. *World Journal of Pharmaceutical Research*, 5. pp. 192-225.
14. Comité Español del ACNUR. (2016, April). Principales aportaciones de Mesopotamia y Egipto al mundo contemporáneo [Main contributions of Mesopotamia and Egypt to the contemporary world]. Retrieved from https://eacnur.org/blog/principales-aportaciones-mesopotamia-egipto-al-mundo-contemporaneo/ (In Spanish)
15. Slawson, L. (2020, January 27). Greek Influence on the Roman Empire. Retrieved from https://owlcation.com/humanities/Greek-Influence-on-Rome
16. Hirst, K. (2019, November 12). Mesopotamian Reed Boats Changed the Stone Age. Retrieved from https://www.thoughtco.com/mesopotamian-reed-boats-171674

معلومات عن المؤلف

دبلوماسي
ثائر طاهر فاضل الفوادي
وزارة خارجية جمهورية العراق
بغداد، جمهورية العراق
talfuady@yahoo.com

Information about the author

Diplomat
Thaer Taher Fadhil Al-Fawadi
Ministry of foreign Affairs of the Republic of Iraq
Baghdad, Republic of Iraq
talfuady@yahoo.com

Информация об авторе

Дипломат
Таер Тахер Фадель Аль-Фавади
Министерство иностранных дел Республики Ирак
Багдад, Республика Ирак
talfuady@yahoo.com

الكشف عن تضارب المصالح: *يعلن صاحب البلاغ عن إنعدام تضارب المصالح.*

Conflicts of Interest Disclosure: *The author declares Conflicts of Interest Disclosure.*

Раскрытие информации о конфликте интересов: *Автор заявляет об отсутствии конфликта интересов.*

УДК 327

Original Paper
Оригинальная статья

EXPLAINING INTERNATIONAL NEGOTIATION

S. Sekhri
University of Algiers 3 Ibrahim Sultan Cheibout
sofiane.sekhri@aol.co.uk

Submitted: May 10, 2020 *Поступила в редакцию: 10 мая 2020 г.*
Reviewed: May 24, 2020 *Одобрена рецензентами: 24 мая 2020 г.*
Accepted: May 29, 2020 *Принята к публикации:29 мая 2020 г.*

Abstract

International negotiation has been traditionally examined within the framework of general studies related to international conflict, foreign policy and the diplomatic function or in the context of researching the strategies of commercial enterprises and international companies when dealing with other actors in global politics.

However, it is a rare occurrence to find scientific papers specializing in international negotiation that go into detail in order to give a thorough and accurate picture of the subject. Thus, by employing the inductive approach, this scientific contribution looked at the deep details of international negotiation from various perspectives with the intention of providing an indepth synthesis and a specialized outlook which lead to the full understanding of the issue. Even though this inductive reasoning did not neglect the fact that international negotiation is interconnected with diplomacy, foreign policy and international relations, the paper's major focus was the anatomy and illustration of the key conceptual issues and practical procedures related to international negotiation with the purpose of assisting students and researchers in conducting investigations and workshops on case studies.

In order to carry out this task, the article deals with international negotiation from various levels and angles; this includes the definition of international negotiation, its main characteristics and foundations, the key actors concerned with it, its forms and tools, in addition to its terms and key requirements for its success. The paper explores as well the different strategies employed in international negotiation and clarifies the main stages of the negotiating process.

Keywords: *International negotiation, types, characteristics, foundations, terms, strategies, stages*

For citation: *Sekhri, S. (2020). Explaining International negotiation. Eurasian Arabic Studies, 10, 106-122.*

ОБЪЯСНЕНИЕ ОСНОВ МЕЖДУНАРОДНЫХ ПЕРЕГОВОРОВ

С. Сахри

Университет Алжира 3 им. Ибрагима Султана Шийбута

sofiane.sekhri@aol.co.uk

Аннотация

Международные переговоры традиционно рассматривались в рамках общих исследований, связанных с международными конфликтами, внешней политикой и дипломатии, или в контексте изучения стратегий коммерческих предприятий и международных компаний при взаимодействии с другими участниками глобальной политики.

Однако в настоящее время следует отиметить недостаточное количество научных работ, в которых детально и всестороннне рассматриваются сущность и характерные черты понятия «международные переговоры».

В данной статье подробно анализируются термин, типология, основные черты и ключевые понятия «международных переговоров», а также основные стратегии проведения международных переговоров. Несмотря на то, что международные переговоры тесно связаны с дипломатией, внешней политикой и международными отношениями, в статье особое внимание уделяется ключевым вопросам и практики проведения международных переговоров, что послужит основой для дальнейших исследований в этой сфере.

Для выполнения этой задачи в статье рассматриваются международные переговоры с разных уровней и точек зрения, в том числе, значение международных переговоров, их основные характеристики и основы, заинтересованные стороны, их формы и инструменты, а также условия и основные требования к их успешности.

В статье также рассматриваются различные стратегии, используемые в международных переговорах, разъясняются основные этапы переговорного процесса.

Ключевые слова: *международные переговоры, виды, характеристики, основы, термины, стратегии, этапы*

Для цитирования: *Сахри С. Объяснение основ международных переговоров // Арабистика Евразии. 2020. № 10. С. 106-122. (на английском языке)*

INTRODUCTION

Man has resorted to negotiations since the primitive groupings of humankind, with the aim of agreeing on the division of resources and the demarcation of borders between primitive tribes and peoples. All the major milestones that led to fundamental transformations and shifts in international relations were the product of intense negotiation between the significant international actors that characterized each stage, commencing with the Westphalia Agreements, passing by the agreements of colonization and decolonization and the division of spheres of influence among the great powers, to the arms and disarmament agreements along with treaties related to trade, environmental and human rights issues as well as other matters[1].

Consequently, international negotiation has always been a means to resolve crises, settle disputes and organize the international system, which raises several questions about it, such as, what is international negotiation? And, what are its main forms, characteristics, foundations, terms, strategies and stages?

MATERIALS AND METHODS

To answer these questions, the article employed the inductive approach that relies on observing the sub-phenomena that make up the general phenomenon and collecting data concerning the theme with the intention of building up a total picture, i.e. moving the study from the lower sub-subjects to the general issue and from the part to the whole and from simple partial cases to the general and common rules. With other words, the inductive method simply means judging the whole of what is in its many parts as a way to help offering results that are more general than the narrowly focused introductions.

To carry out this methodological choice, this study has broken down the phenomena of international negotiation into several parts that mainly branched into the meaning

[1]The Peace Treaties of Westphalia or the Treaties of Münster and Osnabrück signed in 1648 took five years of negotiations. See on this subject, Derek Croxton: "The peace of Westphalia of 1648 and the Origins of Sovereignty": *The International History Review*: Vol. 21, N. 3: London and New York: Taylor & Francis. Ltd: September 1999: PP 569-591. The colonial partitioning of Africa was partly the outcome of negotiations between European powers in the Berlin Conference of 1884-1885 on the scramble for Africa. On the subject of arms control negotiations, documents related to major negotiated agreements are available in a survey conducted by the Stockholm International Peace Research Institute (SIPRI). For further information on the subject see, Jozef Goldblat: *Arms Control: The New Guide to Negotiations and Agreements*: The Stockholm Peace Research Institute (PRIO): Sage Publications: 2002.

of international negotiation, its types, characteristics, foundations, conditions for its success, strategies and stages. The course of research required a survey of some literature and works that dealt with these sub-issues from the political, diplomatic and commercial aspects. In this endeavor, this scientific contribution provided a conceptual and practical detail for each part separately, before giving a general and comprehensive picture regarding international negotiation as a whole, in both conceptual and practical aspects. This path culminated by ending the research, notably in the conclusion, with an emphasis on the relationship between international negotiation and other broader spheres, moving hierarchically from diplomacy to foreign policy into international relations, which is the broadest whole where international negotiation, the diplomatic function and foreign policy actions are taking place.

The Meaning of International Negotiation:

Despite that the tasks of diplomats can be broken into six key domains: ceremonial, management, information/communication, protection, normative/legal and international negotiation, a strong linkage between diplomacy and international negotiation remains as diplomacy in its simplest meaning is generally defined as the art and practice of negotiating and the art of managing international relations through international negotiation (Barston, 2014, p. 2). The controversial issue here is that diplomacy means international negotiation; however, the opposite is not accurate seeing that international negotiation does not necessarily means diplomacy as the conduct of international negotiation does not strictly rely on diplomatic tools since it requires the gathering of all foreign policy instruments, including economic, cultural, military as well as diplomatic. For instance, during the course of international negotiation states might employ promises, aid, pressure, bluff, threat, deterrence and all tools of stick-carrot in all fields, including the military, in order to direct the path of negotiation to the desired outcomes that serve the national interest of the state (Shimko, 2017, pp. 93-117).

International negotiation is a multidisciplinary sphere relevant to several academic fields including, business, management, communication, law, psychology, political science, international studies and conflict resolution. This multidisciplinary scholastic character led researchers to define international negotiation from different angles and perspectives, the most important of which are the following:

- International negotiation is the stage that precedes an international agreement on settling a conflict or establishing cooperation.
- It is a form of peaceful interaction between states.

- It is a form of international communication.
- It is a game comprising a set of players, moves/strategies, and outcomes/ payoffs.
- It is a pulling and hauling game within the international legal norms aiming at achieving the goals and gains of the state by employing psychological factors and exploiting internal and external capabilities of the state.
- It is a means of settling international disputes amicably.
- It is a procedure to bring the power of the argument replaces the argument of power or force in international relations.
- It is the stage that precedes a state decision with respect to a foreign policy issue.
- It is a path through which proposals and perceptions are presented and points of divergence and convergence are debated and amendments as well as corrections are provided in order to reconcile views.
- It is the art of reconciling conflicting interests.
- It is a tool for organizing business relationships and sharing profits between companies and other economic actors in a friendly manner.
- It is an essential mechanism for maintaining a dynamic international stability through the enhancement of the international system's capability to deal with uncertainty, unpredictability and uncontrollability (Starkey, Boyer, & Wilkenfeld, 2015, pp. 1-8; Mautner-Markhof, 1989, pp. 1-4).

Based on the above selected definitions, the following comprehensive definition can be provided: International negotiation is the art and the process of talks, consultations, discussions and bargains between conflicting or rival parties on common issues of conflicting interests. As an art and process, international negotiation has its own roots, actors, forms, rules, norms, terms and stages.

Types of International Negotiation:

International negotiation is conducted by accredited representatives such as heads of states and governments, foreign ministers, the executives, ambassadors, heads of diplomatic missions, special envoys, parliamentarians, managers, consultants and experts.

The types of international negotiation differ according to the nature and intensity of the negotiation or according to the number of parties involved in the negotiating course. Moreover, the tools used in the negotiation and the outputs of the negotiating process are also crucial determinants in the classification of negotiation types. The following forms are highly significant in this context:

1- Oral Talks, which could be later, recorded in written reports and records.

2- Written Negotiations, through which diplomatic notes and reports are exchanged between negotiating parties.
3- Soft Negotiation, which occurs when the opponent party is a gentle style negotiator and open for concessions and compromises.
4- Hard Negotiation, which occurs when the opponent party is a hard and stiff negotiator who is not ready for concessions and compromises, this behavior put the other party in a minimal choice situation, namely, 'you take it or leave it'.
5- Bilateral Negotiation, which includes two direct parties, regardless of the involvement of other parties acting as mediators or conducting good offices role.
6- Multilateral Negotiation, involving more than two direct official parties.
7- Power-Based Negotiation, which occurs when the state imposes its plan of action during negotiation through threat, deterrence and violence.
8- Right-Based Negotiation, which is distinguished with its resort to the power of law, such as invoking the courts and arbitration, in order to solve the negotiated issue.
9- Interest-based Negotiation, which is a negotiation that mainly revolves around the interest and how to reach an agreement that, satisfies the needs and interests of the parties. The interest in this type of negotiation is at the same time a need, an issue and an objective.
10- Distributive Negotiation, which is a zero-sum game negotiation with a win-lose outcome in which each side wants more than half of the pie, with other words, the gains of one party in the negotiating process are offset by absolute losses for the other side. In this form of negotiation, the parties involved become more competitive and contentious.
11- Integrative Negotiation, which is a non-zero sum game negotiation with a win-win out come. This type of negotiation occurs when negotiating parties share gains and profits and strive hard to reach mutually beneficial settlement. This form of negotiation reflects the true spirit of negotiation because, unlike war, international negotiation seeks to reach a common agreement, not victory (Schneider & Honeyman, 2017; Kremenyuk, 2003).

The Main Characteristics of International Negotiation:

In relation to the main characteristics of international negotiation, the following points can be emphasized:
1- Intensification and complexity of relationships between international actors lead to conflict and cooperative behaviors, geographically, economically, culturally, militarily and diplomatically, therefore, this trend of intensification and complexity widens the use of international negotiation in international relations.

2- International negotiation is an integrated and ongoing process rather than fragmented and separate activities.
3- International negotiation is a potential process whose outcomes are uncertain and not known in advance.
4- International negotiation is voluntary and not compulsory.
5- International negotiation is subject to materialistic and realistic considerations both internal and external, and is as well subject to considerations related to the nature of negotiators in terms of psychological training and negotiation skills.
6- The negotiator's field of formation and expertise affects the course of negotiation, as the lawyer's behavior differs from that of the businessman during negotiation, and the behavior of the politician differs from that of the lawyer's or economist.
7- Perceptual interactions between negotiators are significant in determining the course of negotiation as any misinterpretation of the other party's behavior leads to inappropriate reactions and affect the negotiating process.
8- Despite that negotiations are supposed to be subject to certain specific technicalities, the national character and the cultural setting of the state have an enormous effect on the negotiating style and behavior of the negotiator (Cohen, 2002).

The Major Foundations of International Negotiation:

As a give and take interaction, international negotiation requires five main bases:

1. The Negotiating Issue:

Negotiations revolve around a particular issue or topic; political, geographic, economic, military or humanitarian. International negotiation is conducted to conclude an agreement, resolve a conflict or face an emergency crisis. Negotiations can also be conducted to extend an agreement or contracts or to normalize a certain relationship or establish a new relationship.

2. The Negotiating Parties:

As mentioned previously, negotiations can be bilateral or multilateral. Negotiations might include parties that are directly concerned with negotiations called direct parties, whilst, negotiations could also include indirect or third parties such as pressure and good offices parties as well as mediators. Moreover, negotiations could be under the auspices of an international organization or in the framework of a regional or international congress and summit.

3. The Negotiating Objective:

It is a set of desires for which programs, plans and strategies are allocated to achieve them during negotiating sessions or at the end of negotiations because when

negotiating there are interim goals associated with sessions and rounds of negotiation and there are general and final goals that appear with the end of rounds of negotiation.

4. The Negotiating Information:

This means to be aware about minimal information regarding the negotiating issue, the negotiating parties and the negotiating objective. As a negotiator, it is crucial to set your own objective but, in meantime, to be informed about other's objective.

5. The Negotiating Power/Authority:

This means the limit of authority and delegation granted to each negotiator in the framework permitted by the parties he/she represents or by international laws and norms. On the other hand, a negotiator can build negotiation power and strengthen negotiating capabilities through three main power sources: (a) a strong BATNA, .i.e. preparing a *Best Alternative To the Negotiated Agreement*, as the existence of an outside alternative strengthens the bargaining power and places the negotiator in a comfortable position compared with those with limited or no alternative choice, (b) role power, which occurs when the negotiator occupies a highly ranked and prestigious position that promotes his/her negotiating stance and esteem compared with those sitting with him/her around the table of negotiation, and (c) psychological power, which occurs when the negotiator manipulates his/her opponents psychologically by creating and establishing a fake feeling that he/she is more advanced in terms of strength (M&A Directions: Preparing for Negotiations, 2017; Power in Negotiation, 2019).

Terms of Successful Negotiation:

Successful negotiation occurs when all negotiating parties receive the largest possible share of profits and gains. However, assessing the success of any agreement is not limited to the agreement's items and its implications, but is also linked to the extent of respect for the implementation of the agreement and adherence to its articles in the medium and long term.

Generally, preparing and achieving a successful agreement requires successful negotiation, and the success of the negotiating process requires, in turn, creating conditions and terms that guarantee this success. In this framework, a successful negotiation needs the following conditions and requirements:

- All parties should be convinced to be engaged in negotiating process, which itself requires recognizing the existence of crisis and the necessity to resolve it.
- A good selection of the appropriate time for the start of negotiations.

- All parties should demonstrate a desire to find balanced and acceptable solutions and a willingness to search for solutions with non-zero payoffs. And as John F. Kennedy said in one of his famous quotes: “You cannot negotiate with people who say what's mine is mine and what's yours is negotiable" (Kennedy, 1961).
- A minimum level of trust between the negotiating parties.
- The flexibility and non-hardening of the negotiating parties.
- The organization of preliminary and friendly meetings to ease the tension between conflicting or competing parties before the official start of negotiations.
- Determining the nature of the conflict or dispute and identifying the roots and causes as well as the most significant actors concerned with it.
- A deep look at the official documents and international commitments related to the matter in dispute or under negotiation.
- To go back to the precedent agreements and solutions on similar contentious issues.
- Depicting a range of possible proposals in line with the international legal frameworks and the possible needs of negotiating parties.
- To begin discussing the issues of simple or small and less argumentative and leave the complex issues to a later stage.
- Rounds of negotiations should be limited on the topics in the agenda and not to discuss issues outside the agenda programmed for each round.
- Secrecy to keep negotiation away from external influences and other international pressures and interests.
- Holding negotiations in a short period and a rapid completion of the resolutions of the negotiating results in order to impede outsiders or new conditions to create new tensions
- At last, the successful negotiators are those who hold reliable sources of intelligence and have the ability to gather, organize and widely exploit the information data. Besides, the mastery of technical reports reading and the creativity in thinking by preparing alternative strategies and tactics constantly are as well key elements in negotiation succeeding. Moreover, the success of any negotiated agreement is also assessed according to its effectiveness in terms of practical and actual application, in addition to its flexibility in adapting with the even most unusual situations (Cihosz, 2017).

International Negotiation Strategies:

With regard to strategies, these range from cooperative and conflict-based strategies to bluff, deterrence and psychological manipulation. Among the prominent are:

1- The Strategy of Cooperation:

This includes the establishment of common interest relations with the opposite side, to expand cooperation with opponents in new areas, to deepen relationship if cooperation already existed or provide grants and assistance to competing parties. The side that employs this type of strategy should acts rather than reacts by offering rewards to bribe opponents and developing an open and integrated working relationship with other parties.

2- **The Strategy of Anticipation:**

In this case, the negotiator put himself/herself in the other party's shoes by predicting their possible tactics and strategies. This approach requires the gathering of maximum information about the opponents.

3- **The Strategy of Gaining Confidence:** In order to reduce tension or achieve the most gains, the negotiator attempts to build and gain the opponent's confidence by several ways including the build-up of personal and informal relationships with the opponent's negotiating team or through the employment of what is called 'Mirroring Tactic' by which the negotiator mirrors and approves the opponent side's behaviors, viewpoints and statements in order to gain their confidence.

4- **The Strategy of Deadlines:**

In this case, the negotiator uses concrete or artificial timeframes in order to apply pressure to the other parties and push them to make rush and uncalculated decisions.

5- The Strategy of Attrition/Exhaustion:

This includes draining the time of opponent through extending negotiating time for the purpose of exhausting the opponent, or draining the opponent's effort by dumping it into false debate or into elements that do not serve the negotiating issue, as well as draining the opponent's financial resources by pressing for practices that increase spending on the negotiating process.

6- The Strategy of Dispersion:

This aims at dispersing the other negotiating parties or dispersing the ranks and members of the opponent's negotiating team.

7- The Good Guy/Bad Guy Strategy:

This approach is employed when the same negotiating side adopts a two-role division by which the good negotiator/negotiators supports the conclusion of the contract and serves to build trust with the opponent side, whilst, the bad negotiator/negotiators from the same team continually rejects deals and solutions in order to trick the opponent side and keep them in constant pressure and doubt.

8- The Strategy of Psychological Destruction:

It is a psychological war or manipulation that aims to strike the hopes and aspirations of the adversaries through obstacles and problems that make the opponent doubt about the possibility of reaching the negotiating objective.

9- The Brinkmanship Strategy:

This approach seeks the achievement of advantageous results and the forcing of the opponent to back down and make concessions by the use of fear and intimidation tactics that pushes dangerous situation to the brink. It is partly a deterrent bluff strategy that forces the other party to chicken out and give up resistance (Jeong, 2016; Gate, 2011, p. 240; Goldman, 1991, p. 83; Coburn, 2012).

The Negotiating Process Stages:

There is no general agreement on the major steps and stages of international negotiation for the reason that international negotiation differs according to the nature of the negotiating files, issues and fields.

These are the most prominent classifications of the negotiation process and stages:

The First Notion:

1- The stage of information gathering.
2- The stage of submitting information.
3- The stage of proposals exchange.
4- The initial agreement on the general framework of the proposals.
5- In case of problems, this would turn into the stage of reservation and rejection or the dissolution of the negotiations. In case of acceptance, the negotiations move to the penultimate stage which is the stage of finalization and final revision.
6- The final agreement.

The Second Notion:

1- Identifying and diagnosing the negotiating issue.
2- Creating the climate for negotiation.
3- The acceptance of negotiations by the concerned parties.
4- Preparing the actual negotiating process.
5- Starting the negotiations sessions.
6- Reaching a final agreement.

The Third Notion:

1- Pre-Negotiation: Agreeing about the necessity for negotiation and the setting of negotiation agenda including the venue, the timing and the size of delegations.
2- Conceptualization: Framing the key issues and major aspects of the negotiation.

3- Setting the Details: Discussing key issues, solving the problems and completing the agreement.

4- Follow-Up: Since the success of negotiating an agreement is not limited to its signing, but it extends to its implementation, the negotiating doors must be kept open even after the accomplishment of the agreement, and this is in order to follow up the implementation of the agreement and to be prepared for any review or renegotiation imposed by changes in circumstances.

The Fourth Notion:

1- Preparation and Planning: Identifying the issue subject to negotiation and setting the purpose for this negotiation and its frame.

2- Determination of Ground Rules: Defining the negotiation rules, limits and procedures.

3- Clarification and Justification: Exploring and establishing the needs and demands.

4- Bargaining and Problem Solving: Settle differences and agree on ways to meet the demands and needs.

5- Closure and Implementation: Signing and approving the final agreement and proceeding to follow up the measures and conditions for its implementation (Berridge, 2015, pp. 25-98, Watershed Associates, 2020; Negotiation Experts, 2019).

Despite the above-mentioned minor and partial dissimilarities, international negotiations mostly take the following path:

- Following the states parties acceptance to enter into negotiations on a specific negotiating issue, the negotiating framework is determined and negotiation could be undertaken in oral or in written notes or through mediation, whether collective mediation; for instance a group of experts, or individual mediation; to be exact a person known for his/her weight and mastery of the matter, or a country that has weight and credibility or moral authority over the conflicting parties. Mediation could also be conducted by an organization renamed for its international and regional prestige.

In this framework, the mediator is an active neutral and confident participant in the negotiations who has broad rights and specific tasks. The mediator can lead negotiations and follow them from start to finish and is able to make suggestions and recommendations. On this subject, mediation and arbitration should not be confused, as contrary to mediators whose judgments in the negotiating process are not legally binding, the conflicting parties are committed to accept the arbitrators' decisions (Shamir & Kutner, 2003, pp. 1-51).

Besides mediation, international negotiations can be preceded or interspersed by third-party friendly efforts aimed at calming the situation and reducing tensions. These efforts are called good offices and are considered as attempts to facilitate and strengthen the rapprochement between conflicting parties.

In certain cases, good offices pave the way for the acceptance of certain mediation and, through good offices; proposals are presented to the negotiating parties although the proposals linked to good offices are generally non-mandatory (Grant & Barker, 2009, pp. 247-248).

- After setting the negotiation framework, the parties agree on the venue and the date of the negotiations, after which each party prepares the documents related to the demands, needs, points of convergence and differences.
- Afterwards, the outline of the agenda is determined according to the negotiation rounds and the needs of the parties. Specialized technical committees shall be appointed to oversee and implement the decisions and recommendations of the negotiation rounds. Negotiations shall continue until a joint statement or document containing the terms and conditions of the agreement is reached in preparation for a more comprehensive and detailed agreement, namely, the final and formal agreement.

In this context, international negotiation is subject to the principle of the absolute will of the states. That is why the negotiation process can be interrupted and ceased, although, negotiations can be resumed in other conditions, either by returning to the starting point and resuming negotiation of all the fields and files or resuming negotiation from where negotiations rounds stopped. This corresponds to the process of withdrawal in international negotiation, which can take two basic forms; (i) withdrawal from the rounds and items that are subject to disagreement, or (ii) withdrawal from the negotiation altogether (Lutz, Venter, & Dean, 2019, p. 223).

RESULTS

This study has reached a set of the following major results:

- International negotiation is a field related to various disciplines of knowledge and numerous sectorial domains.
- International negotiation takes several forms that differ according to the different ways it is performed, its nature and the nature of its parties, the number of actors involved in it, its tools, means and outcomes.
- International negotiation is a voluntary option linked to the will and legal authority of states emanating from national sovereignty and its course is subject to a set of material and non-material considerations, which makes its results unknown in advance.

- International negotiation is based on a set of fundamental pillars linked to the negotiating issue, parties, objective, information, and authority/power.
- The success of the negotiation process is linked to the pre-negotiation stage, the progress of the negotiating course, and the post-negotiation phase.
- The success of the negotiating process requires the goodwill, building bridges of trust between the concerned parties, good selection of time frames, the mastering of negotiation files, the good management of negotiating rounds, the effectiveness and proficiency of negotiators.
- The strategies used in negotiation apply multiple mechanisms and measures, including interactive, cooperative, integrative, competitive, proactive, deterrent, obstructive, penetrative, destructive, tiring and deceptive.
- The stages of the negotiating process, and despite their differences from one issue to another and from one file to another, generally share their transition from the stage of collecting data and parties gathering, to the stage of identifying points of tension and disagreement, then the phase of proposing alternatives and solutions, until the stage of the mutual agreement, and eventually, the stage of officializing and ratifying the final agreement.
- Ultimately, assembling the previously mentioned parts, according to the steps of applying the inductive approach, leads to a holistic framework called the phenomenon of international negotiation, which is an international behavior that includes a set of components comprising a range of characteristics, rules, norms, types, foundations, strategies, and stages.

CONCLUSION

The previously made interpretation on the subject of international negotiation explained the most significant conceptual frameworks related to international negotiation and would certainly serves as a beacon light for students and researchers who seek to study particular practical models of international negotiation.

Undeniably, it is accurate to conclude that the reality and future of international negotiation depends on the reality and future of international relations. In this framework, the relationships between international relations, foreign policy, diplomacy and international negotiation are whole-part relations.

International relations are the whole and foreign policy is the part as foreign policy is a significant component of international relations. Diplomacy is part of foreign policy since it is the tool for implementing foreign policy orientations and choices and is one of the outputs of the state's foreign policy process. In turn, international negotiation is

part of diplomacy seeing that international negotiation is the core of the diplomatic function and is one of its central instruments.

In this context, international negotiation is closely related to the development of diplomacy, which is retreating day after day from traditional practices and heading towards new and modern instruments and types similar to digital diplomacy that have caused a fundamental shift in traditional diplomatic behavior, and therefore, the terms, strategies and course of international negotiation will certainly evolve and change to keep pace with this change and evolution in the diplomatic act (Barston, 2019, pp. 95-118).

The reality and future of international negotiation is also related to the reality and future of the phenomena of conflict and cooperation in international relations. The increase and decline of international negotiation in international relations is linked to the possibility of establishing an international system based on peaceful coexistence, unified standards, homogeneous values and common principles and goals. This liberal idealistic approach is linked to the phenomena of globalism and globalization in international relations and is recently witnessing a noticeable decline, in particular, because of the current international relations are facing a struggle for power and global leadership related to the path of shift of power in international relations from West to East, which will inevitably lead to values and trade conflicts, as well as stiff clashes over the division of areas of influence between the world powers (Nye, 2011, pp. 153-206). The reality and future of international negotiation is also linked to the transformation of international relations in terms of actors and issues. The emergence of actors above the state and under the state and transiting the state in the current international interactions that have become a threat to the state as a central entity in international relations, will lead to a strong engagement of non-state actors in international negotiation. On the other hand, the shift in international relations issues from high politics concerns which are directly linked to the military domain to the fields of low politics matters such as economic, commercial, societal, cultural and value issues along with new security threats matters such as migration, refugees, drug trafficking, environment and cyber issues, is currently leading to new shifts in international negotiation's topics and issues (Lawson, 2017, pp. 154-178).

BIBLIOGRAPHIC REFERENCES

1. Barston, R.P. (2014). *Modern Diplomacy*. London and New York: Routledge, Taylor & Francis Group.

2. Shimko, K. (2017). *The Foreign Policy Puzzle: Interests, Threats, and Tools*. Oxford, New York: Oxford University Press.
3. Starkey, B., Boyer, M.A., & Wilkenfeld, J. (2015). *International Negotiation in a Complex World* (New Millennium Books in International Studies). Marynland: Rowman & Littlefield Publishers.
4. Mautner-Markhof, F. (1989). *Process of International Negotiations*. Boulder, San Francisco and London: Westview Press.
5. Schneider, A.K. & Honeyman, Ch. (2017). *The Negotiator's Desk Reference*. The U.S: Dispute Resolution Institute: DRI Press.
6. Kremenyuk, V.A. (2003). *International Negotiation: Analysis, Approaches, Issues* (2nd ed.). New Jersey: Wiley, John and Sons, Incorporated.
7. Cohen, Raymond (2002): *Negotiating Across Cultures: International Communication in an Interdependent World*: Revised Edition: Washington, D.C.: United States Institute of Peace Press.
8. M&A Directions: Preparing for Negotiations. (2017, March 17). Retrieved from https://www.ashurst.com/en/news-and-insights/insights/preparing-for-negotiations/
9. Power in Negotiation: How Effective Negotiators Project Power at the Negotiation Table: Understanding the Sources of Power in a Negotiation. (2019, December 3). Retrieved from https://www.pon.harvard.edu/daily/negotiation-skills-daily/enhance-your-negotiating-power/
10. Kennedy, J. F. Radio and television report to the American people on the Berlin crisis, July 25, 1961. Retrieved from https://www.jfklibrary.org/archives/other-resources/john-f-kennedy-speeches/berlin-crisis-19610725
11. Cichosz, I. (2017). Succesfull International Negotiations. *Journal of Intercultural Management*, *9*(1), 31-40. doi: https://doi.org/10.1515/joim-2017-0002.
12. Jeong, H.-W. (2016). *International Negotiation: Process and Strategies*. Cambridge: Cambridge University Press.
13. Gate, S. (2011). *The Negotiation Book*: *Your Definitive Guide to Successful Negotiating*. UK: John Wiley & Sons Ltd.
14. Goldman, A.L. (1991). *Settling For More: Mastering Negotiating Strategies and Techniques*. Washington, D.C: The BNA Books.

15. Coburn, C. (n.d.). Neutralising Manipulative Negotiation Tactics. Los Angeles: *Negotiation Training Solutions*.
16. Berridge, G.R. (2015). *Diplomacy: Theory and Practice* (5th ed.). UK, US: Palgrave Macmillan.
17. Watershed Associates. (2020). *Negotiation Stages Introduction: Best Negotiating Practices*. Washington, D.C: Watershed Associates, INC.
18. Negotiation Experts. (2019). *The Four Phases of the Negotiation Process.* Denver (US), London (UK), Sydney (Australia): Negotiation Experts Foundation.
19. Shamir, Y. & Kutner, R. (2003) Alternative dispute resolution approaches and their application. Retrieved from https://unesdoc.unesco.org/ark:/ 48223/pf0000133287.
20. Grant, J.P. & Barker, J. C. (2009): *Encyclopedic Dictionary of International Law* (3rd ed.). Oxford: Oxford University Press.
21. Lutz, H.G, Venter, D.P., & Dean, V. (2019). *Farmer's Organizations' Guide to Contract Negotiations in South Africa*. Swedish Cooperation Centre: SCC Rosa: Harare, Zimbabwe.
22. Barston, R.P. (2019). *Modern Diplomacy* (5th ed.). Oxon, New York: Routledge.
23. Nye, J.S. (2011). *The Future of Power*. Public Affairs: New York.
24. Lawson, S. (2017): *Short Introductions: International Relations* (3rd ed.). Cambridge, UK: Polity Press.

Information about the author
Ph.D in Politics and International Relations, Professor
Sofiane Sekhri
University of Algiers -3- Ibrahim Sultan Cheibout
Algiers, Algeria
sofiane.sekhri@aol.co.uk

Информация об авторе
Доктор политических наук, профессор
Софиан Сахри
Университет Алжира 3 им. Ибрагима Султана Шийбута
г. Алжир, Алжир
sofiane.sekhri@aol.co.uk

Conflicts of Interest Disclosure: *The author declares Conflicts of Interest Disclosure.*

Раскрытие информации о конфликте интересов: *Автор заявляет об отсутствии конфликта интересов.*

ТЕОЛОГИЯ
علم اللاهوت
THEOLOGY

УДК 297.17

المقال الأصلي
Original Paper
Оригинальная статья

إسهامات قاضي خان في تطوير الفقه الحنفي في آسيا الوسطى

حسام حسين عبد الرحمن
المدرسة المحمدية
halahmad70@hotmail.com

Received: January 29, 2020	*Поступила в редакцию: 29 января 2020г.*	*تم الاستلام في ٢٩ يناير ٢٠٢٠*
Reviewed: February 20, 2020	*Одобрена рецензентами: 20 февраля 2019 г.*	*تم التقييم في ٢٠ فبراير ٢٠٢٠*
Accepted: February 29, 2020	*Принята к публикации: 29 февраля 2019 г.*	*تم القبول للنشر في ٢٩ فبراير ٢٠٢٠*

الملخص

الإمام الحسن بن منصور بن أبي القاسم محمود بن عبد العزيز، أبو المفاخر أو أبو المحاسن، الأوزجندي الفرغاني، قاضي خان، أحد أبرز علماء القرن السادس الهجري ومجتهديهم. كانت عائلته تضم كبار العلماء الذين تصدوا للإفتاء والتدريس والقضاء في إقليم فرغانة الذي كان يعج بالعلماء والفقهاء، فأبو جده : عبد العزيز بن عبد الرزاق بن أبي نصر بن جعفر بن سليمان الإمام المرغيناني، و أخو جده علي بن عبد العزيز المرغيناني، وابن عم والده الحسن بن علي بن عبد العزيز، ولا شك أن مثل هذه العائلة الكريمة كان لها أكبر الأثر في تنشئة الإمام قاضي خان على حب العلم وطلبه والنبوغ فيه. تميز قاضي خان انعكس على تلاميذه، فقد تفقه عليه من اللذين أصبحوا فيما بعد من كبار العلماء.

عبد الرحمن، ح. ح. (2020). إسهامات قاضي خان في تطوير الفقه الحنفي في آسيا الوسطى. الدراسات العربية الأوراسية، ١٠، ص ص ١٢٣-١٣٩.

خلف الإمام قاضي خان مؤلفات عظيمة، اهتم بها العلماء في عصره وبعد وفاته إلى وقتنا الحاضر، لما لها من أهمية بالغة، ومنها: "فتاوى قاضي خان"، و"شرح الجامع الصغير"، و"شرح الزيادات"، و"شرح أدب القاضي للخصاف"، و"الأمالي" ، و"الواقعات"، و"المحاضر"، و"أدب الفضلاء".

مما لا شك فيه أن الإمام قاضي خان قد بلغ منزلة علمية عالية، فقد وصفه العلماء بفخر الملة، وركن الإسلام، وبقية السلف، ومفتي الشرق، وذكروا أن ما يصححه قاضي خان مقدم على تصحيح غيره لأنه فقيه النفس، وأنه من المجتهدين في المسائل التي لا رواية فيها عن صاحب المذهب: كالخصاف، وأبي جعفر الطحاوي، وأبي الحسن الكرخي، وشمس الأئمة الحلواني، وشمس الأئمة السرخسي، وفخر الإسلام البزدوي.

توفي قاضي خان في سنة 592هـ ، ودفن في مقبرة القضاة السبعة.

الكلمات المفتاحية: قاضي خان، الفتاوى الخانية، الأوزجندي، مجتهد في المسائل، مفتي الشرق، العلماءالأحناف

للاقتباس: عبد الرحمن، ح. ح. (2020). إسهامات قاضي خان في تطوير الفقه الحنفي في آسيا الوسطى. الدراسات العربية الأوراسية، ١٠، ص ص ١٢٣-١٣٩.

CONTRIBUTION OF QĀḌĪ KHĀN TO THE DEVELOPMENT OF HANAFI FIQH IN CENTRAL ASIA

Kh.Kh. Abdurrakhman

Muhammadiya medrese

halahmad70@hotmail.com

Abstract

Imam Al-Ḥasan ibn Manṣūr ibn Abī al-Qāsim Maḥmūd ibn ʿAbd al-ʿAzīz, Abū al-Mafākhir or Abū al-Maḥasin, al-Ūzjandī al-Farghānī, Qāḍī Khān is one of the most significant scholars of the sixth century and one of its Mujtahids. His family included the most prominent scholars who had been making fatwas, teaching, and judging in the province of Ferghana, which was filled with scholars and lawyers. So his great grandfather wasʿAbd al-ʿAzīz ibn ʿAbd al-Razzāq ibn Abī Naṣr ibn Jaʿfar ibn Sulaimān al-Imām al-Marghīnānī, and his grandfather`s brother was ʿAlī ibn ʿAbd al-ʿAzīz al-Marghīnānī, and the cousin of his father was al-Ḥasan ibn ʿAlī ibn ʿAbd al-ʿAzīz. There is no doubt that such a noble family had the greatest impact on the

formation of Imam Qāḍī Khān as the person, who loved knowledge, had been searching for it and who was brilliant in it. Qāḍī Khān's distinction reflected on his students greatly. He had been teaching those who later became major scholars.
Imam Qāḍī Khān is the author of great works to which scholars paid attention in his time and after his death to present days, because of their great importance. The most brilliant ones are: "Qāḍī Khān's Fatwas", "Sharḥ al-Jāmiʿ al-Ṣaghīr", "Explanation of Increases", "Explanation of the Judge's Literature of the Dispute", "The Amalie", "The Realities", "The Lecturer" and "The Literature of Virtues".
There is no doubt that Imam Qāḍī Khān attained a high scientific status. The scholars named him the pride of nation, the cornerstone of Islam, the rest of the predecessors, and the Mufti of the East. It was also stated that, what was corrected by Qāḍī Khān, was preferable to the corrections of others, because he was the expert of human conscience, and because he was one of Mujtahids in matters that were not narrated by the author of doctrine (Abu Hanifa), as Khaṣāfī, Abū Jaʿfar al-Ṭaḥāwī, Abū al-Ḥasan al-Karkhī, The Sun of Imams al-Ḥalawānī, The Sun of Imams al-Sarkhasī, and The Pride of Islam al-Bazdawī.
Qāḍī Khān Qadi Khan died in 592 and was buried in the Cemetery of the Seven Judges.
Keywords: *Qāḍī Khān***,** *al-Fatawa al-khānīyah, al-Ūzjandī, Mujtahid fī masāil, Mufti of the East, Hanafi scholars*

For citation: *Abdurrakhman, Kh.Kh. (2020). Contribution of Qāḍī Khān to the development of Hanafi fiqh in Central Asia. Eurasian Arabic Studies, 10, 123-139.*

ВКЛАД КАДЫ КХАНА В РАЗВИТИЕ ХАНАФИТСКОГО ФИКХА В СРЕДНЕЙ АЗИИ

Х.Х. Абдуррахман
Медресе Мухаммадия
halahmad70@hotmail.com

Аннотация

Имам аль-Хасан ибн Мансур ибн Абу аль-Касим Махмуд ибн Абдульазиз, Абу аль-Муфахир или Абу аль-Махасин, аль-Узганди аль-Фергани, Кады Кхан - один из самых выдающихся ученых шестого века и один из его мужтахидов. Он из

семьи выдающихся ученых, которые выводили фетвы, преподавали и занимались судебной деятельностью в богатой учеными и правоведами Ферганской провинции. Его прадед – Абдульазиз ибн ар-Раззак ибн Абу Наср ибн Джагфар ибн Сулейман имам аль-Маргинани, а брат деда - Али Абдульазиз аль-Маргинани, а кузен его отца – аль-Хасан ибн Али ибн Абдульазиз. Несомненно, такая семья имела огромное влияние на формирование личности имама Кады Кхана, который стремился к знаниям и достиг в них высокого уровня, что отразилось на его учениках, которые впоследствии стали великими учеными.

Кады Кхан оставил после себя богатое наследие, которое вызвало интерес не только в его время, но и остается актуальным и в наши дни, среди которого «Фетвы Кады Кхана», «Комментарии к Джамиг ас-Сагыр», «Шарх аз-Зиядат», «Шарх адаб аль-Кады лил-хассаф», «аль-Амали», «аль-Вакыгат», «аль-Мухадыр» и «Адаб аль-Фудала».

Бесспорно, Кады Кхан достиг высокого уровня в знаниях. Его описывают как гордость народа, опора ислама, последователь предшественников (ученых), муфтий востока. Его мнение предпочтительнее мнений других ученых в тех вопросах, в которых нет предания от основателя мазхаба, так он считается знатоком человеческих душ и является муджтахидом в частных вопросах подобно Абу Джа'фару ат-Тахави, Абу аль-Хасан аль-Кархи, Шамсу аль-Аимма аль-Хальвани, Шамсу аль-Аимма ас-Сарахси, Фахру аль-Ислам аль-Баздави.

Умер Кады Кхан в 592 году по лунному летоисчислению, и похоронен на кладбище «Семи Судий».

Ключевые слова: *Кады Кхан, фетвы Кады Кхана, аль-Узганди, муджтахид в отдельных вопросах, муфтий востока, ханафитские ученые.*

Для цитирования: *Абдуррахман Х.Х. Вклад Кады Кхана в развитие ханафитского фикха в Средней Азии // Арабистика Евразии. 2020. № 10. С.123-139. (на арабском языке)*

المقدمة

قد ذكر الإمام العلاء الترجماني المكي الخوارزمي الحنفي مؤلف السفر القيم:"يتيمة الدهر في فتاوى أهل العصر"(توفي سنة 645 هـ) ثلة من العلماء الذين أورد بعض فتاواهم في كثير من الأبواب الفقهية المعهودة لدى سادتنا أساطين الفقه الحنفي.

ومن أبرز علماء القرن السادس الهجري من السادة الإحناف الذين كان لهم بالغ الأثرعلى بعض من ذكر الإمام الترجماني فتاواهم، الإمام الأجل مفتي المشرق والمغرب ظهير الدين الحسن بن علي بن عبد العزيز المرغيناني الملقب بأبي المحاسن،الذي تفقه على كبار العلماء في سلسلة ذهبية تصل إلى الإمام أبي حنيفة -رحمهم الله أجمعين-. ومن أشهر من تفقه عليه ولازمه وأخذ العلم عنه الشيخ الإمام قاضي القضاة فخر الدين الحسن بن منصور بن محمود الأوزجندي المعروف بقاضي خان، والقاضي الإمام ظهير الدين محمد بن أحمد بن عمر البخاري صاحب الفتاوى والفوائد الظهيرية، وابن اخته افتخار الملة والدين طاهر بن أحمد بن عبد الرشيد البخاري صاحب الخلاصة في الفتاوى وهو آخر المتفقهين عليه، إلا أن أولئك تلقوا عنه مشافهة، أما الإمام العلاء الترجماني فقد استفتاه في كثير من الواقعات والنوازل، لكنه كان يكتب إليه كتابة لا مشافهة، بسبب إقامته في خوارزم هذا من جهة، ومن جهة أخرى فإن الأوضاع السياسية في تلك المرحلة كانت مضطربة، حيث كثرت الفتن وانتشر قطاع الطرق. ومن خلال دراستنا لمخطوطة يتيمة الدهر وجدنا كثيرا من عبارات الترجماني التي تبدأ بـ (وكتبت إلى الحسن بن علي ..) و (سئل الحسن بن علي..). ولا شك في أن تفقه القاضي خان على فقه الحسن بن علي واستفتاءات الترجماني له، يدل على تأثرهما به وأنهما قد اشتركا في الاغتراف من علومه، وهذا يظهر جليا في (الفتاوى الخانية) وفي (اليتيمة). فأحببنا في هذه المقالة أن نسلط الضوء على الإمام الجهبذ والحبر العلامة أبي المفاخر أو أبي المحاسن فخر الدين، قاضي خان الحسن بن منصور بن أبي القاسم محمود بن عبد العزيز الأوزجندي الفرغاني.

ذلك الذي لم يخل كتاب بعد وفاته من الاستشهاد بأقواله وآرائه، كونه أحد البارزين ممن وصلوا مرتبة الاجتهاد (مجتهد مسألة) في المذهب الحنفي، وامتد ذلك إلى العلماء التتار وفي مقدمتهم الإمام شهاب الدين المرجاني.

المنهجية ومادة البحث :

الإمام العلامة شيخ الحنفية - هكذا وصفه الإمام شمس الدين محمد بن أحمد بن عثمان الذهبي - قاضي خان (الذهبي، 1374، ص 231).

أولا: بياناته الشخصية:

الاسم: الحسن بن منصور بن أبي القاسم محمود بن عبد العزيز (التميمي، 1983، ص 116).

الولادة: لم يذكر عامَها المترجمون

الكنى: أبو المفاخر أو أبو المحاسن (ابن قطلوبغا، 1999، ص151).

الألقاب: فخر الدين ، قاضي خان (القاري، 2009، ص 408).

النسبة: الأوزجندي الفرغاني (ابن الحنائي، 2003، ص 150).

أما لقبه (قاضي خان) فقد كانت شهرته به، حتى نسبت إليه فتاواه المشهورة: (فتاوى قاضي خان) أو (الفتاوى الخانية)، حتى أن بعض المتأخرين كانوا يختصرون ذلك بقولهم: "...وفي الخانية ..." (ابن عابدين، 2003، ص 114).

وهو لقب مكون من كلمتين: الأولى عربية: (قاضي)، لأنه تولى منصب القضاء، فقد نقل التميمي عن الحصيري تلميذ قاضي خان قوله: "هو سيدنا القاضي الإمام والأستاذ فخر الملة، ركن الإسلام، بقية السلف، مفتي الشرق" (القرشي، 1993، ص 94).

والكلمة الثانية: (خان) في آخر لقبه: كلمة تركية و فارسية تعني الرئيس أو السيد (حسنين، 1982، ص 213)، وهي منتشرة في بلاد ما وراء النهر، والترك والتتار والفرس والهند وبلاد القوقاز وكثير من الممالك الإسلامية الشرقية، و تضاف قبل اسم الشخص للاحترام.

وأما نسبته: (الأوزجندي) أو(الأوزكندي) فنسبة إلى (أوزكند) ، ويعرفها الشيخ الإمام شهاب الدين أبي عبد الله ياقوت بن عبد الله الحموي بقوله: "أوزكند: بالضم، والواو والزاي ساكنان: بلد بما وراء النهر من نواحي فرغانة، ويقال: أوزجند، وخبرت أن (كند) بلغة أهل تلك البلاد معناه القرية كما يقول أهل الشام: الكفر. وأوزكند آخر مدن فرغانة مما يلي دار الحرب، ولها سور وقـُهُنْدُز وعدة أبواب، وإليها متجر الأتراك، ولها بساتين ومياه جارية، ينسب إليها جماعة، منهم: علي بن سليمان بن داود الخطيبي أبو الحسن الأوزكندي، قال شيرويه: قدم همذان سنة 405، روى عن أبي سعد عبد الرحمن بن محمد الإدريسي وأبي الحسن محمد بن القاسم الفارسي وأبي سعد الخُركوشي وأبي عبد الرحمن السُّلَمي وغيرهم" (الحموي، 1977، ص 280).

أما بالنسبة لكتابتها بالجيم أو بالكاف نقول : حسب معرفتنا بلغة أهل تلك البلاد فالحرف أصلا) غير موجود في اللغة العربية ، وينطق كما ينطق الحرف الأول في كلمة (Gameبالإنجليزية. ويكتبه أهل تلك البلاد بحرف (كـ) فوقه شرطة مائلة توازي الضلع الأعلى لحرف الكاف ، فيكتبها العرب بالكاف وحدها أو بالجيم لأنها تنطق بالمصرية كما ينطق الحرف أصلا .

وجاء في كتاب بلدان الخلافة الشرقية: "... وكان فيما يلي أوش، مدينة أوزكند، وهي آخر مدن فرغانة شرقا، وهي نحو ثلثي أوش، ولها قهندز وبساتين ومياه جارية، ولها ربض والأسواق فيه، وهي متجر على باب الأتراك، وعلى بابها نهر ... يحيط بربضها حائط له أربعة أبواب، وجامعها في الأسواق" (كي لسترنج، 1985، ص 522).

وأما (الفرغاني) فنسبة إلى مدينة فـَرْغانـَة و إقليم فرغانة. جاء في كتاب بلدان الخلافة الشرقية: "أما إقليم فرغانة الذي كان إلى وقت قريب يعرف بخانية خوقند، وقد أعادت إليها الحكومة الروسية رسميا اسمه القديم، فكانت قصبته في أوائل العصور الوسطى مدينة أخسيكث، وسماها ابن خرداذبه وغيره مدينة فرغانة ، و هي تقوم على ضفة نهر سيحون الشمالية" (كي لسترنج، 1985، ص 520). ولقد نسب إليها كثير من العلماء، وهي الآن تقع في جنوب عاصمة طشقند بجمهورية أوزبكستان.

ثانيا: نشأته وبيئته العلمية:

كانت (أوزكند) التي نسب إليها قاضي خان تابعة لإقليم فرغانة أحد أقاليم نهر سيحون (كي لسترنج، 1985، ص 517)، والتي تضم إضافة إلى إقليم فرغانة: إقليم إشروسنة، إقليم الشاش، ناحية إيلاق، ناحية إسبيجاب، وغير ذلك من النواحي والأقاليم المحيطة، والتي كانت تعج بالعلماء والفقهاء.

ومن كبار أولئك العلماء الذين تصدوا للإفتاء والتدريس والقضاء من هم من أقارب الإمام قاضي خان، ومن ابرزهم :

1- أبو جده: عبد العزيز بن عبد الرزاق بن أبي نصر بن جعفر بن سليمان الإمام المرغيناني.

سمع أبا الحسن نصر بن المحسِّن الإمام المرغيناني. روى عنه أولاده، قال أبو سعد:

كان له ستة اولاد، جميعهم متمكن من التدريس والفتوى، منهم: محمود وعلي والمعلَّى، فإذا خرج مع أولاده قالوا: سبعة من المفتين خرجوا من دار واحدة. مات بمرغينان سنة سبع وسبعين وأربعمائة هـ وهو ابن ثمان وستين سنة (القرشي، 1993، ص 434).

2- أخو جده: علي بن عبد العزيز المرغيناني، أبو الحسين ، ظهير الدين. وهو أستاذ العلامة فخر الدين قاضي خان، و هو أحد الإخوة الفضلاء الستة. مات يوم الثلاثاء تاسع رجب، سنة ست وخمسمائة هـ، قبل الزوال (القرشي، 1993، ص 576). وهو صاحب (الفتاوى الظهيرية) وهي غير (الفتاوى الظهيرية) لظهير الدين محمد بن أحمد بن عمر البخاري (القاري، 2009، ص 513).

3- جده: محمود بن عبد العزيز: أبو القاسم ، شمس الدين ، وشمس الأئمة ، الأوزجندي، ...أخذ الفقه عن شمس الأئمة السرخسي (القاري، 2009، ص647). وهو كذلك أحد الإخوة الفضلاء الستة.

4- المعلى بن عبد العزيز بن عبد الرزاق : أحد الإخوة الفضلاء الستة .

5- ابن عم والده: الحسن بن علي بن عبد العزيز : أبو المحاسن ، ظهير الدين . روى عنه صاحب الهداية كتاب الترمذي بالإجازة بسنده المتصل إلى الترمذي بثلاث وسائط ، وهو خال صاحب (الخلاصة) طاهر بن أحمد بن عبد الرشيد البخاري . ومن إنشاد الحسن:

"الجاهلون فموتى قبل موتهم والعالمون وإن ماتوا فأحياء" (القاري، 2009، ص 404)

ولا شك أن مثل هذه العائلة الكريمة كان لها الأثر الأكبر في تنشئة الإمام قاضي خان على حب العلم وطلبه والنبوغ فيه.

ثالثا: من أساتذته:

لا شك أن الإمام أبا المفاخر قاضي خان قد تفقه على يد كبار العلماء من أسرته ومن غيرهم ممن كانت تعج بهم فرغانة في زمانه، ومن أبرز أولئك ـ كما تذكر المصادر ـ :

1- ابن عم والده: الحسن بن علي بن عبد العزيز: أبو المحاسن ، ظهير الدين (الذهبي، 1996، ص232). وقد تفقه على فقه برهان الدين الكبير عبد العزيز بن مازه، وشمس الأئمة محمود

الأوزجندي، وزكي الدين الخطيب مسعود بن حسن الكشاني ، وهم تفقهوا على فقه شمس الأئمة السرخسي عن الحلواني. وكان فقيها محدثا، نشر العلم إملاء وتصنيفا، وصنف كتب: (الأقضية)، (الشروط)، (الفتاوى)، (الفوائد) وغير ذلك (اللكنوي، 1906، ص 62).

2- إبراهيم بن إسماعيل بن أحمد بن إسحاق بن شيث بن الحكم، أبو إسحاق ، ركن الإسلام ، الزاهد المعروف بالصفّار (وصف لمن يبيع الأواني الصفرية). أبوه وجده وجد أبيه كلهم من أفاضل الحنفية، وقد تفقه على فقه والده . توفى في بخارى في السادس والعشرين من شهر ربيع الأول سنة 534 هـ، وله تصانيف منها : (كتاب تلخيص الزاهدي ، وكتاب السنة والجماعة). كان إماما ورعا زاهدا مثل والده في قمع السلاطين وقهر الملوك . حمله السلطان سنجر بن ملك شاه إلى مرو وأسكنه إياها. وحدث عن أبيه وأبي حفص عمر بن منصور بن حبيب الحافظ وأبي محمد بن عبد الملك بن عبد الرحمن وطبقتهم. حدث عنه جماعة، وكانت وفاته ببخارى (اللكنوي، 1996، ص 8). تفقه على فقهه قاضي خان، وسمع الآثار للطحاوي عن والده، وكتاب العالم والمتعلم لأبي حنيفة عن أبي يعقوب السياري بتشديد التحتية بقراءة والده، والسير الكبير لمحمد علي أبي حفص البزاز، وكتاب الكشف في مناقب أبي حنيفة تصنيف أبي عبد الله بن محمد بن يعقوب الحارثي عن والده، وكتاب الرد على الأهواء تصنيف أبي عبد الله بن أبي حفص الكبير، وكان من أهل بخارى، موصوفا بالزهد والعلم، وكان لا يخاف في الله لومة لائم (القاري، 2009، ص 299).

3- إبراهيم بن علي المرغيناني ، الملقب نظام الدين ، أبو إسحاق : أحد مشائخ قاضي خان (التميمي،1983، ص 216).

رابعا: من تلامذته:

1- العلامة جمال الدين، محمود بن أحمد الحصيري (الذهبي، 1996، ص 232): محمود بن أحمد البخاري المعروف بالحصيري، تفقه على يد جماعة ببخارى ، منهم الإمام الحسن بن منصور قاضي خان الأوزجندي، وروى مؤلفات محمد بن الحسن ، وشرح الجامع الكبير مطوَّلا في كتاب سماه (التحرير)، ومختصراً في كتاب سماه (الوجيز)، وذكر في أوله أنه زاد في هذا المختصر أكثر من ألف مسألة، وله كتاب سماه (خير مطلوب)، مات سنة ست وثلاثين وستمائة هـ (ابن قطلوبغا، 1992، ص 285).

2- شمس الأئمة محمد بن عبد الستار الكردري (ابن الحنائي، 2003، ص151): كان أستاذ الأئمة على الإطلاق والموفود إليه من الآفاق، قرأ لصاحب المغرب وصاحب الهداية وللإمام زاده وسمع الحديث منهما، وعن الشيخ العقيلي ,الإمام العتابي ,الصابوني البخاري ,القاضي خان والفاريابي وغيرهم، وسمع التفسير والحديث منهم، وأحيا علم أصول الفقه بعد دراسته في زمن القاضي أبي زيد الدبوسي وشمس الأئمة السرخسي. حيث تفقه عليه خلق كثير منهم: بدر الدين الكردري

المعروف بخواهرزاده وهو ابن أخته، وشيخ الشيوخ سيف الدين الباخرزي. مات سنة اثنتين وأربعين وستمائة هـ (القرشي، 1993، ص 229).

3- نجم الأئمة، الحكيمي: "من تلامذة قاضي خان" (القرشي الحنفي، 1993، ص 441)، "تلميذ حسن بن منصور قاضي خان وأستاذ ركن الأئمة الوالجاني" (اللكنوي، 1906، ص 220).

4- يوسف بن أحمد بن أبي بكر، نجم الدين، الخاصي، نسبة إلى الخاص، قرية من قرى خوارزم، كان إماما فاضلا، أخذ عن أبي بكر محمد بن عبد الله - من أقران عمر النسفي ، وعن الصدر الشهيد حسام الدين عمر، وعن الحسن قاضي خان، ومن تصانيفه (الفتاوى).

ومختصر الفصول، وذكر صاحب الكشف وفاته عند ذكر الفصول في الأصول سنة أربع وثلاثين وستمائة هـ (اللكنوي، 1906، ص 226).

5- طاهر بن أحمد بن عبد الرشيد بن الحسين، افتخار الدين، البخاري، صاحب (خلاصة الفتاوى) و (النصاب). كان عديم النظير في زمانه ، فريد أئمة الدهر، شيخ الحنفية بما وراء النهر، من أعلام المجتهدين في المسائل، أخذ عن أبيه قوام الدين أحمد عن أبيه عبد الرشيد، وأيضا أخذ عن حماد بن إبراهيم الصفار عن أبيه إبراهيم عن أبيه إسماعيل الصفار عن أبي يعقوب السياري عن الحاكم النوقدي عن أبي جعفر الهندوالي عن أبي بكر الإسكاف عن محمد بن سلمة عن أبي سليمان الجوزجاني عن محمد ، وأيضا أخذ عن خاله ظهير الدين الحسن بن علي المرغيناني، وأيضا عن قاضي خان حسن بن منصور عنه عن برهان الدين الكبير عبد العزيز بن عمر بن مازه عن السرخسي عن الحلواني عن النسفي عن أبي بكر بن الفضل عن السبذموني عن ابن أبي حفص عن أبيه عن محمد، وله تصانيف مقبولة منها: (خزانة الواقعات) و(النصاب) و(الخلاصة) . وفاته سنة اثنتين وأربعين وخمسمائة هـ (اللكنوي، 1906، ص 84).

6- برهان الإسلام الزرنوجي، و كتابه الوحيد الذي وصلنا، هو الكتاب التربوي الرائع (تعليم المتعلم طرق التعلم)، وقد ذكر فيه أنه تتلمذ على يد صاحب (الهداية) برهان الدين علي بن أبي بكر الفرغاني المرغيناني ، كما يذكر الزرنوجي أن فخر الإسلام الحسن بن منصور الفرغاني قاضي خان كان شيخا له ، قال في كتابه: "وكان أستاذنا القاضي الإمام الأجل فخر الدين المعروف بقاضي خان - رحمه الله - تعالى - - يقول : ....." (الزرنوجي، 1981، ص 84)

7- طاهر الملقب بصدر الإسلام بن برهان الدين صاحب (المحيط) و (الذخيرة) محمود بن تاج الدين الصدر السعيد أحمد بن برهان الدين الكبير عبد العزيز بن عمر بن مازه، كان من أعيان الفقهاء الحنفية ، له اليد الطولى في الفروع والأصول، ومشاركة تامة في المعقول والمنقول، وله (الفوائد) و(الفتاوى) . أخذ عن أبيه صاحب المحيط عن أبيه الصدر السعيد، وعن عمه حسام الدين عمر الصدر الشهيد، وهما عن عبد العزيز عن السرخسي عن الحلواني، وأخذ أيضا عن فخر الدين قاضي خان (اللكنوي، 1906، ص 85).

8- عبيد الله بن إبراهيم بن أحمد بن عبد الملك بن عمر بن عبد العزيز بن محمد، ينتهي نسبه إلى عبادة بن الصامت، جمال الدين، المحبوبي، العبادي، ولد في الخامس من شهر جمادى الأولى سنة ست وأربعين وخمسمائة هـ، وأخذ العلم عن إمام زاده محمد بن أبي بكر صاحب (شرعة الإسلام)، وشمس الأئمة عماد الدين عمر بن بكر الزرنجي، وهما عن شمس الأئمة بكر الزرنجي عن السرخسي عن الحلواني. وكان إماما كاملا معدوم النظير في زمانه، فرد أوانه في معرفة المذهب والخلاف، له تصانيف منها: (شرح الجامع الصغير) وكتاب (الفروق).

وممن تفقه عليه ابنه أحمد والد تاج الشريعة صاحب الوقاية، وحافظ الدين الكبير محمد البخاري، وحميد الدين الضرير علي بن محمد البخاري وبهاء الدين محمد بن أحمد الإسبيجابي والظهير أبو بكر أحمد بن علي البلخي وغيرهم، وتفقه أيضا على قاضيخان الأوزجندي. وعبيد الله معروف بـ (أبي حنيفة الثاني)، توفي في بخارى عن أربع وثمانين سنة ، سنة ثمانين وستمائة (اللكنوي، 1906، ص 108).

خامسا: من كتبه:

خلف الإمام قاضي خان مؤلفات عظيمة، اهتم بها العلماء في عصره وبعد وفاته إلى وقتنا الحاضر، لما لها من أهمية بالغة، ومن تلك المصنفات:

1- (الفتاوى) أو (فتاوى قاضيخان) أو (الفتاوى الخانية) ، وهي من أشهر كتبه ، وهي في أربعة أسفار كبار (القرشي، 1993، ص 94). قال الإمام قاضي خان في مقدمة (الفتاوى): "يقول العبد الضعيف الفقير إلى رحمة الله - تعالى - الغني، - سدده الله في القول والعمل وعصمه من الطغيان والزلل: ذكرت في هذا الكتاب من المسائل التي يغلب وقوعها وتمس الحاجة إليها و تدور عليها واقعات الأمة ويقتصر عليها رغبات الفقهاء والأئمة، وهي أنواع وأقسام، فمنها ما هو مروي عن أصحابنا المتقدمين، ومنها ما هو منقول على المشايخ المتأخرين - رضوان الله عليهم أجمعين -. ورتبته ترتيب الكتب المعروفة و جعلت لكل جنس فصلا، وبينت لكل فرع أصلا. وفيما كثرت في الأقاويل من المتأخرين اقتصرت فيه على قول أو قولين وقدمت ما هو الأظهر وافتتحت بما هو الأشهر، إجابة للطالبين وتيســـيرا على الراغبين. وعلى الله توكلت فيما تمنيت، واستعصمته عن الخطأ فيما نويت، وهو حسبي ونعم الوكيل، وعليه أتوكل وبه أستعين" (قاضي خان، 2009، ص 7).

2- شرح الجامع الصغير (ابن قطلوبغا، 1992، ص151)، وهو شرح لكتاب الإمام محمد بن الحسن الشيباني. هذا وللجامع الصغير كثير من الشروح فقد شرحها: الإمام الطحاوي ،الإمام الجرجاني، الإمام أبو بكر الجصاص الرازي، ابو الليث السمرقندي، علي البزدوي، فخر الإسلام البزدوي، شمس الأئمة السرخسي، أبو نصر الإسبيجابي، الإمام أبو الأزهر الخجندي، الصدر الشهيد أبو محمد حسام الدين عمر بن عبد العزيز بن عمر بن مازه، الإمام أبو بكر البلخي، أبو المفاخر

الكردري، سراج الدين الغزنوي، قوام الدين البخاري، علاء الدين السمرقندي، وغيرهم (قاضي خان، 2002، ص 42).

ونجد أن منهج الامام قاضي خان في هذا الشرح أنه: يذكر رأي الإمام أبي حنيفة في بداية كل مسألة ولا يصرح به إلا إذا كانت المسألة خلافية بين أئمة المذهب ثم إذا كان هناك خلاف بين الإمام وأصحابه في المسألة يذكر رأي أبي يوسف ومحمد وأحيانا رأي زفر والحسن بن زياد أيضا. وعند اختلاف الروايات عن أئمة المذهب غالبا يرجح رأيا مع بيان وجه الترجيح - وهذا غير مضطرد - بقوله: "والصحيح كذا" أو "والصحيح مذهبنا" أو"أحب إلي كذا"، وسبق أن أشرنا أن تصحيحه معتمد عند فقهاء المذهب. كما انه يتطرق أحيانا إلى رأي الإمام مالك أو الإمام الشافعي مع ذكر الأدلة، وأحيانا يستدل للإمام مالك أو الشافعي بأدلة من وافقه من المذهب الحنفي دون الاستدلال من مصادر المذهب المالكي أو الشافعي . يذكر الأحكام مستشهدا بالآيات أو الأحاديث أو آثار الصحابة أو إجماع الأمة أو القياس أو الاستحسان. أحيانا يبين وجه الفرق بين المسائل المتشابهة، وكثيرا ما يذكر آراء كبار فقهاء المذهب أمثال الخصاف والكرخي والجصاص والطحاوي وأبي جعفر الهندواني وغيرهم ليستشهد بها على ما يراه ويترجح لديه (قاضي خان، 2002، ص 48).

3- شرح الزيادات (أبو الحسنات محمد عبد الحي اللكنوي الهندي، ص65)، وهو شرح لكتاب الزيادات للإمام محمد بن الحسن الشيباني، وهو من كتب ظاهر الرواية التي اهتم بشرحها علماء الأحناف. وقد سلك الإمام قاضي خان في شرحه هذا مسلك التأصيل والتقعيد كما اهتم بشرح تلك القواعد والأصول مع التمثيل و التفريع عليها (قاضي خان، 2002، ص 35).

هذا وللزيادات شروح أخرى، فقد شرحها: شمس الأئمة السرخسي، الصدر الشهيد أبو محمد حسام الدين عمر بن عبد العزيز بن عمر بن مازه، الإمام عبد الغفور الكردري، الإمام العتابي، وغيرهم (صلاح أبو الحاج، 2017، ص 291).

4- شرح أدب القاضي للخصاف (ابن الحنائي، 2003، ص151)، أو شرح أدب القضاء (اللكنوي، 1996، ص 65).

5- الأمالي (اللكنوي، 1996، ص 65).

6- الواقعات (اللكنوي، 1996، ص 65).

7- المحاضر (اللكنوي، 1996، ص 65).

8- أدب الفضلاء (القاري، 2009، ص408).

سادسا: منزلته العلمية وثناء العلماء عليه

مما لا شك فيه أن الإمام قاضي خان قد بلغ منزلة علمية عالية ، ومما يدل على ذلك - إضافة إلى ما عرفناه سابقا من ترجمته - ثناء العلماء عليه، ومن ذلك:

1- يصفه الإمام شمس الدين محمد بن أحمد بن عثمان الذهبي المتوفى 748هـ - 1374م بالعلامة شيخ الحنفية (الذهبي، 1996، ص231).
2- ذكره أبو المحاسن محمود الحصيري شيخ الإسلام، فقال: هو سيدنا القاضي الإمام، والأستاذ، فخر الملة، ركن الإسلام، بقية السلف، مفتي الشرق (التميمي،1983، ص117).
3- وصفه الإمام العلامة أبو الحسنات محمد عبد الحي اللكنوي الهندي بقوله: "كان إماماً كبيراً وبحرا عميقا غوّاصا في المعاني الدقيقة مجتهدا فهّامة ..." (أبو الحسنات محمد عبد الحي اللكنوي الهندي، ص64).
4- وصفه الإمام قاسم بن قطلوبغا في تصحيح القدوري بقوله: "ما يصححه قاضي خان مقدم على تصحيح غيره لأنه فقيه النفس" (اللكنوي، 1996، ص 65).
5- وصفه الإمام الكفوي بقوله: "وقد كان إماما كبيرا، بحرا عميقا غواصا على المعاني الدقيقة، نقي القريحة، كبير المحل، عظيم الشأن، وكان في الفروع والأصول فارسا لا يشق غباره ولا تلحق آثاره ..." (القاري، 2009، ص 408).
6- ذكره العلامة ابن كمال باشا في تقسيمه المشهور لطبقات فقهاء المذهب الحنفي (رغم الاختلاف الحاصل بين العلماء في قبوله ورده)، ذكره ضمن الطبقة الثالثة: وهم المجتهدون في المسائل التي لا رواية فيها عن صاحب المذهب: كالخصاف، وأبي جعفر الطحاوي، وأبي الحسن الكرخي، وشمس الأئمة الحلواني، وشمس الأئمة السرخسي، وفخر الإسلام البزدوي، قال: وفخر الدين قاضي خان، وأمثالهم - رحمهم الله - (النقيب، أحمد، 2001، ص 164).
7- قال الإمام ابن عابدين: "ولا يخفى أن المتأخرين كصاحب الهداية وقاضي خان وغيرهما من أهل الترجيح هم أعلم بالمذهب منا، فعلينا اتباع ما رجحوه وما صححوه كما لو أفتونا في حياتهم" (ابن عابدين، 2003، ص342).

سابعا: وفاته

في ليلة النصف من شهر رمضان سنة 592 هجرية (اللكنوي، 1996، ص65)، توفي الإمام قاضي خان، فخرالدين، أبو المفاخر وأبو المحاسن، الحسن بن منصور بن أبي القاسم محمود بن عبد العزيز الأوزجندي الفرغاني، وقد دفن عند القضاة السبعة (ابن الحنائي، 2003، ص151)، ومقبرتهم قريبة من بخارى، فيها أمم لا يحصون وأحدهم الإمام أبو زيد الدبوسي (القرشي، 1993، ص 7).

رحم الله - تعالى - الإمام قاضي خان وسائر علمائنا وتقبل منهم ورضي عنهم.

الخلاصة

العلامة شيخ الحنفية أبو المفاخر وأبو المحاسن فخر الدين قاضي خان الحسن بن منصور بن أبي القاسم محمود بن عبد العزيز الأوزجندي الفرغاني. وكانت عائلته عائلة إفتاء وقضاء وله الكثير من التلاميذ، ممن برزوا بعده وأفتوا وقضوا وألّفوا. ومن أشهر كتبه الفتاوى الخانية وشرح الجامع

الصغير وشرح الزيادات للإمام محمد بن الحسن الشيباني وكذلك شرح أدب القاضي للخصاف والأمالي والواقعات والمحاضر وأدب الفضلاء. ولا يكاد يخلو كتاب من كتب السادة العلماء الأحناف بعد عصره الفريد من الاستدلال بفتاوى وآراء عالمنا الجليل، وعلى رأسهم من علماء التتار الذين تتلمذوا على يد علماء آسيا الوسطى الإمام شهاب الدين المرجاني. نبوغه في الفتوى أهّله لتولي منصب القضاء حتى لقب بقاضي خان، ولا شك أن القضاء ومسائله قد أثرى ملكته الفقهية فأصبح من أهل الترجيح في المذهب.

نتائج البحث

نستنتج مما سبق:

-أنه بما أن المصادر تذكر الإمام الحسن بن علي بن عبد العزيزالمرغيناني في قائمة أبرز أساتذة الحسن بن منصور الأوزجندي، فهذا يعني أنه كان أكثرهم تأثيرا في حياته العلمية. وهو الإمام الذي كان يكتب له العلاء الترجماني مستفتيا في كثير من المسائل.

- أنه لا شك أن مثل عائلة الحسن بن منصور الكريمة كان لها كذلك أكبر الأثر في تنشئة الإمام قاضي خان على حب العلم وطلبه والنبوغ فيه.

-أن من أسباب تميز العالم تلقيه العلم على يد العلماء الراسخين، وهذا ما كان لقاضي خان، فالحسن بن علي بن عبد العزيز المرغيناني، وإبراهيم بن إسماعيل الصفار، و إبراهيم بن علي المرغيناني، كانوا من أبرز أساتذته.

- يعد قاضي خان من المجتهدين في المسائل التي لا رواية فيها عن الإمام أبي حنيفة صاحب المذهب كالخصاف، وأبي جعفر الطحاوي، وأبي الحسن الكرخي، وشمس الأئمة الحلواني، وشمس الأئمة السرخسي، وفخر الإسلام البزدوي.

-أن تميز قاضي خان كان سببا في تميز تلامذته وتفوقهم، فقد تفقه على فقهه العلامة جمال الدين محمود بن أحمد الحصيري، و شمس الأئمة محمد بن عبد الستار الكردري، و نجم الأئمة الحكيمي، وبرهان الإسلام الزرنوجي، وغيرهم.

-أن كتب الأوزجندي التي ما زالت منارة تنير الدرب للعلماء وعلى رأسها "فتاوى قاضي خان"، تعتبر دليلا ساطعا يدل على علو كعبه.

-أن تصحيح القاضي الفرغاني الذي هو من أهل الترجيح مقدم على تصحيح غيره، فعلينا اتباع ما رجحه وما صححه كما لو أفتانا في حياته، مع مراعاة اختلاف الزمان والمكان والحال.

-أن دفن الإمام أبي المحاسن في مقبرة القضاة السبعة فيها إشارة واضحة إلى نبوغه في مجال القضاء.

-أن وصف الإمام الحسن بن منصور بقاضي خان (سيد أو رئيس القضاة) لم يكن مجرد مبالغة أو مدحا له في غير محله، بل لقبا استحقه عن جدارة في طلبه للعلم، في تعليمه، في فتاواه وآثاره العظيمة. وحري بالعلماء والمفتين والقضاة أن يتتبعوا خطاه فيستفيدوا ويفيدوا.

المصادر والمراجع

1. الذهبي، شمس الدين محمد. (1996). سير أعلام النبلاء. تح. بشار معروف - محيي السرحان. بيروت: مؤسسة الرسائل، ج. 21.
2. التميمي، تقي الدين بن عبد القادر. (1983). الطبقات السنية في تراجم الحنفية. الرياض: دار الرفاعي، ج. 1،3.
3. ابن قطلوبغا، أبو الفداء. (1992). تاج التراجم. تح. محمد خير. دمشق: دار القلم.
4. القاري، علي. (2009). الأثمارالجنية في أسماء الحنفية. تح. عبد المحسن عبد الله. بغداد: ديوان الوقف السني، ج. 1،2.
5. ابن الحنائي، علي بن أمر الله. (2003). طبقات الحنفية. تح. محي السرحان. بغداد: مطبعة ديوان الوقف السني، ج. 2.
6. ابن عابدين، محمد أمين (2003). رد المختار على الدر المختار. تح. عادل أحمد عبد الموجود - علي محمد معوض. بيروت: دار الفكر، ج. 1، 2.
7. القرشي، محيي الدين عبد القادر. (1993). الجواهر المضية في طبقات الحنفية. تح. عبد الفتاح الحلو. القاهرة : هجر للطباعة، ج. 1، 2، 4.
8. حسنين، عبد النعيم. (1982). قاموس الفارسية ، فارسي/عربي. بيروت: دارالكتاب اللبناني.
9. الحموي، ياقوت بن عبد الله. (1977). معجم البلدان. بيروت: دار صادر، ج. 1.
10. كي لسترنج. (1985). بلدان الخلافة الشرقية. ترجمة إلى العربية بشير فرنسيس - كوركيس عواد. بيروت: مؤسسة الرسائل.
11. اللكنوي، محمد عبد الحي. (1906). الفوائد البهية في تراجم الحنفية. تصحيح محمد النعاني. القاهرة: دار الكتاب الإسلامي.
12. الزرنوجي، برهان الإسلام. (1981). تعليم المتعلم طريق التعلم. تح. مروان قباني. بيروت: المكتب الإسلامي.
13. قاضي خان، الحسن بن منصور. (2009). فتاوى قاضيخان في مذهب الإمام الأعظم أبي حنيفة النعمان. اعتنى بها سالم مصطفى البدري. بيروت: دار الكتب العلمية، ج. 1.
14. قاضي خان، الحسن بن منصور (2002). شرح الجامع الصغير. تح. أسد الله حنيف. مكة: جامعة أم القرى، ج. 1.
15. صلاح أبو الحاج. (2017). المدخل المفصل إلى الفقه الحنفي. عمّان: دار الفكر.

16. النقيب، أحمد بن محمد نصر الدين. (2001). كتاب المذهب الحنفي: مراحله وطبقاته، ضوابطه ومصطلحاته، خصائصه ومؤلفاته. الرياض: مكتبة الرشد.

BIBLIOGRAPHIC REFERENCES

1. Al-Dhahabī, Shamsu al-Din Muḥammad ibn Aḥmad ibn ʿUthman. (1996). Siyar aʿlām al-nubalāʾ [The Lives of Nobel Figures], Ed. Bashar ʿAwād Maʿruf wa-Muḥyī Hilāl al-Sarhān. Beirut, Lebanon: Muʾassasat al-Risālah, part 21. (In Arabic)
2. Al-Tamīmī, Taqī al-Dīn ibn ʿAbd al-Qādir. (1983). Al-Ṭabaqāt al-sunnīyah fi tarājim al-ḥanafīyah [The Levels of Sunnah in Hanifitesʾ Biographies], Ed. ʿAbd al-Fattāḥ Muḥammad al-Ḥulū. Riyadh, the Kingdom of Saudi Arabia: Dār al-Rifāʿī, parts 1, 3. (In Arabic)
3. Ibn Quṭlūbughā, Abū al-Fidāʾ Zayn al-Dīn Qāsim. (1992). Tāj al-Tarājim [The Crown of Biographies], Ed. Muḥammad Khayr Ramaḍān Yūsuf. Damascus, Syria: Dār al-Qalam. (In Arabic)
4. Al-Qārī, ʿAlī ibn Sulṭān. (2009). Al-Athmār al-Jinniyah fi Asmāʾ al-Ḥanafiyah [Fruits collected in Hanifi Biographies], Ed. `Abd al-Muḥsin `Abd Allāh Aḥmad. Baghdad, Iraq: Markaz al-Buḥūth wa-al-Dirāsāt al-Islāmīyah, parts 1, 2. (In Arabic)
5. Ibn al-Ḥanāʾi, `Alī ibn Amrullāh al-Ḥumaydī. (2003). Ṭabaqāt al-Ḥanafīyah [Biographies of Hanafites], Ed. Muḥyī Hilāl al-Sarḥān. Baghdad, Iraq: Maṭbaʿat al-Waqf al-Sunnī, part 2. (In Arabic)
6. Ibn `Ābidīn, Muḥammad Amīn. (2003). Rad al-Muḥtār ʿala al-Dur al-Mukhtār [Guiding the Buffled over the Exquisite Pearl], Ed. `Ādil Aḥmad `Abd al-Mawjūd wa `Alī Muḥammad Muʿawwaḍ. Beirut, Lebanon: Dār al-Fikr, parts 1, 4. (In Arabic)
7. Al-Qurashī, Muḥīy al-Dīn Abū Muḥammad `Abd al-Qādir ibn Muḥammad. (1993). Al-Jawāhir al-Muḍīyah fi Ṭabaqāt al-Ḥanafīya [Bright Pearls in Hanifites` Biographies], Ed. ʿAbd al-Fattāḥ Muḥammad al-Ḥulū. Cairo, Egypt: Hajar li-Ṭibāʿah, parts 1-4. (In Arabic)
8. Ḥasanayn, `Abd Al-Naʿīm Muḥammad. (1982). Qāmūs al-Fārisīyah Fārisī-ʿArabī [Persian Dictionary Persian-Arabic]. Beirut, Lebanon: Dār al-Kitāb aL-Lubnānī. (In Arabic)

9. Al-Ḥamawī, Shihāb al-Dīn Abū `Abdullāh Yāqūt ibn`Abdullāh. (1977). Muʿjim al-Buldān [Dictionary of Countries]. Beirut, Lebanon: Dār Ṣādir, part 1. (In Arabic)
10. Lastranj, Kay. (1985). Buldān al-Khalāfah al-Sharqīyah [The Lands of the Eastern Caliphate], Translation Bashīr Faransīs and Kūrkīs ʿAwwād. Beirut, Lebanon: Muʾassasat al-Risālah. (In Arabic)
11. Al-Laknawī, Abu al-Ḥasanāt Muḥammad ʿAbd al-Hay. (1906). Al-Fawāid Al-Bahīyah fī Tarājim Al-Ḥanafīyah [Great Benefit in Biographies of Hanifi], Ed. Al-Sayyid Muḥammad Badr al-Dīn Abū Firās al-Naʿsānī. Cairo, Egypt: Dār al-Kitāb al-Islāmī. (In Arabic)
12. Al-Zarnūjī, Burhān al-Islām. (1981). Ta`līm al-Muta`allim Ṭarīq al-Ta`allum [Instruction of the Student: The Method of Learning], Ed. Marwān Qabānī. Beirut, Lebanon: al-Maktab al-Islāmī. (In Arabic)
13. Qāḍī Khān, Fakhr al-Dīn Abū al-Muḥāsin al-Ḥasan bin Manṣūr al-Ūzjandī al-Farghānī. (2009). Fatāwā Qādī Khān fī madhhab al-Imām al-Aʿẓam Abī Ḥanīfah al-Nuʿmān [Fatawa Qadi Khan in madh-hab of the Greatest Imam Abu Hanifa An-Nugman], Ed. Sālim Muṣṭafā al-Badrī. Beirut, Lebanon: Dār al-Kutub al-ʿIlmīyah, part 1. (In Arabic)
14. Qāḍī Khān, Fakhr al-Dīn Abū al-Muḥāsin al-Ḥasan bin Manṣūr al-Ūzjandī al-Farghānī. (2002). Sharḥ al-Jāmig al-Ṣaghīr [Clarification of the book Al-Jāmig al-Ṣaghīr], Ed. Asadullāh Muḥammad Ḥanīf. Mecca, the Kingdom of Saudi Arabia: Jāmiʿat Um al-Qurā. (In Arabic)
15. Abū al-Ḥāj, Ṣalāḥ Muḥammad. (2017). Al-Madkhal al-Mufaṣṣal ilā al-Fiqh al-Ḥanafī [Detailed Introduction to Hanafi Fiqh]. Amman, Jordan: Dār al-Fatḥ. (In Arabic)
16. Al-Naqīb, Aḥmad bin Muḥammad Naṣīr al-Dīn. (2001). Al-Madhhab al-Ḥanaf Marāḥiluh wa Ṭabaqātuh, Ḍawābiṭuh wa Muṣṭalaḥātuh, Khaṣāʾiṣuh wa Muʾallafātuh [Hanifi Madhhab, its stages and degrees, laws and terms, features and works]. Riyadh, the Kingdom of Saudi Arabia: Maktabat Al-Rashd. (In Arabic)

معلومات عن المؤلف	***Information about the author***	***Информация об авторе***
معلم	*Teacher*	*Учитель*
حسام حسين عبد الرحمن	*Khusam Khussein Abdurrakhman*	*Хусам Хуссейн Абдуррахман*
المدرسة المحمدية		

Muhammadiya medrese
420021, Kazan, Gabdullah Tukai str., 34
Russia
halahmad70@hotmail.com

Медресе Мухаммадия
420021, Казань, ул. Габдуллы Тукая, 34
Россия
halahmad70@hotmail.com

420021، قازان، شارع عبد الله طوقاي، 34
روسيا
halahmad70@hotmail.com

الكشف عن تضارب المصالح: *يعلن صاحب البلاغ عن إنعدام تضارب المصالح.*

Conflicts of Interest Disclosure: *The author declares Conflicts of Interest Disclosure.*

Раскрытие информации о конфликте интересов: *Автор заявляет об отсутствии конфликта интересов.*

ВЕЛИКАЯ УТРАТА КАЗАНСКОЙ АРАБИСТИКИ

Н.Г. Мингазова[1], А.М. Хабибуллина[2]

Казанский федеральный университет[1,2]

nailyahamat@mail.ru[1], alfiyamhabibullina@gmail.com[2]

17 мая 2020 года на 74-м году жизни скончался известный татарский ученый, доктор филологических наук, профессор, арабист Джамиль (Габдулзямиль) Габдулхакович Зайнуллин (1946-2020). Его смерть стала огромной утратой как для арабистики в Казанском университете, так и для мировой востоковедной науки.

Джамиль Габдухакович был необыкновенным человеком с богатейшим жизненным опытом. Он родился в селе Старое Кадеево Черемшанского района ТАССР в семье религиозных деятелей и просветителей. Поступив сначала на филологический факультет КГУ, он загорелся желанием изучать восточные языки в Ташкентском государственном университете, и не без трудностей поступил на отделение востоковедения. Там он получил фундаментальное востоковедное образование и практический опыт: во время учебы студентов-филологов отправляли в поселения арабов Средней Азии изучать фольклор, или в арабские страны работать переводчиками. Так, юный Зайнуллин оказался в Судане. Блестящий молодой переводчик работал с советскими специалистами, которые строили в удалённом районе Южного Судана молокозавод и завод по производству каучука.

Долгие годы Джамиль Габдулхакович работал в странах Арабского Востока, где не только проявил себя как высоковалифицированный специалист, но и приобрел огромные знания, которые позднее определили его карьеру учёного. И с 1977 года он связал свою жизнь с Казанским университетом, где проработал 42 года и прошел путь от начинающего преподавателя до директора Института востоковедения, от кандидата наук до профессора. Он был основателем множества важных подразделений и научных центров КФУ.

Научная деятельность профессора Зайнуллина многообразна: его кандидатская диссертация была на тему «Калила и Димна в татарской литературе» (1988), докторская – «Татарская богословская литература XVIII – начала XX веков и её стиле-языковые особенности», он писал статьи и пособия по современной арабской литературе, египетскому диалекту, стилистике арабского языка. Можно с уверенностью сказать, что для профессора не было тех областей арабистики, в которых он не был бы знатоком. До последних дней он старался быть в курсе всех новостей арабистики, всех новинок арабской литературы.

Как известно, хотя востоковедение в Казанском университете берет начало от самых дней его основания, история его прерывается в середине XIX века. Вплоть до 1980-х гг. лишь единицы энтузиастов преподают здесь восточные языки. Джамилю Габдулхаковичу удалось вновь заставить загореться ярким пламенем этот тлеющий огонёк. В 1994 году он был избран заведующим кафедрой восточных языков факультета татарской филологии и истории. На волне возрождения татарской культуры арабистика стала важным ключом к истории, культуре и религии татар. Джамиль Габдулхакович был в эти годы невероятно значимой фигурой, сотни студентов стремились изучать арабский язык именно у него. Всего за 6 лет работы ему удалось подготовить базу для создания Института востоковедения КГУ, который он основал и возглавил в 2000 году. В 2007 году открывается Институт Конфуция, должность директора которого он занимал параллельно с должностью директора института и заведующего кафедрой.

Профессор Зайнуллин был человеком энциклопедического склада ума, настоящим полиглотом, тонким дипломатом и прагматиком в делах. Благодаря ему появлялись и крепли связи института с университетами многих стран. Находясь на высоком посту, он не отдалился от преподавательской деятельности. У филологов-арабистов он преподавал и введение в арабскую филологию, и историю арабской литературы, и множество различных

спецкурсов. Джамиль Габдухакович знал каждого студента института лично, а набирая первокурсников, старался познакомиться с семьёй каждого абитуриента. В воспитании студентов профессор был суров и консервативен: следил не только за успеваемостью студентов, но и за их морально-нравственным обликом. Он не терпел безнравственности, хамства, невежества, плохих манер, никогда не допускал вольностей, не был снисходителен к вредным привычкам и неопрятной внешности. Заслужить скупую похвалу Джамиля Габдулхаковича, одобрительный кивок удавалось лишь единицам. Но, несмотря на суровость, он всегда помогал студентам: делился редкими, порой вовсе недоступными экземплярами книг, подбадривал дипломников перед защитой, внимательно читал студенческие работы, делая пометки и вставки красными чернилами.

Профессор Зайнуллин собрал вокруг себя блестящий коллектив преподавателей: как своих учеников, так иногородних и иностранных специалистов. Он с уважением и огромным интересом относился к представителям других культур. Уже находясь в «солидном» возрасте, он начал учить китайский язык: так глубоко поразило его знакомство с Поднебесной. Но, конечно, главной его страстью всегда оставалась арабистика. С горечью узнавал он вести из Ирака, Сирии, Египта – тех стран, которые на заре его карьеры были полны надежд на блестящее будущее.

Бесконечной была любовь профессора к родному краю – к Республике Татарстан. «Человек не может быть счастлив на чужбине», – говорил он о судьбах татар-мигрантов. Он чтил традиции и обычаи татарского народа, отвергая всё ложно-татарское, поддельно-лубочное, заимствованное. Да, Джамиль Габдулхакович был Великим Учителем, гигантом мысли и дела!

Отзыв на монографию профессора С. Фараха
«Российская цивилизация: смысл и судьба»[1]

доктор исторических наук,
профессор Академии государственного управления
при Президенте Азербайджанской Республики,
Президент Ассоциации культуры Азербайджана «Симург»
Фуад Мамедов
fuadtm7@gmail.com

Монография профессора Сухейля Фараха, посвященная историко-философскому и культурологическому анализу Российской цивилизации представляет собой ценный научный труд, в котором дается историческая панорама жизнедеятельности российского народа и государства, отражающая новый подход к видению закономерностей развития Российской культуры и цивилизации. Работа привлекает своей необычностью в смысле видения Российской цивилизации как культурологической целостности, в которой отражены процессы развития народа в различных измерениях, показана неповторимая историческая самобытность его культурогенеза. Профессор Сухейль Фарах с большим искусством талантливого наблюдателя охватил целостную картину цивилизационного процесса, культурологически проанализировав природно-географические и исторические условия формирования жизни и становления культуры. Предметом глубокого анализа ученого явились также генетический код культуры, социальная среда ее формирования и развития, историческая обстановка, в которой происходили реальные события, а также культурный обмен, повлиявший на динамику развития в длительный период времени. В монографии показано богатство духовной культуры русского народа, ее место в мировой цивилизации, отражены социально-культурные и антропологические грани русской культуры. При этом в ней выделена важная духовная особенность народа – построение целей на основе неизменных культурных ценностей, включающих в себя априорные нравственные идеалы. Автору удалось глубоко раскрыть особенности российской идентичности, показав характерные для нее культурные признаки, ее самобытность, как веками сформировавшегося социально-культурного явления. Вместе с тем в исследовании нашло отражение значение взаимосвязи и взаимо- 2 действия культур разных народов и национальностей в рамках Российской цивилизации. При этом реальные исторические процессы прослеживается автором сквозь призму мышления и поведения людей, помогающих понять диалектику событий и явлений жизни, показать стремление российского народа к нравственному развитию, к идеалам добра и справедливости, раскрыть созидательную энергию его богатой культуры. Одним из достоинств монографии является отражение такого исторического достижения культуры государственности Российской цивилизации, как гармонизация культур и интересов народов и народностей, веками проживающих в России и являющихся неотъемлемой частью ее истории. Работа свидетельствует о высоком профессионализме автора, умело использовавшем системный подход для всестороннего анализа наследия духовной культуры русского народа. Избегая политических измерений и оценок, автор фокусирует внимание читателя на культуре, как главной ценности, цели и движущей силы общества и государства. Он проливает свет на менталитет, самобытный национальный характер и особенности психологии русского народа, как ценностную основу богатого культурного наследия, формировавшегося на протяжении столетий. Привлекает внимание неподдельный интерес автора к новым открытиям, к тайнам истории культуры, нераскрытым страницам, желание увидеть то, чего до него не увидел никто. Как известно наука не терпит аксиологического подхода к изучаемому объекту. Для нее главное – поиск истины. В

[1] Мамедов Ф. Отзыв на монографию профессора С. Фараха «Российская цивилизация: смысл и судьба» // Azərbaycan Mədəniyyət Assosiasiyası. 2020. № 07/30.

монографии этот творческий поиск истины чувствуется во всем. Ценным является то, что автор стремился изучить процесс развития российской цивилизации во всей ее многогранности, как части мировой цивилизации, с присущими ей особенностями и универсальными чертами. Анализируя универсальную историческую панораму цивилизационного развития России, автор сделал акцент на системном видении проблем и подходов к их решению, что позволило получить безусловно ценные научные результаты. За рецензируемым трудом мы видим замечательный образ ученого, одержимого идеей научного поиска, стремлением раскрыть неизведанные или по-новому взглянуть на малоизученные страницы человеческой культуры и цивилизации. Доктор философских наук, профессор Сухейль Фарах – известный ливанский и арабский писатель и ученый, культуролог, хорошо известен в научном мире своими трудами, посвященными истории и теории развития культуры и цивилизации, изданными на русском, арабском и английском языках. Он является действительным членом Российской Академии Образования (РАО), президентом Открытого Международного университета «Диалог цивилизаций», председателем Ливано-российского дома. 3 Перу профессора принадлежит ряд фундаментальных исследований по проблемам диалога культур и цивилизаций, посвященных стоящим перед мировым сообществом ключевым проблемам, связанным с преодолением конфликтов, ростом взаимопонимания солидарности и сотрудничества. Исследования профессора очень важны для развития культуры человеческих и международных отношений, от которых во многом зависит культура мира во всем мире. Его научные результаты жизненно необходимы для совершенствования диалога культур и цивилизаций, как ключа к взаимопониманию и сотрудничеству, сближению культур и их гармоничной интеграции в мировую цивилизацию, получили признание международной научной общественности. Работа также служит благородной цели поиска решений для взаимопонимания и сближения культур, пониманию, что основанный на взаимоуважении открытый и справедливый диалог является фундаментальной предпосылкой эффективного сотрудничества и партнерства между цивилизациями. Она может быть использована в качестве эффективного научного инструмента для обсуждения и разработки практических рекомендаций по совершенствованию культуры международных отношений, экспертизы процессов защиты культурных ценностей и культурного разнообразия человечества. Конечно, в исследовании есть определенные стилистические ошибки и неточности, связанные с грамматикой русского языка. Однако, они легко устранимы в процессе профессионального редактирования текста. Считаю, что монография профессора Сухейля Фараха, раскрывающая новые страницы истории и динамики развития Российской культуры и цивилизации, является серьезным вкладом в системное изучение мировой цивилизации как важнейшего звена истории человечества. Думаю, что уважаемый профессор Сухейль Фарах, которого по праву можно назвать одним из талантливых творцов культуры, еще порадует читателей своими новыми произведениями, посвященными истории российской и мировой культуры и цивилизации.

www.a-rfcs.org

من إصداراتنا

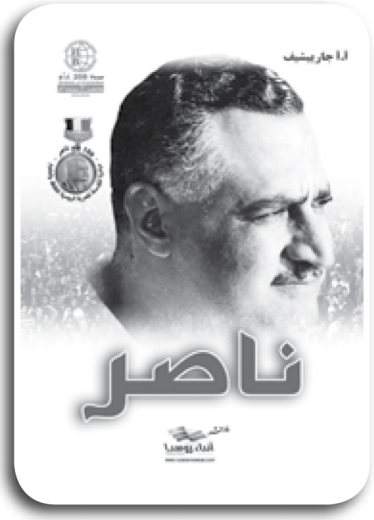

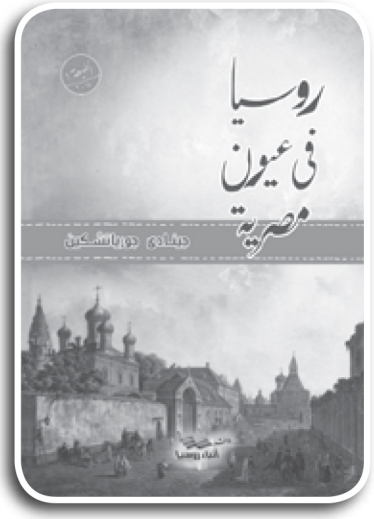

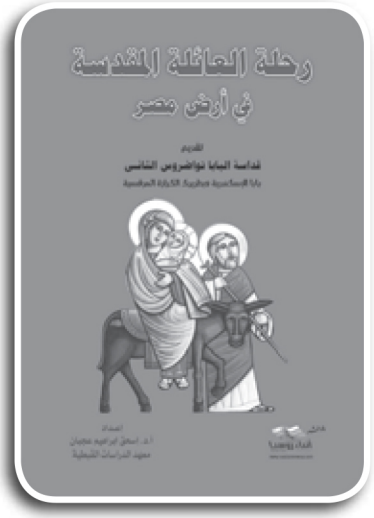

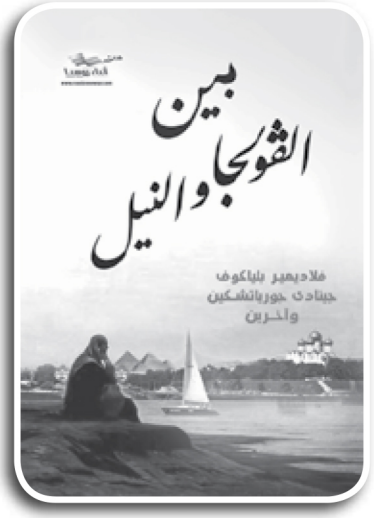

www.a-rfcs.org

من إصداراتنا

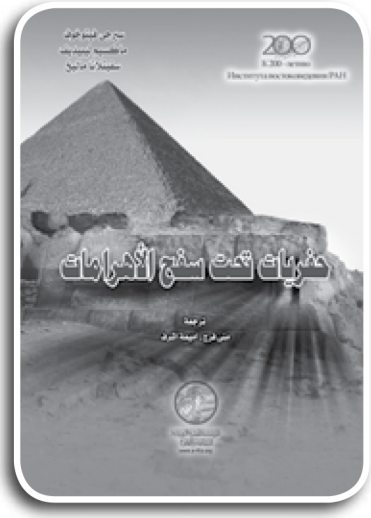

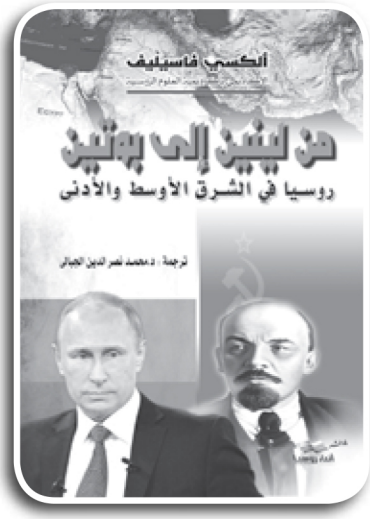

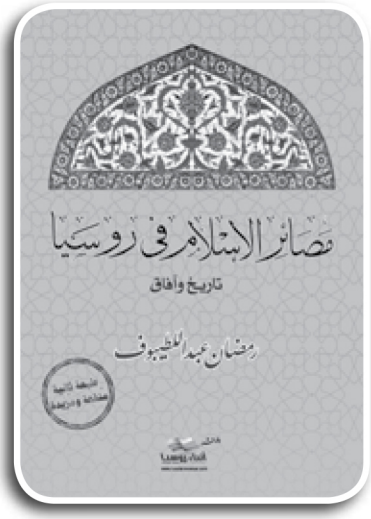

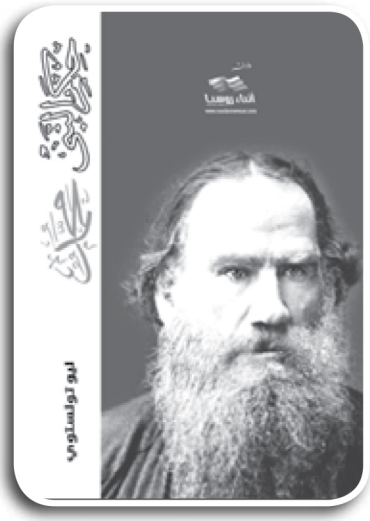

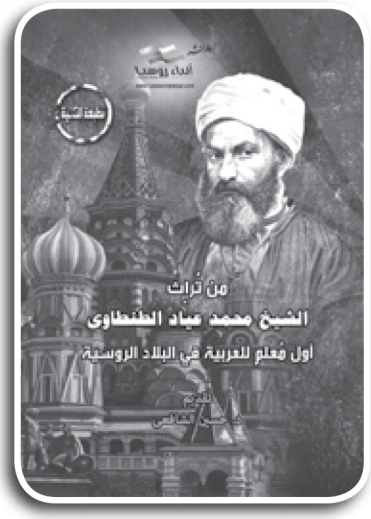

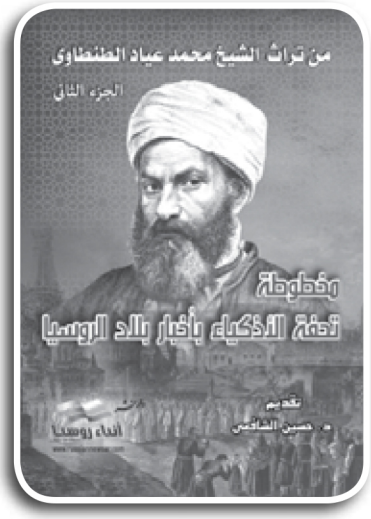

Напечатано в Египте **Printed In Egypt** **Мисырда нәшер ителде** طُبعت بمصر

11769 Nozha, 114 Joseph Tito St., Helioplis – Cairo – Egypt
Tel.: + (202) 219 271 57 & 58 Fax : + (202) 219 271 50
www.a-rfcs.org secertary_ert@yahoo.com

Representative Office In A.R.E. :
Al- Hewar Center for political & Media Studies .

الدراسات العربية الأوراسية

АРАБИСТИКА ЕВРАЗИИ

EURASIAN ARABIC STUDIES

ЕВРАЗИЯ АРАБИСТИКАСЫ

Издано Issued by Нәшер ителгән تصدر عن

Kazan Federal UNIVERSITY

www.a-rfcs.org

مركز عوالم للبحوث والتواصل
Awalim center of Research and communication

Напечатано в Египте **Printed In Egypt** **Мисырда нәшер ителде** طُبعت بمصر

11769 Nozha, 114 Joseph Tito St., Helioplis – Cairo – Egypt
Tel.: + (202) 219 271 57 & 58 Fax : + (202) 219 271 50
www.a-rfcs.org secertary_ert@yahoo.com

Representative Office in A.R.E.:
Al- Hewar Center for Political & Media Studies.

الدراسات العربية الأوراسية
АРАБИСТИКА ЕВРАЗИИ
EURASIAN ARABIC STUDIES
ЕВРАЗИЯ АРАБИСТИКАСЫ

Издано Issued by Нәшер ителгән تصدر عن

Kazan Federal University

Египетско-Российский фонд культуры и наук المؤسسة المصرية الروسية للثقافة والعلوم
www.a-rfcs.org

Аль-Хадара
تتارستان- قازان
ТАТАРСТАН - КАЗАНЬ

مركز عوالم للبحوث والتواصل
Awalim center of Research and communication

Напечатано в Египте Printed In Egypt Мисырда нәшер ителде طُبعت بمصر

11769 Nozha, 114 Joseph Tito St., Helioplis – Cairo – Egypt
Tel.: + (202) 219 271 57 & 58 Fax : + (202) 219 271 50
www.a-rfcs.org secertary_ert@yahoo.com

Representative Office in A.R.E.:

Al- Hewar Center for Political & Media Studies.